वर्ष -6, अंक -4, अक्तूबर-दिसंबर, 2021 मुंबई

यूनियन सृजन

तेलंगाना विशेषांक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
Union Bank of India
भारत सरकार का उपक्रम A Government of India Undertaking
आन्ध्रा Andhra कार्पोरेशन Corporation

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि : 12.02.2022

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी पत्रिका

वर्ष - 6 अंक - 4 अक्तूबर-दिसंबर, 2021

संरक्षक

राजकिरण रै जी.
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

प्रधान संपादक

चन्द्र मोहन मिनोचा
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.)

कार्यकारी संपादक

नवल किशोर दीक्षित
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक

डॉ. सुलभा कोरे
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

अशोक चंद्र
मुख्य महाप्रबंधक

अरूण कुमार
महाप्रबंधक

अम्बरीष कुमार सिंह
उप महाप्रबंधक

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित

ई-मेल: navalkishored@unionbankofindia.com
sulabhakore@unionbankofindia.com
union.srijan@unionbankofindia.com
9820468919, 022-22896595

Printed and Published by Dr. Sulabha Shrikant Kore on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.

Editor : Dr. Sulabha Shrikant Kore

इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India
भारत सरकार का उपक्रम A Government of India Undertaking
आन्ध्रा Andhra कार्पोरेशन Corporation

तेलंगाना विशेषांक

अनुक्रमणिका

- परिदृश्य 3
- क्षेत्र महाप्रबंधक, हैदराबाद का संदेश 4
- संपादकीय 5
- साहित्य सृजन : 'कालोजी नारायण राव' 6-7
- काव्य सृजन 8-9
- तेलंगाना भारत का नया राज्य / क्षेत्रीय विशेषताएँ 10-12
- तेलंगाना का इतिहास 13-15
- तेलंगाना के उद्योग, व्यवसाय, विशिष्ट केंद्र 16-17
- तेलंगाना की लोक संस्कृति 18-19
- तेलंगाना के दर्शनीय, ऐतिहासिक पर्यटन स्थल 20-22
- तेलंगाना के त्योहार 23-25
- तेलंगाना की भाषायी यात्रा 26-27
- तेलंगाना की कला एवं हस्तशिल्प 28-29
- प्राकृतिक संपदा 30
- तेलंगाना खेल जगत से 31-33
- तेलंगाना के राष्ट्रीय उद्यान व अभयारण्य 34-35
- सेंटर स्प्रेड - गोलकोण्डा 36-37
- विशेष साक्षात्कार - श्री गरिकिपाटि नरसिंहा राव 38-40
- हैदराबाद - आई टी हब 41
- तेलंगाना का पहनावा / साडियां 42-43
- व्यक्तित्व : कोमराम भीम / छोटे कदम ऊंचा सफर 44-45
- तेलंगाना का ज़ायका 46
- हमारे महत्वपूर्ण ग्राहक 47-51
- कालेश्वरम उद्वहन (लिफ्ट) सिंचाई परियोजना 52
- तेलुगू सिनेमा : विविध आयाम 53
- तेलंगाना - कृषि एवं वित्तीय समावेशन 54-55
- तेलंगाना के नृत्य और नाट्य कला 56-57
- तेलंगाना की जनजातीय प्रथाएँ 58-59
- राजभाषा पुरस्कार 60-62
- कहानी : सॉरी-सर 63-64
- तेलंगाना की प्रसिद्ध हस्तियां 65-66
- अखिल भारतीय राजभाषा समीक्षा-सह-आयोजना बैठक, 2021 67
- राजभाषा समाचार 68-69
- आयुष्यमान भव: 70
- आपकी नज़र में 71
- बैक कवर 72

परिदृश्य

भारत विश्व में एक अनूठा देश है. इसका प्रमुख कारण है, यहां की व्यापक सांस्कृतिक विरासत, जो अपने में कई विविधताओं को समेटे हुए है. हर जगह के रहन-सहन, खान-पान, पहनावे में विविधता है फिर भी एक अदृश्य सूत्र से हम सभी आपस में जुड़े हुए हैं. 'यूनियन सृजन' का यह विशेषांक ऐसी ही एक विशिष्ट संस्कृति वाले राज्य 'तेलंगाना' की झलक आपके सामने प्रस्तुत करता है.

'तेलंगाना' देश का नवीनतम 29वां राज्य है. वास्तुकला में यह प्रदेश अद्वितीय तो है ही लेकिन यहां बहुत से ऐसे ऐतिहासिक/दर्शनीय स्थल हैं जो विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं. नई प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी यह राज्य देश के अग्रणी राज्यों में से एक है. आई.टी. हब के रूप में हैदराबाद का देश में एक प्रमुख स्थान है. देश के औद्योगिक विकास में भी राज्य का महत्वपूर्ण योगदान है.

सातवाहन, काकतीय, चालुक्य, मुगल, कुतुबशाही, आसफजाही जैसे प्रभावशाली राजवंशों ने यहां राज किया. हैदराबाद निजामों की भी राजधानी रही. तेलुगू के साथ दक्खिनी, हिंदी, उर्दू आदि भाषाएं यहां बोली जाती हैं. विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग भी यहां लंबे समय से सद्भाव के साथ रहते हैं.

भारत के खेल जगत में तेलंगाना का अमूल्य योगदान है. विशेषकर क्रिकेट और बैडमिंटन जैसे खेलों में इस राज्य ने देश को अनेक ऐसे खिलाड़ी दिए हैं जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रोशन किया है.

तेलुगू फिल्म उद्योग ने भी देश-विदेश में अपनी खास पहचान बनाई है. इनकी लोकप्रियता इतनी अधिक है कि आज यहां की फिल्में अन्य भाषाओं में डब कर प्रदर्शित की जाती हैं, जिससे देश के सभी लोग इनका आनंद लेते हैं तथा राज्य की आय भी बढ़ाते हैं. यहां का रामोजी फिल्म सिटी अपनी भव्यता एवं सुविधाओं के लिए विश्व विख्यात है.

समामेलन के बाद इस क्षेत्र में यूनियन बैंक की उपस्थिति में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है. आज यूनियन बैंक यहां के प्रमुख बैंकों में से एक है.

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि 'यूनियन सृजन' ने इस अंक को 'तेलंगाना' राज्य को समर्पित कर इस राज्य की विरासत और समृद्धि में अपना भी एक छोटा सा योगदान अंकित किया है. इस नए राज्य की इस नयी यात्रा को यूनियन बैंक का सलाम !

मुझे आशा है कि यह अंक आप सभी की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा.

सुरक्षित रहें और अपना ख्याल रखें.

शुभकामनाओं के साथ.

आपका

राजकिरण रै जी

(राजकिरण रै जी.)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

क्षेत्र महाप्रबंधक, हैदराबाद का संदेश ...

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि 'यूनियन सृजन' का वर्तमान अंक नवीनतम ऊर्जावान राज्य तेलंगाना पर प्रकाशित हो रहा है. मैं इस अवसर पर क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, हैदराबाद की ओर से 'यूनियन सृजन' के पाठकों को हार्दिक बधाई देता हूँ. मुझे विश्वास है कि तेलंगाना के इस विशेष अंक में तेलंगाना के समृद्ध परिदृश्य के सभी पहलुओं को शामिल किया गया है.

वर्तमान तेलंगाना राज्य को तत्कालीन आंध्र प्रदेश राज्य से अलग करके बनाया गया था और दशकों के आंदोलन के बाद 2 जून 2014 को एक अलग राज्य के रूप में इसकी स्थापना हुई. तेलंगाना को संसद के दोनों सदनों में आंध्र प्रदेश राज्य पुनर्गठन विधेयक पारित करके बनाया गया है. यह भारतीय गणराज्य का 29वां राज्य है. भौगोलिक दृष्टि से, तेलंगाना, दक्खन पठार पर भारतीय प्रायद्वीप के मध्य भाग में स्थित है. यह राज्य उत्तर में महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़, पश्चिम में कर्नाटक तथा दक्षिण और पूर्व दिशाओं में आंध्र प्रदेश से घिरा हुआ है. यह देश का 11वां सबसे बड़ा राज्य है.

तेलंगाना में सातवाहन, काकतीय, चालुक्य, मुगल, कुतुबशाही, आसफजाही जैसे महान राजवंशों का शासन रहा है. वास्तुकला में काकतियों के योगदान को सबसे प्रभावशाली माना जाता है, जबकि सातवाहनों ने ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से लगभग 400 वर्षों तक तेलंगाना क्षेत्र पर शासन किया. दूसरी शताब्दी से आगे विभिन्न संस्कृतियों के संगम और अपने शासकों के संरक्षण के साथ यह क्षेत्र कई शताब्दियों से एक सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभरा है और इसने अंतर्राष्ट्रीय ख्याति की विभिन्न कलाओं और कला रूपों का उदय देखा है. इसके अलावा, तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद निज़ामों की राजधानी रही है. यह शहर न केवल इस क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों का केंद्र रहा है, बल्कि देश भर से आने वाले व्यापार मार्गों के लिए एक जंक्शन बिंदु के रूप में भी कार्य करता रहा है. यह शहर सूचना प्रौद्योगिकी और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र भी है.

तेलंगाना अपने समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों, वन्य जीवन, अभयारण्यों, झरनों, बांधों और सिंचाई परियोजनाओं के साथ-साथ पर्यटन स्थलों और तीर्थस्थलों के लिए भी जाना जाता है, जो इसे एक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाता है.

तेलंगाना राज्य से होकर गुजरने वाले छह राष्ट्रीय राजमार्ग शहरों के बीच आवागमन को आसान बनाते हैं. तेलंगाना के सभी जिले पूरे राज्य में चलने वाले रेल मार्ग से अच्छी तरह से जुड़े हुए हैं. यहां न केवल एक सुविकसित अंतरराज्यीय बल्कि अंतरराज्यीय रेल मार्ग भी है. चूंकि राज्य पहले आंध्र प्रदेश का हिस्सा था, तेलंगाना के प्रमुख शहर पहले से ही भारत के महत्वपूर्ण शहरों से जुड़े हुए हैं. राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा तेलंगाना का प्रमुख हवाई अड्डा है जो दुनिया के सभी प्रमुख देशों को जोड़ता है.

हैदराबाद, एक आर्थिक केंद्र और तेलंगाना और आंध्र प्रदेश की राजधानी होने के कारण, भारत के सभी प्रमुख शहरों के साथ इसे अच्छी कनेक्टिविटी प्राप्त है. इनमें बेंगलूरु, मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, नागपुर, चेन्नई, पुणे, विशाखपट्टणम और विजयवाड़ा शामिल हैं.

तेलंगाना राज्य में दो प्रमुख नदियाँ और कई छोटी नदियाँ हैं जो इसे विभिन्न फसलों के विकास के लिए बहुत उपजाऊ क्षेत्र बनाती हैं. राज्य भर में प्रमुख परियोजनाओं ने कृषि में बहुत उच्च विकास दर सुनिश्चित की है. बागवानी, पशुपालन और मत्स्य पालन के संबद्ध क्षेत्रों के विकास पर जोर दिया जा रहा है.

राज्य उच्च स्तर के औद्योगीकरण के लिए भी जाना जाता है और अपने विभिन्न औद्योगिक विकास क्षेत्रों और एसईजेड में उद्योगों के विकास के लिए एक अच्छा वातावरण प्रदान करता है. हैदराबाद में आईटी और फार्मा सेगमेंट ने अभूतपूर्व वृद्धि की है.

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय-हैदराबाद का अधिकार क्षेत्र पूरे तेलंगाना राज्य में फैला हुआ है. राज्य में व्यापक नेटवर्क के साथ हमारे अंचल में 9 क्षेत्र हैं. समन्वयन के बाद हमारे पास 690 शाखाएं, 615 एटीएम, 12 यूएलपी और 9 सरल हैं. बैंक का ऊर्जावान कार्यबल, राज्य के नागरिकों को अनुकरणीय सेवा प्रदान करने में हमेशा सबसे आगे है जो इस तथ्य से स्पष्ट है कि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया राज्य में आकार और व्यवसाय के मामले में दूसरा सबसे बड़ा बैंक है. तेलंगाना के सभी बैंकों में हमारे क्षेत्र की बाजार हिस्सेदारी 12% है, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में हमारा हिस्सा 21% है. हमारा अंचल अपने बैंक में लगभग 10% व्यवसाय का योगदान दे रहा है. टीम हैदराबाद इस राज्य में हमारे बैंक के अभूतपूर्व विकास के लिए प्रतिबद्ध है और कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा दिए गए हर आह्वान का सक्रियता से पालन कर रहा है. मुझे यकीन है कि तेलंगाना पर यह विशेष अंक टीम में गर्व और उपलब्धि की भावना पैदा करेगा.

शुभकामनाओं सहित

कबीर भट्टाचार्य

क्षेत्र महाप्रबंधक, हैदराबाद

संपादकीय

'तेलुगू लोगों की भूमि'- तेलंगाना का यही तो अर्थ है, साहित्यिक भाषा में, लेकिन वैसे देखा जाए तो 'त्रिलिंगा देश' यानि तेलंगाना. यहां कालेश्वरम, श्रीशैलम, द्राक्षरामम में तीन प्राचीन शिवालय हैं और उन्हीं के कारण इस त्रिलिंगा देश को तेलंगाना कहा जाने लगा होगा. संक्षेप में यह प्रदेश रंगीला है, अनेक रंगों को साथ लेकर चलता है. यह प्रदेश साहसी है, नये-नये प्रयोग करता है, नई बातों की पहल करता है. धार्मिकता और आध्यात्म को अहमियत देता है. खेल और त्योहारों से सराबोर है. कृषि में जिस तरह से अग्रणी है, उसी तरह आई.टी. में भी इसकी अपनी मिसाल है. यहाँ कलाकारी है, कलाकार हैं, नृत्य है, गीत-संगीत है, फिल्में हैं, उद्योग हैं और आकार में भी यह भारत का 11 वां बड़ा राज्य है. खनिज संपत्ति से भी यह प्रदेश समृद्ध है.

इसकी विविधता में एकता को आप यहां के विभिन्न धर्म के लोगों, उनके प्रार्थना स्थलों, संस्कृति के जरिए देख सकते हैं. सबसे अहम बात यह है कि भाषायी परिप्रेक्ष्य में भी यह राज्य तेलुगू, उर्दू, मराठी, कन्नड़, हिंदी के साथ गलबहियां डालकर चलता है. सदियों से यहां के बाशिंदे अपनी जाति, धर्म, भाषायी विविधता के होते हुए भी यहां उतने ही प्यार और अपनेपन से साथ-साथ रहते हैं.

यहाँ के मंदिर, यहाँ का स्थापत्य, यहां की ऐतिहासिकता और यहां की कलाकारी, बुनाई, कढ़ाई, नक्काशी.... सब कुछ आकर्षक और अनूठेपन से संपन्न है, कलाकारों से भरपूर यह प्रदेश, इतिहास की समृद्धता को भी साथ लेकर आधुनिकता तथा तकनीक के साथ गठबंधन करता है.

आप 'यूनियन सृजन' के इस तेलंगाना विशेषांक के साथ तेलंगाना की यात्रा पर चलिए. यह यात्रा आपको खुशी से सराबोर करेगी. यह यात्रा ज्ञानवर्धक तथा मनोरंजक भी होगी, इसका मुझे पूरा विश्वास है .

आपकी इस यात्रा में हम भी शामिल हैं और यह यात्रा आपको कैसी लगी इस बात को जानने का भी हमें इंतजार रहेगा.

शुभ 'तेलंगाना' यात्रा.

शुभकामनाओं के साथ.

आपकी,

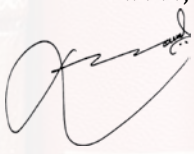

(डॉ. सुलभा कोरे)
संपादक

एक कैलिडोस्कोपिक व्यक्तित्व

'कालोजी नारायण राव'

ना गोदाव (मेरा संघर्ष)
मेरे दिल में इतनी तड़प क्यों?
मैं सुधार नहीं सकता, न ही मैं रास्ता दिखा सकता हूँ,
मुझे दोषियों को दंडित करने का अधिकार नहीं है,
न ही मैं व्याकुलता के बचाव में आ सकता हूँ ....

कालोजी नारायण राव का जीवन सादगी में शक्ति का एक आदर्श उदाहरण है. उनका परिचय एक स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिक कार्यकर्ता और अपने समय के सबसे प्रसिद्ध अहिंसक क्रांतिकारी कवियों के रूप में है. कालोजी नारायण राव का जन्म 9 सितंबर 1914 को बीजापुर, कर्नाटक में हुआ था परंतु उनके जीवन का अधिकतम समय तेलंगाना में ही रहा. उनकी मां रमाबयाम्मा कर्नाटक से एवं पिता कालोजी रंगाराव महाराष्ट्र से थे. कालोजी ने अपनी प्राथमिक शिक्षा मंडिकोंडा में और उच्च शिक्षा वारंगल और हैदराबाद में पूरी की है. असली नाम रघुवीर नारायण लक्ष्मीकान्त श्रीनिवास रामराजा कालोजी, जिन्हें कालोजी या कलान्ना के नाम से जाना जाता है. वे भारत के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और तेलंगाना के एक राजनीतिक कार्यकर्ता थे. उन्हें सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्रों में उनके योगदान के लिए जाना जाता है. उनका पसंदीदा रंग काला था. उन्हें शास्त्रीय संगीत सुनना पसंद था. उनके पसंदीदा शायरों में वाली आसी और राहत इंदौरी शामिल थे. उन्हें अपनी कर्मभूमि से बेहद प्रेम था इसलिए उन्हें तेलंगाना में ही रहना पसंद था. ये 1992 में 'पद्म विभूषण' से सम्मानित हो चुके हैं. कालोजी एक बहुभाषाविद हैं. हालांकि उन्होंनें कम उम्र से ही तेलुगू का अध्ययन किया. उन्हें मराठी, कन्नड़, हिन्दी और उर्दू में भी कविता लिखने में महारत हासिल है. कालोजी ने 1940 में रुक्मिणी बाई से शादी की.

अपनी पढ़ाई के दिनों के दौरान और बाद में भी इन पर आर्य समाज आंदोलन का प्रभाव पड़ा विशेष कर समाज के नागरिकों के हितों के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाई, पुस्तकालय आंदोलन और आंध्र महासभा आंदोलन ने भी इनके जीवन पर गहरा प्रभाव छोड़ा. इनके ज्येष्ठ भाई रामेश्वर राव कालोजी का प्रभाव भी इनके व्यक्तित्व पर साफ दिखाई देता है, जो कि अपने समय के प्रसिद्ध उर्दू कवि रह चुके थे. सन 1934 में आंध्र महासभा की सभी गतिविधियों में आपने सक्रिय योगदान दिया. आप आर्य समाज से भी जुड़े हुए थे. इन्होंनें पूर्व हैदराबाद की आजादी के लिए आंदोलन में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया. आप हैदराबाद राज्य के स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा थे और निजाम के अधीन कारावास भी भुगत चुके थे. मानवाधिकारों के प्रति आपकी प्रतिबद्धता ने तारकुंडे समिति का एक सक्रिय सदस्य बना दिया. हालांकि सत्ता के विरोध और कार्यालय के फँसने के विरोध में कालोजी चुनावों को एक लोकतान्त्रिक अभ्यास के रूप में देखते थे. आपने तीन बार चुनाव लड़ा और एक बार आंध्रा प्रदेश विधान परिषद के सदस्य के रूप में चुने भी गए. उनका सबसे महत्वपूर्ण विवाद 1977 में आंध्र प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री जलागम वेंगल राव के खिलाफ था, जो आंध्र प्रदेश में आपातकालीन शासन के प्रतीक थे.

कालोजी का व्यक्तित्व भी हर मायने मे अनोखा था. वे मौज-मस्ती करने वाले बहिर्मुखी व्यक्ति थे, जिन्हें अच्छा जीवन जीना पसंद था, लेकिन साथ ही वे वंचितों के लिए लड़ने के लिए आगे बढ़ने में तत्पर थे. 'प्रजाकवि' एकल शीर्षक है जो कालोजी नारायण राव के गुणों की समृद्धि और विविधता को दर्शाता है. कालोजी को प्रजा कवि की उपाधि से भी सम्मानित किया गया था जो उनके दिल के करीब थी, जिससे वो अपने-आप को सामान्य व्यक्ति के करीब पाते थे. जनता का कवि, जनता का आदमी, उनकी भाषा का चयन, रूप और विषय वस्तु, कविता का उनका अभ्यास, आम लोगों के लिए उनकी प्रतिबद्धता का अभिन्न अंग रहा है. उनकी व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा, न्याय और सच्चाई के प्रति निडर प्रतिबद्धता ने उनके जीवन के हर क्षेत्र से प्रशंसकों का एक विस्तृत घेरा बना लिया है, जो उनके अद्वितीय व्यक्तित्व का हिस्सा है. उनका चिरस्थाई सेंस ऑफ ह्यूमर, उनकी विडम्बना और ईमानदारी पर उनकी ठोस जिद, थोपे गए अनुशासनों को मानने से इंकार ने उन्हें राजनीतिक दलों की सदस्यता से तो दूर रखा फिर भी वह गहरे राजनीतिक है जो कई विरोधों और संघर्षों के अगुआ रहे हैं.

उन्होनें कविताएँ अपने स्कूल के दिनों से लिखनी शुरू कर दी थी. उन्होंनें अपनी कविता 1931 में युवावस्था के दौरान लिखी जो भगत सिंह के बलिदान से प्रेरित होकर लिखी गयी थी जिसके बाद वे एक अच्छे कवि के रूप में स्थापित हो गए. तब से कलोजी ने किसी भी घटना या घटना का विरोध करने या प्रतिक्रिया करने के लिए अपनी कलम उठाई जो उन्हें सही नहीं

लगी. वह अपनी राय स्थापित करने के लिए गोलियों के बजाय अपने शब्दों की शक्ति से लड़ने में विश्वास करते थे. 1972 में ताम्रपत्र के प्राप्तकर्ता रह चुके एवं 1968 में जीवन गीता कृति के सर्वश्रेष्ठ अनुवाद के लिए भी पुरस्कृत हुए थे. मुक्त छंद लिखने वाले पहले आधुनिक तेलुगू कवि, देश के इस हिस्से में कलोजी की कविता (दस खंडों से मिलकर) अपने समय के ऐतिहसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर चल रही एक टिप्पणी है. ना गोदाव (मेरा संघर्ष) शीर्षक से यह अपने समय के असंख्य मुद्दों और अंतर्विरोधों में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है. उनका आत्मकथात्मक लेखन 'आइडिया न गोदाव' ऐतिहासिक और चिंतनशील है. ना गोदाव, आठ खंडों, कहानियों और अनुवादों में उनकी कविताओं का संग्रह अद्वितीय है. महान तेलुगू कवि श्री दशरधि ने 'ना गोदाव' को समकालीन इतिहास पर एक भाष्य की उपाधि भी दी थी. यह अनिवार्य रूप से असंतोष की कविता है और सुधार के लिए उनकी चिंता और विद्रोह करने के साहस की वाकपटुता इसकी गवाही है. इनकी अन्य उल्लेखनीय साहित्यिक कृतियाँ हैं 'कालोजी कथालु', 'विजयम थुड़ी', 'मनदी जयम', 'व्यावम पार्थिव' और 'तेलंगाना उद्यम कवितालु'. आपने अन्य भाषाओं की कई साहित्यिक कृतियों का तेलुगू अनुवाद भी किया है.

एक उत्साही पाठक, एक उत्साही क्रिकेट प्रशंसक और एक लाइलाज कहानीकार कालोजी अपनी कहानियों और अनुभवों से अपने युवा और बूढ़े श्रोताओं को समान रूप से प्रसन्न करते हैं. उनका चेहरा पूरे राज्य में जाना जाता है, उनकी उपस्थिति का हर जगह स्वागत रहता है और उनकी ईमानदारी कोई छल नहीं करती है. कालोजी को उनके जीवनकाल में ही एक संस्था बनाती है और वह तेलंगाना में निहित हैं. उनका आचरण, उनकी भाषा, उनका हास्य और उनका स्वाद इन जड़ों को दर्शाता है.

उनकी सहज बुद्धि, दमखम वाली लेखनी और सहानुभूतिपूर्ण हृदय ने उन्हें बहुतों का प्रिय बनाया. वह 1958-1960 के दौरान एपी विधान परिषद के सदस्य थे. आप आंध्र सरस्वती परिषद के संस्थापक सदस्य और साहित्य अकादमी आंध्र प्रदेश के सदस्य भी रहे. आप तेलंगाना रचयतमाला संघम के अध्यक्ष थे और 1957-1961 की अवधि के दारुयान शब्दावली समिति के सदस्य भी रहे. साहित्य के क्षेत्र में इनके योगदान के लिए उन्हें

1992 में काकतीया विश्वविद्यालय वारंगल द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया था.

13 नवंबर 2002 को 88 वर्ष की आयु में कालोजी नारायण राव का निधन हो गया. मानवता के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित करने वाले इस निस्वार्थ क्रांतिकारी ने अपनी मृत्यु के बाद भी ऐसा करना जारी रखा. कालोजी ने अपनी मृत्यु के बाद अपना शरीर काकतीय मेडिकल कॉलेज को दान कर दिया जिसने हजारों लोगो को निस्वार्थ सेवा के लिए प्रेरित किया.

राज्य के विभाजन के पहले सभी मेडिकल कॉलेज, डॉ एनटीआर यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइन्स से संबद्ध थे. राज्य के विभाजन के बाद तेलंगाना सरकार ने एक नये विश्वविद्यालय की स्थापना की. सितंबर 2014 में तेलंगाना सरकार ने उनके सम्मान में उनके नाम पर चिकित्सा विश्वविद्यालय 'कालोजी नारायण राव स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय' का नाम रखा. भारत के प्रधानमंत्री, नरेंद्र मोदी ने औपचारिक रूप से 7 अगस्त 2016 को इस विश्वविद्यालय की नींव रखी. 9 सितंबर को इनके जन्मदिन के अवसर पर तेलंगाना भाषा दिवस मनाया जाता है, जिसकी घोषणा मुख्यमंत्री कल्वकुंतला चन्द्रशेखर राव ने की थी. इस तिथि को तेलंगाना के प्रसिद्ध लेखक, कवि कालोजी नारायण राव की 100वीं जयंती के अवसर पर चुना गया था. इसका आयोजन वार्षिक आधार पर संस्कृति विभाग द्वारा किया जाता है, जिसमें दिन भर का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है और चुने हुए लेखक को कालोजी पुरस्कार से सम्मानित भी किया जाता है.

जी. वी. एन चार्युलु
क्षे का पंजागुट्टा हैदराबाद

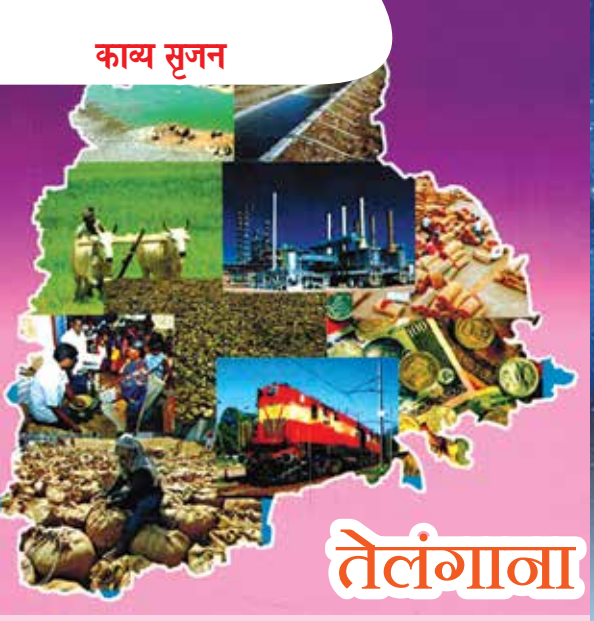

तेलंगाना

तेलंगाना की है धरती न्यारी.
बसती जहां निजामों की गाथा पुरानी.
कृष्णा, गोदावरी, मुसी की पावन धारा,
कल-कल बहती नदियाँ देती जल सारा.
बोनालु, बतुकम्मा, नागोबा, सक्रांति,
इन पावन त्योहारों से सजती धरा में भक्ति.
लक्ष्मण, सानिया, अजरुद्दीन,
मिताली का ऊंचा नाम,
खेल के नभ में ऊंचा उड़ता तेलंगाना का गान.
कालेश्वरम, नागार्जुन जैसे बांधों से थमा जीवन,
तपती धरती को देती बना ये उपवन.
गदवाल, पोचमपल्ली सिल्क है, यहाँ का ताज,
जिसको पहचानता पूरा विश्व है आज.
राष्ट्रीय उद्यान और किलों का है दृश्य विहंगम,
दूर से देखो तो लगे नभ धरा का हुआ है संगम.
पंजागुट्टा-सिकंदराबाद-सैफाबाद-कोटी है हृदय में,
वारंगल, महबूबनगर, खम्मम, निजामाबाद
करीमनगर सम्पूर्ण अंचल में ...

उपासना सिरसैया
क्षे.का. पंजागुट्टा हैदराबाद

मेरा हौसला, मेरी शक्ति, मेरी भक्ति, मेरी माँ..
जिसे मैं ढूंढू, जिसे मैं पाऊँ, वो मृग तृष्णा,
मेरी माँ..
जब पापा ने संसार को छोड़ा,
ना चाहते सबसे नाता तोड़ा.
अपने दुखों को भूलकर, तनहाई को छोडकर,
मुझे हँसाती, मुझे खिलाती.
मेरी ख्वाहिश करती है पूरी,
जिसके बिना मेरी जिन्दगी अधूरी.
मेरी प्यारी माँ..

जिससे रूठ जाऊँ, जिसे मनाऊँ.
वो प्यारी सहेली मेरी माँ.
मुझसे ज्यादा, जो मुझे समझती.
खुद से ज्यादा, जो मुझे प्यार करती,
करूणा की बारिश करती,
मेरी प्यारी माँ..

सारे दर्द खुद सह लेती, मौत से भी लड़ लेती,
जब मेरे पर संकट आता, कभी दुर्गा, तो कभी काली,
तो कभी चंडी बन जाती, हर तरह से रक्षा करती,
मेरी प्यारी माँ..

जिसे मैं खुलकर हर बात बताऊँ,
अपनी हर बकवास सुनाऊँ,
बड़े ध्यान से हर बात मेरी सुनती.
जिसके बिना मेरा अस्तित्व नहीं है,
जिसकी मैं आशा, जिसकी परछाई,
वो मेरी सृजनकार, मेरी प्यारी माँ..

पदमा
गोरखपुर शाखा, जबलपुर

किसान

ये हैं हमारे अन्नदाता
देश के हैं, भाग्य विधाता
भारत के निर्माता हैं ये
परिश्रम की पराकाष्ठा हैं ये.
पेट हमारा ये भरते हैं
फिर भी हमको विस्मृत रहते हैं
बातें इनकी सुनने से
हम सब बचते ही रहते हैं.
गर्मी, सर्दी, पानी, पत्थर
इतना सब कुछ ये हैं सहते
सुबह से शाम तक काम ये करते
और हमेशा खुश ये रहते हैं.
कृषि रही आधार हमारा
फिर भी नहीं है ध्यान हमारा
ये हैं हमारे अन्नदाता
देश के हैं भाग्य विधाता?
क्रांति हरित की लाते हैं
किसान जब अपने पर आ जाते हैं
अमेरिका जैसे देश को भी
तारे दिन में दिखला जाते हैं.
इतना सब कुछ होने पर भी
है किसान क्यों लाचार हमारे
ये हैं हमारे अन्नदाता
देश के हैं, भाग्य विधाता?

अतुल सिंह
क्षे.का. तिरुपति

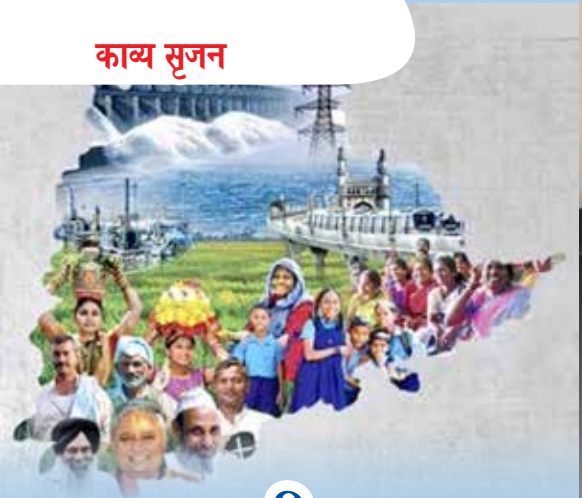

मन की बात....

तेलंगाना की धरती के हैं रंग अनेक
यहाँ की वेशभूषा, भाषा, नदियां, खिलती हस्ती,
कीर्ती बातें अनेक...
किसान की मेहनत यहां अपना रंग है दिखलाती
अनाज देश के हर कोने में पहुँचाती...
लोक गीत है यहां की शान, कीर्ति, सच्चाई हर
लफ्जों में बयान..
लोक नृत्यु कुचिपुड़ी हमारी आन,
जिससे बनी है इसकी शान..
बोली तेलुगू में है इतनी मिठास,
उर्दू भी है बहुत ही खास.
सीख जाते सिर्फ हंसते-सुनते करते बात...
उगादी है यहाँ का त्योहार,
संक्रांति पतंगों का यार...
बुर्रा-खता है सबको भाता,
लोक नृत्य है सबको आता
यहां की संस्कृति काफ़ी अद्भुत,
निज़ाम के सम्मान का शहर है,
हैदराबाद और उसकी एक अनोखी बात.
घूमने आओ तो वापसी न जाओ एक ही रात.
हिंदू, मुसलमान सब भाई मिल-जुल करते काम,
इसलिए है तेलंगाना का विश्व में नाम,
जय हो, जय-जय हो तेलंगाना.

ओम प्रकाश सिंह
महेश्वरम शाखा
क्षे.का. हैदराबाद-सैफाबाद

सच है विपत्ति जब आती है

सच है विपत्ति जब आती है
कायर को ही दहलाती है
सूरमा नहीं विचलित होते
पल एक नहीं धीरज खोते
विघ्नों को गले लगाते हैं
काटों में भी राह दिखाते हैं
है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके वीर के पग में
खंब ठोंक ठेलता है नर
पर्वत के जाते पाँव उखड़
मानव जब जोर लगाता है
तो पत्थर पानी बन जाता है

मो. आबिद सायरा
हापा शाखा, जूनागढ़

अबाध

मैं बेटी हूं, मैं सशक्त,
मैं उन्मुक्त, मैं अबाध
दूर उड़ूँगी आसमान में.
मैं अल्हड़ मैं सबल
खूब जलूँगी जीवन अग्नि में
मैं तप सोना बन जाऊँगी.
मैं प्रबल, पा तेरा संबल
निखरूंगी, चमकूंगी,
जगमग-जगमग जुगनू जैसी
डाली-डाली बिखरूंगी.
तेरा घर है, मेरा घर है
चिड़ियों जैसी चहकूंगी
नित सबेरे निकलूंगी
मैं दाना चुग-चुग लाऊँगी
और शाम थकी घर आऊँगी.
पापा तुम झूले पर सजना
ज़ोर से मैं झुलाऊंगी
पर तुम बिलकुल मत डरना,
मैं खड़ी हूं, मैं बेटी हूं,
मैं सशक्त, मैं उन्मुक्त, मैं अबाध

प्रभात कुमार
सरल, पुणे पश्चिम

तेलंगाना
भारत का नया राज्य

तेलंगाना शब्द की व्युत्पत्ति 'त्रिलंगा देश' से हुई है. त्रिलंगा देश अर्थात तीन प्राचीन शिव लिंग (कालेश्वरम, श्रीशैलम तथा द्राक्षरंम) का स्थान. कालांतर में त्रिलंगा शब्द निजामी शासन व्यवस्था के समय में 'तेलंगाना' के रूप में परिवर्तित हो गया जिसका शाब्दिक अर्थ है - तेलुगू आंगन अर्थात वह स्थान जहाँ तेलुगू भाषा बोलने वाले लोग निवास करते हैं.

भारत देश के 29वें राज्य के रूप में तेलंगाना राज्य का गठन 2 जून, 2014 को हुआ था. राज्य निर्माण की दृष्टि से यह देश का सबसे नया राज्य है. इसकी राजधानी हैदराबाद है. राज्य गठन से लेकर अब तक तेलंगाना राष्ट्र समिति के संस्थापक श्री के चंद्रशेखर राव तेलंगाना राज्य के मुख्यमंत्री हैं.

तेलंगाना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सर्वप्रथम वर्णन प्राचीन भारत के 'अश्मक' जनपद जो कि 16 महाजनपदों में से दक्षिण भारत में स्थित एकमात्र जनपद था, से मिलता है. अश्मक जनपद वर्तमान के तेलंगाना प्रांत का भाग था. इस भूभाग पर सातवाहन, काकतिय, इक्ष्वाकु, वाकाटक एवं निजाम ने शासन किया. तेलंगाना का इतिहास सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक रूप से उन्नत रहा है.

भारत की स्वतंत्रता के समय, हैदराबाद एक स्वतंत्र देशी रियासत थी. 17 सितंबर, 1948 को तत्कालीन गृहमंत्री, श्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में भारत सरकार ने सैन्य अभियान (ऑपरेशन पोलो) द्वारा, इसे भारतीय संघ में सम्मिलित कर लिया था.

1953 में गठित राज्य पुनर्गठन आयोग ने 1955 में, सर्वोच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधीश, श्री फैजल अली की अध्यक्षता में प्रस्तावित अपनी रिपोर्ट में स्वतंत्र तेलंगाना राज्य की गठन की अनुशंसा की थी पर राजनीतिक उलट फेर होने के कारण 1956 में तेलुगू भाषायी आधार पर तेलंगाना को समिति बनाकर आंध्र प्रदेश राज्य का गठन हुआ जो कि पहले मद्रास प्रांत का हिस्सा था. आंध्रवासियों द्वारा प्रगति के क्षेत्र में तेलंगाना की उपेक्षा किये जाने से, यहाँ के लोगों ने 1969 में श्री एम. चिन्ना रेड्डी की अगुवाई में तेलंगाना राज्य की मांग को लेकर आंदोलन शुरू किया था. आंदोलन तत्कालीन प्रधानमंत्री, इंदिरा गांधी की माध्यस्थता से श्री चिन्ना रेड्डी को आंध्र प्रदेश का गवर्नर बनाया गया था. प्रोफेसर जयशंकर भी राज्य आंदोलन में अग्रणी रहे.

90 के दशक से लेकर वर्ष 2014 तक तेलंगाना राज्य निर्माण के लिए अनेक आंदोलन चलते रहे और अंतत: 2 जून 2014 को श्री कल्वाकुंतला चंद्रशेखर राव के नेतृत्व में तेलंगाना राज्य का गठन हुआ.

तेलंगाना राज्य के उत्तर में महाराष्ट्र, उत्तर-पूर्व में छत्तीसगढ़ पश्चिम में कर्नाटक एवं दक्षिण-पूर्व में आंध्र प्रदेश है.

तेलंगाना राज्य, दक्षिण भारत के डेक्कन पठार में अवस्थित है. कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 112.08 लाख हेक्टेयर है. पाताल टोका, बेदाम गुट्टा, येर्रा दारी, पेद्दाकुर्वा आदि पर्वतों से घिरा है.

दक्षिण की गंगा- गोदावरी इस राज्य से होकर बहती है. अन्य नदियों में कृष्णा, भीमा, मंजिरा एवं मूसी प्रसिद्ध है. पठारी क्षेत्र में अवस्थित होने से इस राज्य की जलवायु उष्ण एवं शुष्क है. मानसून का आगमन जून के पहले सप्ताह से होता है.

भारत का तेलंगाना राज्य क्षेत्रफल में 11वाँ एवं जनसंख्या की दृष्टि से 12वां सबसे बड़ा राज्य है. हैदराबाद, वरंगल, करीमनगर, निजामाबाद यहां के प्रमुख शहर है. कुल जिलों की संख्या 33 है जिसमें क्षेत्रफल की दृष्टि से भद्रादरी कोथागुड़म सबसे बड़ा एवं हैदराबाद सबसे छोटा जिला है. राज्य के गठन के समय जिलों की संख्या 10 थी जिसे प्रशासनिक सुविधा एवं लोक कल्याण के लिए बढ़ा कर 33 कर दिया गया है. 2011 की जनगणना के अनुसार, तेलंगाना की साक्षरता दर 66.46% है जिसमें पुरुष साक्षरता दर 74.95% तथा महिला साक्षरता दर 57.92% है. जनसंख्या लगभग 350.04 लाख है, जिसमें पुरुष 176.12 लाख तथा महिलाएं 173.92 लाख है. राज्य का प्रतीक चिन्ह : अंदर की तरफ चार मीनार वाला काकतिया कला तोरण; राज्य का पशु: जिका; तथा राज्य पक्षी : पालापित्ता, राजकीय पेड़ : जम्मी चेट्टु; राजकीय पुष्प: तंगेडु; राजकीय फल: आम; आधिकारिक भाषा: तेलुगू, उर्दू

अर्थव्यवस्था की दृष्टि से तेजी से उभरता हुआ यह राज्य देश की जी.डी.पी. में 5% तक का योगदान देता है. देश की अर्थव्यवस्था में योगदान देने वाला यह चौथा बड़ा राज्य है. राज्य का प्रति व्यक्ति औसत देश के औसत से आगे है. हैदराबाद एक प्रमुख आईटी हब (सूचना एवं प्रौद्योगिकी) क्षेत्र के रूप में उभरा है.

राज्य में प्रमुख उद्योग वाहन निर्माण, खानें, कपड़ा उद्योग तथा औषधि निर्माण है. तेलंगाना खनिज के क्षेत्र में समृद्ध है. कोयला उत्पादन में 'सिंगरेनी' दक्षिण भारत की सबसे बड़ी कंपनी है. यहां देश के कोयला भंडार का कुल 7% उपलब्ध है जबकि उत्पादन में देश के कुल उत्पाद में 10% योगदान सिंगरेनी का ही है.

तेलंगाना में कृषि मुख्यत: वर्षा के स्रोतों से सिंचाई पर निर्भर है. यहाँ की प्रमुख फसल चावल है. इसके अतिरिक्त मक्का, चना, लाल मिर्च, कपास, हल्दी, सोयाबीन की भी विशेष रूप से खेती होती है.

चार मीनार (हैदराबाद), वरंगल फोर्ट (वरंगल), भद्राचलम, रामोजी फिल्म सिटी (हैदराबाद) सालारजंग म्यूजियम (हैदराबाद) तेलंगाना के प्रमुख पर्यटन स्थल हैं जबकि चिल्कुर बालाजी और बिरला मंदिर (हैदराबाद), 1000 स्तंभों वाला मंदिर (वरंगल), ज्ञान सरस्वती मंदिर (माँ सरस्वती को समर्पित देश का एकमात्र सरस्वती मंदिर, बासर, निजामाबाद), राम मंदिर-भद्राचलम इसे तेलंगाना का टेंपल हाऊल भी कहा जाता है, येलंदु (खम्मम) का हनुमान मंदिर यह देश का एक मात्र हनुमान मंदिर है जहां हनुमानजी अपनी पत्नी के साथ विराजमान हैं. इसके अलावा तेलंगाना में डैम, वाटर फॉल तथा राष्ट्रीय उद्यान भी हैं जो कि पर्यटन की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हैं. नार्गाजुन सागर डैम, कुंतल वाटर-फॉल (जलप्रपात), मृगवानी नेशनल पार्क भी (हैदराबाद) यहाँ है.

तेलंगाना दक्षिण भारत का संगम स्थान है जहां की संस्कृति में निजामी एवं आदिवासी संस्कृति के संयोग की झलक मिलती है. यहां की संस्कृति गंगा-जमुनी तहजीब के नाम से जानी जाती है. तेलंगाना राज्य की भौगोलिक संरचना, राज्य व्यवस्था एवं अर्थव्यवस्था यहां के संस्कृति को परिष्कृत एवं परिमार्जित करती है. धूम-धाम (नृत्य) पेरिनी शिवा-तांडवम, बिंदू भागवतम (यक्षगान का एक रूप), कव्वाली, गजल एवं मुशायरा यहां की लोककृति है. उगादी, बोनालू, बतुकम्मा, सामक्का - सरक्का जात्रा आदि यहाँ के त्योहार एवं उत्सव है. बिदरी कला- धातु पर चाँदी गोदना, बंजारा धातु शिल्प, कढ़ाई, निर्मल कला (चित्रकारी) तथा साड़ियों का यहाँ बड़ी कलाकारी से निर्माण किया जाता है. सर्वपिंडी, सकिनालु, पच्ची पुलसू, हैदराबादी बिरयानी, गरिजलू, चेगोडिलु आदि यहाँ के प्रसिद्ध व्यंजन हैं. नालसर विधि विश्वविद्यालय, उस्मानिया विश्वविद्यालय, आई. आई.आई.टी (हैदराबाद) बिट्स पीलानी (हैदराबाद) आदि शिक्षा संस्थाओं ने इसे शिक्षा के क्षेत्र में भी आगे बढ़ाया है.

विविधता में एकता को समेटे, अपनी सांस्कृतिक विरासत को सहेजे, प्राकृतिक संपदाओं को संजोये यह तेलंगाना राज्य, लोक कल्याणकारी नीतियों एवं विकासोन्मुखी योजनाओं को अपनाकर अपनी चहोन्मुखी प्रगति की ओर अग्रसर है.

अपराजिता प्रीति
रूद्रमपुर शाखा, खम्मम

तेलंगाना की क्षेत्रीय विशेषताएँ

तेलंगाना राज्य की राजधानी हैदराबाद यह एक अनुपम कॉस्मोपॉलिटन शहर है. हैदराबाद को 'निज़ाम का शहर' तथा 'मोतियों का शहर' भी कहा जाता है. कहावत है कि किसी समय इस ख़ूबसूरत शहर को यहाँ के शासक मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने अपनी प्रेमिका भागमती को उपहार स्वरूप भेंट किया था. गोलकुंडा के कुतुबशाही सुल्तानों द्वारा बसाया गया यह शहर ख़ूबसूरत इमारतों, निज़ामी शानो-शौक़त और लजीज खाने के कारण मशहूर है. किसी समय नवाबी परम्परा के इस शहर में शाही हवेलियां और निज़ामों की संस्कृति के बीच हीरे-जवाहरात का रंग उभर कर सामने आया तो कभी स्वादिष्ट नवाबी भोजन का स्वाद. अपने उन्नत इतिहास, संस्कृति, उत्तर तथा दक्षिण भारत के स्थापत्य के मौलिक संगम तथा अपनी बहुभाषी संस्कृति के लिये भौगोलिक तथा सांस्कृतिक दोनों रूपों में जाना जाता है यह शहर. अधिकांश हैदराबादी मुसलमानों की मातृभाषा हैदराबादी उर्दू है.

आज का आधुनिक हैदराबाद, सूचना प्रौद्योगिकी, औषधि और फिल्म उद्योग के लिये प्रसिद्ध है. अनेक कॉल सेंटर, बिज़नेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (बीपीओ), सूचना प्रौद्योगिकी व अन्य तकनीकी सेवाओं से संबंधित कंपनियाँ यहाँ कार्यरत हैं. हाइटेक सिटी नाम से यहाँ एक उप शहर भी बसाया गया है. सूचना प्रौद्योगिकी के त्वरित विस्तार के कारण इस शहर को साइबराबाद भी कहा जाता है. हैदराबाद में मोतियों का बाजार चारमीनार के पास स्थित है. चाँदी के उत्पाद, साड़ियां, कलमकारी पेंटिंग्स व कलाकृतियां, अनुपम बिदरी हस्तकला

की वस्तुएं, लाख की रत्नजड़ित चूड़ियाँ, रेशमी व सूती हथकरघा वस्त्र का व्यापार यहाँ सदियों से चला आ रहा है. हैदराबादी बिरयानी यहाँ का सबसे मशहूर व्यंजन हैं. स्वाद प्रेमियों के लिए तो हैदराबाद जन्नत के समान है. यहां की लजीज बिरयानी की खूशबू पर्यटकों को हैदराबाद खींच लाती है. हैदराबादी व्यंजनों में व्यापक इस्लामी प्रभाव दिखाता है. ईरानी चाय और हैदराबादी बिस्कुट भी बेहद प्रसिद्ध है.

हैदराबाद, तेलुगू फिल्म उद्योग की मातृभूमि है. हैदराबाद भारत का दूसरा सबसे बड़ा चलचित्र हब है. यहां प्रतिवर्ष सैंकड़ों फिल्में बनती हैं. सरधी स्टूडियो, अन्नपूर्णा स्टूडियो, रामानायडु स्टूडियो, रामकृष्ण स्टूडियो, पद्मालया स्टूडियो, रामोजी फिल्म सिटी इस शहर के उल्लेखनीय फिल्म स्टूडियो हैं. यहाँ चारमीनार के अतिरिक्त गोलकोंडा किला, सालारजंग संग्रहालय, हुसैन सागर झील जिसके मध्य गौतम बुद्ध की एक 18 मी. ऊँची प्रतिमा स्थापित है, दर्शनीय है.

सिकंदराबाद, हैदराबाद का जुड़वां शहर है जो हुसैन सागर झील से अलग होता है. वर्ष 1806 में ब्रिटिश छावनी के रूप में इसकी स्थापना हुई थी. भारत की आजादी तक सिकंदराबाद सीधे ब्रिटिश शासन के अधीन था, जबकि हैदराबाद निजाम की राजधानी के रूप में था. 1874 में स्थापित सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन दक्षिण मध्य रेलवे का मुख्यालय है. 1851 में निर्मित किंग एडवर्ड मेमोरियल अस्पताल को अब गांधी अस्पताल के रूप में जाना जाता है.

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रहे सर विंस्टन चर्चिल को 1890 के दशक में सिकंदराबाद में ब्रिटिश सेना में एक अधीनस्थ के रूप में तैनात किया गया था. सर रोनाल्ड रॉस ने सिकंदराबाद शहर में मलेरिया बीमारी पर अपना प्रारंभिक शोध पूरा किया. कोटी शहर का महत्वपूर्ण वित्तीय केंद्र है. यह किंग कोटी और राम कोटी दो भागों में बंटा हुआ है.

वारंगल: यह उत्तरी तेलंगाना का एक प्रमुख नगर है. वारंगल 12वीं सदी में काकतियों की प्राचीन राजधानी हुआ करती था. इन्होंने वारंगल दुर्ग, हनमकोंडा में सहस्त्र स्तम्भों वाला मन्दिर और पालमपेट का रामप्पा मन्दिर बनवाए. सन 1162 में निर्मित 1000 स्तम्भों वाला मंदिर इसी शहर में स्थित है. वारंगल दुर्ग की नींव काकतीय राजा गणपति ने डाली और 1261 ई. में रुद्रमा देवी ने इसे पूरा करवाया था. रुद्रमा देवी के शासन काल में इटली का प्रसिद्ध पर्यटक मार्कोपोलो मोटुपल्ली के बंदरगाह से आन्ध्र प्रदेश आया था. मार्कोपोलो ने वारंगल का वर्णन करते हुए लिखा है कि यहाँ पर संसार का सबसे बारीक सूती कपड़ा (मलमल) तैयार होता है.

करीमनगर: तेलंगाना का एक सुप्रसिद्ध और ऐतिहासिक जिला करीमनगर का नाम एक किलेदार सयैद करीमुद्दीन के नाम पर पड़ा. यह शहर वेदों की शिक्षा के लिए प्रसिद्ध है. यहां के प्रमुख प्राकृतिक संसाधनों में गोदावरी नदी सबसे महत्वपूर्ण है. यहाँ सातवाहन काल में ही लुहारों की उपस्थिति के प्रमाण मिलते हैं. सातवाहनों ने करीमनगर में लौह अयस्कों का उपयोग किया होगा, इसकी जानकारी यहाँ मिली महापाषाण काल के लोहे की खदानों से मिलती है. इस शहर को ग्रेनाइट का शहर भी कहा जाता है. यहाँ का राजराजेश्वर मंदिर, भगवान भीमेश्वर मंदिर, भगवान शैलेश्वर मंदिर, लक्ष्मीनारायण स्वामी मंदिर, ओंकारेश्वर व महालक्ष्मी मंदिर के अतिरिक्त मंथानी जैन और बौद्ध धर्म का केंद्र तथा वैदिक अध्ययन केंद्र मंथनी प्रसिद्ध हैं.

धुलिकट्टा एक महत्वपूर्ण बौद्ध स्थान है. पूरे विश्व से अनेक बौद्ध भिक्षु प्रतिवर्ष यहां आते हैं. सातवाहन काल के कई बौद्ध स्तूप यहां मिलते हैं. प्रति वर्ष जनवरी में यहां सातवाहन उत्सव का आयोजन किया जाता है. कोंडागट्टू में आंजनेय स्वामी का अद्भुत मंदिर है. पहाडियों, घाटियों और झरनों के बीच स्थित कोंडागट्टू की प्राकृतिक सुंदरता देखते ही बनती है. रैकल में केशवनाथ स्वामी का प्राचीन मंदिर है. 11वीं शताब्दी में काकतीय वंश द्वारा बनाए गए इस मंदिर की मूर्तियां बेहद खूबसूरत हैं. करीमनगर से दूर सुनसान ग्रेनाइट पहाड़ी पर योजनाबद्ध तरीके से मोलंगूर किले का निर्माण काकतिया राजाओं ने करवाया था.

जंगलों से घिरा खूबसूरत कामेश्वरम स्थान करीमनगर से 130 किलोमीटर दूर है. यहां का मुक्तेवश्वर स्वामी मंदिर विश्व का एक मात्र मंदिर है, जहां एक ही आधार पर दो शिवलिंग मिलते हैं.

महबूबनगर: इस शहर को पालमूर भी कहा जाता है. माना जाता है कि गोलकुंडा के प्रसिद्ध हीरे इसी स्थान से मिले थे. कपास की ओटाई, गांठ बनाने का काम, तेल और चावल मिलें यहाँ के प्रमुख उद्योग हैं. दक्षिण-पूर्व में स्थित वनाच्छादित पर्वतों से सागौन, आबनूस और गोंद प्राप्त होता है. जबकि मुख्यत: बलुई मिट्टी में ज्वार-बाजरा, तिलहन और चावल की खेती होती है. यहाँ के औद्योगिक केंद्रों में नारायणपेट प्रमुख है जहाँ रेशम और साड़ी का उत्पादन होता है.

महबूबनगर में ही 3 एकड़ में फैला हुआ 800 साल पुराने बरगद का पेड़ पिल्लामरी स्थित है. माना जाता है कि यह बरगद का पेड़ अपनी छाया में 1000 लोगों को एक साथ आश्रय दे सकता है.

निज़ामाबाद: इस शहर का पुराना नाम इन्द्रपुरी था. यहाँ से 80 किलोमीटर दूर स्थित कृत्रिम जलकुंड निजाम सागर, गोदावरी नदी की एक शाखा मंजीरा नदी पर बनाया गया है. यहां के खूबसरत उद्यान लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं. निजामाबाद से करीब 7 किलोमीटर दूर अशोक सागर नामक विशाल कृत्रिम जलाशय है. जलाशय के बीचों बीच देवी सरस्वती की 15 फीट ऊँची प्रतिमा इस स्थान की सुंदरता में चार चांद लगाती है. निजामाबाद में सातवाहन वंश के राजा सतकर्नी द्वितीय द्वारा बनवाया गया 500 साल पुराना भगवान शिव के नील कंठेश्वर मंदिर का वास्तु शिल्प देखते ही बनता है. इसके अतिरिक्त बड़ा पहाड़ दरगाह, निंबाद्री गुट्टा, सारंगपुर रामालयम किला आदि प्रसिद्ध स्थान हैं.

सीमा
क्षे.का. बेंगलूरु (दक्षिण)

तेलंगाना का इतिहास

भारत में आज के समय में 29 राज्य और 7 केंद्रशासित प्रदेश है. वैसे तो राज्यों की सीमा आजादी के बाद वर्ष 1953 में निर्धारित करने के लिए राज्य पुनर्गठन आयोग बनाए गए थे. जिन्होनें देश के सभी राज्यों की सीमा तय कर दी थी. लेकिन समय-समय पर संस्कृतिक विविधता और भाषा के आधार पर कई नए राज्यों को बनाया गया. ऐसे ही सांस्कृतिक कारणों से तेलंगाना राज्य भी बना है . तेलंगाना का इतिहास बहुत सारे साम्राज्यों से है.

मौर्य साम्राज्य: इस साम्राज्य की स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने 322 ई.पू. में की थी. यह पहला अखिल भारतीय साम्राज्य था जिसने अधिकांश भारतीय क्षेत्र को अपने बल से पा लिया. यह मध्य और उत्तरी भारत के साथ-साथ आधुनिक ईरान के कुछ हिस्सों में भी फैला हुआ था.

यह साम्राज्य ने चौथी शताब्दी ई.पू. के अंत से दूसरी शताब्दी ई.पू. तक अपना आधिपत्य तेलंगाना में गुजारा. मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद सातवाहना साम्राज्य एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरा.

सातवाहन साम्राज्य: सातवाहन वंश का संस्थापक राजा सीमुक था. इन्हें पुराणों में आंध्र के रूप में भी जाना जाता है, जो डेक्कन क्षेत्र का एक प्राचीन भारतीय राजवंश था. 230 ई.पू. से 60 ई.पू. तक इनका शासन रहा. सातवाहन साम्राज्य में मुख्य रूप से वर्तमान आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र शामिल था. चलते-चलते इनका शासन आधुनिक गुजरात, मध्य प्रदेश और कर्नाटक के कुछ हिस्सों तक फैला. आखिर में गौतमीपुत्र सातकर्णी और उनके उत्तराधिकारी वशिष्ठपुत्र पुलमावी के शासन में राजवंश अपने चरम पर पहुंच गया. तीसरी शताब्दी की शुरुआत में यह छोटे राज्यों में विभाजित हो गया.

वाकाटक साम्राज्य: भारतीय उप महाद्वीप के वाकाटक साम्राज्य की उत्पत्ति तीसरी शताब्दी ई.पू. के मध्य में हुई थी. इसने 250 ई. से 500 ई. तक अपना शासन किया. वाकाटक एक ब्राह्मण वंश था. जिसे कला, वास्तुकला और साहित्य में निपुण माना जाता है. आमतौर पर यह माना जाता है कि वाकाटक शासक परिवार प्रवरसे-I के बाद चार शाखाओं में विभाजित हो गया था. जिसमें से सिर्फ दो शाखाएँ ज्ञात हैं, प्रवरपुरा-नंदीवर्धन और वत्सगुल्मा शाखा.

विष्णुकुंडिन साम्राज्य: विष्णुकुंडिन राजवंश भारतीय शाही शक्ति थी, जो 420 ई. से 624 ई. के दौरान दक्खन, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा और दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों को नियंत्रित करती थी, जो वाकाटक साम्राज्य से बाहर निकली थी. शिव के महान भक्त होने के नाते, विष्णुकुंडिन वंश शिव को समर्पित कई गुफा मंदिरों के निर्माण के लिए जाना जाता हैं. चालुक्य, पुलकेशी-II द्वारा पूर्वी दक्खन की विजय के साथ विष्णुकुंडिन शासन समाप्त हुआ.

चालुक्य साम्राज्य: भारतीय शास्त्रीय राजवंश था जिसने 554 ई. से 753 ई. तक दक्षिण और मध्य भारत के बड़े हिस्सों पर तीन संबंधित और व्यक्तिगत राजवंशों के रूप में शासन किया. इस अवधि के दौरान, उन्होंने. बादामी चालुक्य युग दक्षिण भारतीय वास्तुकला के विकास में एक महत्वपूर्ण माना जाता है. इस राजवंश के राजाओं को उमापति वरलाभ कहा जाता था, जिन्होंने हिंदू भगवान शिव के लिए कई मंदिरों का निर्माण किया था. दक्षिणी भारत-आधारित राज्य ने कावेरी और नर्मदा नदियों के बीच के पूरे क्षेत्र को अपने नियंत्रण में ले लिया और समेकित कर दिया. आखिर में राष्ट्रकूट राजवंशियों ने चालुक्यों को पराजित कर शासन संभाला.

राष्ट्रकूट साम्राज्य: राष्ट्रकूट छठी और दसवीं शताब्दी के बीच भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े हिस्से पर शासन करने वाला एक शाही राजवंश था. सबसे पहले ज्ञात राष्ट्रकूट शिलालेख 7वीं शताब्दी का ताम्रपत्र अनुदान है, जो मध्य या पश्चिम भारत का एक शहर, मनापुरा से उनके शासन का विवरण देता है. राष्ट्रकूट साम्राज्य के केंद्र में लगभग पूर्ण कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्से शामिल थे, राष्ट्रकूटों ने दो शताब्दियों से अधिक समय तक इस क्षेत्र पर शासन किया. इन राजाओं ने धार्मिक सहिष्णुता की पारंपरिक भावना में उस समय के लोकप्रिय धर्मों का समर्थन किया. दंतिदुर्ग और अमोघवर्ष राष्ट्रकूट वंश के दो महान शासक थे.

काकतीय साम्राज्य: काकतीय वंश दक्षिण भारतीय राजवंश था, जिसने पूर्वी दक्खन क्षेत्र पर शासन किया. वर्तमान तेलंगाना और आंध्र प्रदेश, और पूर्वी कर्नाटक और दक्षिणी ओडिशा के कुछ हिस्सों में 12 वीं और 14 वीं शताब्दी के बीच शासन था. उनकी राजधानी ओरुगल्लु थी, जिसे अब वारंगल के नाम से जाना जाता है. प्रारंभिक काकतीय शासकों ने दो शताब्दियों से अधिक समय तक राष्ट्रकूटों और पश्चिमी चालुक्यों के सामंतों के रूप में कार्य किया. गणपति देव ने 1230 के दशक के दौरान काकतीय भूमि का काफी विस्तार किया और गोदावरी और कृष्णा नदियों के आसपास के तेलुगु भाषी तराई डेल्टा क्षेत्रों को काकतीय नियंत्रण में लाया. गणपति देव ने रुद्रम्मदेवी को उत्तराधिकारी बनाया जो भारतीय इतिहास की कुछ रानियों में से एक हैं.

रुद्रम्मादेवी: रुद्रम्मा देवी, 1263 से 1289 दक्खन के पठार में काकतीय वंश की एक सम्राट थीं. वह भारत में सम्राट के रूप में शासन करने वाली महिलाओं में से एक थीं और ऐसा करने के लिए उन्होंने एक पुरुष छवि को बढ़ावा दिया. गणपतिदेव की 1240 में वेंगी की विजय के बाद, रुद्रम्मादेवी का विवाह चालुक्य राजकुमार वीरभद्र से हुआ था, जो वेंगी चालुक्यों के सदस्य थे. रानी रुद्रम्मदेवी ने ओरुगल्लु किले का निर्माण करवाया था. कुछ इतिहासकारों का मानना है कि गोलकुंडा किले का निर्माण उन्हीं के द्वारा शुरू किया गया था.

रुद्रम्मादेवी ने 1261 से 1262 तक अपने पिता गणपतिदेव के साथ संयुक्त रूप से काकतीय राज्य का शासन शुरू किया. उन्होंने 1263 में पूर्ण संप्रभुता ग्रहण की. रुद्रम्मादेवी को अपना शासन शुरू करने के तुरंत बाद पूर्वी गंगा राजवंश और यादवों से चुनौतियों का सामना करना पड़ा. उनकी बड़ी बेटी मुम्मादम्मा का बेटा प्रतापरुद्र उनका उत्तराधिकारी बना,

मसुनूरी नायक: मुसुनुरी नायक 14 वीं शताब्दी के दक्षिण भारत के योद्धा राजा थे जो तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के क्षेत्र में महत्वपूर्ण थे. कहा जाता है कि मुसुनुरी कपाया नायक ने आंध्र के सरदारों के बीच नेतृत्व की भूमिका निभाई और वारंगल से दिल्ली सल्तनत को बाहर कर दिया.

दिल्ली सल्तनत: दिल्ली में स्थित यह इस्लामी साम्राज्य 320 वर्षों (1206-1526) तक भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े हिस्सों में फैला. 1323 में, गियाथ अल-दीन तुगलक ने अपने बेटे उलुग खान को वारंगल की काकतीय राजधानी के अभियान पर भेजा. धीरे-धीरे घेराबंदी करते हुए उलूग खान ने वारंगल पर कब्जा कर लिया.

1330 की शुरुआत में, काकतीय साम्राज्य के लिए सेना प्रमुखों के रूप में सेवा करने वाले मुसुनुरी नायक ने विभिन्न तेलुगु कुलों को एकजुट किया और दिल्ली सल्तनत के वायसराय से वारंगल को पुन: प्राप्त कर आधी शताब्दी तक शासन किया.

बहमनी सल्तनत: बहमनी सल्तनत यानि दक्खन का फारसी सुन्नी मुस्लिम साम्राज्य! यह दक्खन का पहला स्वतंत्र मुस्लिम राज्य था और विजयनगर के अपने हिंदू प्रतिद्वंद्वियों के साथ अपने सतत युद्धों के लिए जाना जाता था, जो सल्तनत से आगे निकला.

बहमनी सल्तनत ने 15वीं शताब्दी में इस क्षेत्र पर शासन किया था. 1463 में, सुल्तान मुहम्मद शाह बहमनी छ ने अशांति को शांती स्थापित करने के लिए सुल्तान कुली कुतुब-उल-मुल्क को तेलंगाना क्षेत्र में भेजा. सुल्तान कुली ने अपना कार्य बखूबी निभाया और उन्हें क्षेत्र के प्रशासक के रूप में पुरस्कृत किया गया. इस अवधि के दौरान, हैदराबाद शहर की स्थापना मुहम्मद कुली कुतुब शाह ने 1591 में मुसी नदी के तट पर की थी. चारमीनार और मक्का मस्जिद का निर्माण शहर का केंद्रबिंदु बनाने के लिए किया गया था. इन वर्षों में, हैदराबाद हीरे, मोती, हथियार और स्टील के लिए एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ.

गोलकोंडा सल्तनत: कुतुब शाही वंश ने 1512 से 1687 तक उत्तरी दक्खन के पठार (तेलंगाना) में गोलकुंडा सल्तनत पर शासन किया. बहमनी सल्तनत के पतन के बाद, ठकुतुब शाहीठ राजवंश की स्थापना 1512 में कुली कुतुब मुल्क ने की थी, जितने 'सुल्तान' की उपाधि धारण की थी. कुतुब शाही शासक इंडो-. फारसी, स्थानीय तेलुगु कला और संस्कृति दोनों के संरक्षक थे. प्रारंभिक इंडो-इस्लामिक प्रकार की वास्तुकला कुतुब शाही इमारतों में परिलक्ष्यित होती है. इसके कुछ उदाहरणों में गोलकोंडा किला, कुतुब शाही मकबरे, चारमीनार, मक्का मस्जिद, खैरताबाद मस्जिद, तारामती बारादरी और टोली मस्जिद शामिल हैं.

हैदराबाद के निज़ाम: हैदराबाद के निज़ाम (असफ-जाही वंश), ने हैदराबाद राज्य पर शासन किया, जिसमें 1724 से 1948 तक तेलंगाना, मराठवाड़ा और कल्याण-कर्नाटक शामिल थे. इस अवधि के अंतर्गत, हैदराबाद राज्य ब्रिटिश भारत की सबसे बड़ी रियासत थी और इसकी अपनी टकसाल, मुद्रा, रेलवे और डाक व्यवस्था थी. हीरा व्यापार के कारण निजाम ने भारी मात्रा में धन अर्जित किया.

1911 में, हैदराबाद के तत्कालीन निजाम महबूब अली खान ने अपने पुत्र मीर उस्मान अली खान को सातवें और अंतिम निजाम के रूप में स्थापित किया. वह उस समय के सबसे धनी व्यक्तियों में से एक माने जाते हैं. आधुनिक हैदराबाद का विकास उसी के शासनकाल में हुआ. एक धर्मनिरपेक्ष शासक होने के नाते, वेंकटेश्वर मंदिर, तिरुमाला, लक्ष्मी नरसिम्हा मंदिर, यादाद्री जैसे विभिन्न हिंदू मंदिरों को दिये दान और वार्षिक अनुदान के लिए वह जाने जाते हैं.

हजार स्तंभ मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए 1 लाख हैदराबादी रुपये का अनुदान भी उन्होने दिया. भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे में ठमहाभारतठ के संकलन हेतु लगभग 11 वर्षों तक शोध कार्य के लिए वह दान और वार्षिक अनुदान देते रहें.

ऑपरेशन पोलो: भारत के विभाजन के समय, भारत की रियासतें, सिद्धांत रूप से अपने क्षेत्रों के भीतर स्वशासन रखती थीं तथा अंग्रेजों के साथ सहायक गठबंधन रखते थे. निज़ामों ने बड़े पैमाने पर हिंदू आबादी की अध्यक्षता की. उस समय हैदराबाद के निज़ाम उस्मान अली खान थे. स्वतंत्रता के बाद निज़ामों ने भारत के साथ रहने से इंकार कर, स्वतंत्र रूप से रहने को चुना. उनके स्वतंत्रता की रक्षा के लिए मुस्लिम वर्ग से भर्ती एक अनियमित सेना को बनाया, जिसे रजाकार कहा जाता था.

यहां की जनता भारत देश में शामिल होना चाहती थी. इसी कारण अधिकतर जनता रजाकार के विरुद्ध विद्रोह करने लगे. विद्रोहियों ने निजाम सरकार के विरुद्ध एक समानांतर प्रणाली की स्थापना की, धीरे धीरे यहा एक सामाजिक क्रांति का कारण बना जहां जाति और लिंग भेद को कम किया गया; सशस्त्र दस्तों सहित महिलाओं के कार्यबल की भागीदारी बढ़ी और भूमि पुनर्वितरण के साथ किसानों की स्थिति में काफी सुधार हुआ. 1948 में अपने चरम पर, विद्रोह ने लगभग पूरे तेलंगाना के साथ और कम से कम 4,000 गांवों को सीधे तौर पर कम्यूनों द्वारा प्रशासित किया गया. पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में पुलिस कार्यवाही लागू की जिसे ऑपरेशन पोलो कहा गया, जो 13 सितंबर 1948 सुबह चार बजे शुरू हुआ. निज़ाम ने सरेंडर करते हुए भारत के साथ विलय के समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए. इस तरह दि. 17 सितंबर 1948 में हैदराबाद का भारत में विलय हो गया. मौजूदा तेलंगाना और कर्नाटक व महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों से मिलकर यह रियासत बनी थी. केंद्र सरकार ने नौकरशाह एम. के. वेल्लोडी को 26 जनवरी 1950 को हैदराबाद प्रांत का प्रथम मुख्यमंत्री नियुक्त किया. सन 1952 में पहले लोकतान्त्रिक चुनाव में हैदराबाद राज्य को बुरुगुला रामकृष्ण राव के रूप में पहले निर्वाचित मुख्यमंत्री मिला. आंध्र प्रदेश पहला राज्य था जिसे मद्रास प्रांत से भाषाई आधार पर अलग कर 1 नवंबर 1953 को गठित किया गया था, जिसकी राजधानी करनूल थी. हैदराबाद प्रांत को आंध्र में मिलाने का प्रस्ताव 1953 में प्रस्तुत किया गया जिसे तत्कालीन मुखी मंत्री बुरुगुला रामकृष्ण राव समर्थन किया परंतु तेलंगाना क्षेत्र के लोगों ने इस फैसले का विरोध किया. अंतत: तेलंगाना के हितों उद्देश्य से 20 फरवरी 1956 को तेलंगाना तथा आंध्र के नेताओं के बीच समझौता हुआ. इसके बाद राज्य पुनर्गठन अधिनियम के अंतर्गत हैदराबाद प्रांत को तेलुगू भाषी क्षेत्र आंध्र में शामिल किया

गया और 1 नवंबर 1956 को आंध्र प्रदेश बनाया गया जिसकी राजधानी हैदराबाद प्रांत बनायी गयी.

तेलंगाना आंदोलनः दिसंबर 1953 में, राज्य पुनर्गठन आयोग (SRC) को भाषाई आधार पर राज्यों के गठन के लिए नियुक्त किया गया था. जनता की मांग के कारण आयोग ने हैदराबाद राज्य के विघटन और मराठी भाषी क्षेत्र को बॉम्बे राज्य और कन्नड़ भाषी क्षेत्र को मैसूर राज्य के साथ विलय करने की सिफारिश की. तेलंगाना के हितों की रक्षा के वादे के साथ तेलंगाना और आंध्र को विलय करने के लिए 20 फरवरी 1956 को तेलंगाना के नेताओं और आंध्र के नेताओं के बीच एक समझौता हुआ. 1956 में पुनर्गठन के बाद, आंध्र प्रदेश बनाने के लिए तेलंगाना क्षेत्र को आंध्र राज्य में मिला दिया गया. आंध्र प्रदेश राज्य तेलंगाना, रायलसीमा और आंध्र प्रांतों में बंटा हुआ था जिसमे तेलंगाना प्रांत सबसे बड़ा क्षेत्र था. परंतु, तेलंगाना के लोग आंध्र प्रदेश सरकार से संतुष्ट नहीं थे. हैदराबाद, विकास का एकमात्र क्षेत्र था. प्राकृतिक संसाधनों के क्षेत्र के भेदभाव, नौकरी के आवंटन में भेदभाव और तेलंगाना क्षेत्र के विकास की कमी के कारण, स्वशासन के लिए अलग तेलंगाना राज्य की मांग पूरे क्षेत्र में ज़ोर शोर से उठी.

कल्वकुन्ट्ला चंद्रशेखर राव (केसीआर) के नेतृत्व में तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) नामक एक नई पार्टी का गठन अप्रैल 2001 में हैदराबाद को अपनी राजधानी के रूप में एक अलग तेलंगाना राज्य बनाने के एकल एजेंडे के साथ किया गया था. 2001 में, कांग्रेस कार्य समिति ने तेलंगाना राज्य की मांग को देखने के लिए एक दूसरे एसआरसी के गठन के लिए एनडीए सरकार को प्रस्ताव भेजा.

9 दिसंबर 2009 को, केंद्रीय गृह मंत्री पी चिदंबरम ने घोषणा की कि भारत सरकार एक अलग तेलंगाना राज्य बनाने की प्रक्रिया शुरू करेगी. इसके परिणामस्वरूप आंध्र और रायलसीमा दोनों में विरोध प्रदर्शन हुए. छात्रों, कार्यकर्ताओं, वकीलों और क्षेत्रों के विभिन्न संगठनों ने राज्य को एकजुट रखने की मांग करते हुए समैक्यांध्रा आंदोलन शुरू हुआ.

23 दिसंबर 2009 को, अन्य क्षेत्रों के लोगों की प्रतिक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार ने घोषणा की कि तेलंगाना पर कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी जब तक कि राज्य में सभी दलों और समूहों की सहमति नहीं बन जाती.

उस्मानिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एम कोदंडराम के संयोजन में अलग तेलंगाना की मांग का नेतृत्व करने के लिए राजनीतिक और गैर-राजनीतिक समूहों की एक संयुक्त कार्रवाई समिति का गठन किया गया था. 3 फरवरी को, सरकार ने इस मुद्दे को देखने के लिए न्यायमूर्ति श्रीकृष्ण की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय समिति नियुक्त की.

16 दिसंबर 2010 को, श्रीकृष्ण रिपोर्ट जमा करने की समय सीमा से दो सप्ताह पहले, टीआरएस ने वारंगल में एक सार्वजनिक बैठक का आयोजन किया. इस बैठक में 2.6 मिलियन से अधिक लोग शामिल हुए. भारतीय गृह मंत्रालय ने 6 जनवरी 2011 को श्रीकृष्ण समिति द्वारा तैयार की गई 505 पन्नों की रिपोर्ट जारी की. इस रिपोर्ट में दो विकल्प दिए गए. एक विकल्प में समस्या के समाधानों पर चर्चा की गई जिसमे वैधानिक रूप से सशक्त तेलंगाना, क्षेत्रीय परिषद के निर्माण के माध्यम से तेलंगाना, क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास और राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए कुछ निश्चित संवैधानिक और वैधानिक उपायों को एक साथ प्रदान करके राज्य को एकजुट रखना था. दूसरा सबसे अच्छा विकल्प, तेलंगाना और सीमांध्र में मौजूदा सीमाओं के अनुसार राज्य का विभाजन था जो हैदराबाद राजधानी के साथ तेलंगाना राज्य और एक नई राजधानी के साथ सीमांध्र राज्य.

17 फरवरी 2011 को, असहयोग आंदोलन शुरू किया गया जो 16 दिनों तक चला जिसमें 3,00,000 सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया. इससे सरकार को प्रतिदिन 8 अरब रुपये के राजस्व का नुकसान हुआ. फरवरी और मार्च में, विधानसभा सत्र का हफ्तों तक बहिष्कार किया गया और तेलंगाना के प्रतिनिधियों द्वारा संसद सत्र को कई दिनों तक बाधित किया गया.

10 मार्च 2011 को हैदराबाद में तेलंगाना जे.ए.सी.(जाइंट एक्शन कमेटी) द्वारा मिलियन मार्च का आयोजन किया गया. मार्च को बाधित करने के लिए, सीमांध्र पुलिस ने पूरे क्षेत्र में हजार से अधिक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया और कुछ परिवहन सेवाओं को रोककर और यातायात को डायवर्ट करके हैदराबाद शहर में प्रवेश बंद कर दिया.

नवंबर 2011 में, तेलंगाना राष्ट्र समिति विद्यार्थी विभाग (TRSV) के राज्य अध्यक्ष बालका सुमन को हैदराबाद पुलिस ने गिरफ्तार किया. जब उनके खिलाफ 'मिलियन मार्च' के दौरान टैंक बंड पर मूर्तियों को नुकसान पहुंचाने, पुलिस कर्मियों पर हमला करने, सीमांध्र की पुलिस और मीडिया वाहनों को नुकसान पहुंचाने के विषय में मामले दर्ज किए गए थे.

30 जुलाई 2013 को, कांग्रेस कार्य समिति ने सर्वसम्मति से एक अलग तेलंगाना राज्य के गठन की सिफारिश करने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया. विभिन्न चरणों के बाद फरवरी 2014 में भारत की संसद में बिल प्रस्तुत किया गया. फरवरी 2014 में, आंध्र प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम, 2014 विधेयक भारत की संसद द्वारा तेलंगाना राज्य के गठन के लिए पारित किया गया, जिसमें उत्तर-पश्चिमी आंध्र प्रदेश के दस जिले शामिल थे. 1 मार्च 2014 को विधेयक को राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त हुई. आधिकारिक तौर पर तेलंगाना राज्य का गठन 2 जून 2014 को हुआ था. कलवाकुंट्ल चंद्रशेखर राव को तेलंगाना के पहले मुख्यमंत्री के रूप में चुना गया था, जिसमें तेलंगाना राष्ट्र समिति पार्टी ने बहुमत हासिल किया. हैदराबाद को तेलंगाना और आंध्र प्रदेश दोनों की संयुक्त राजधानी के रूप में 10 साल तक रखने का निर्णय लिया गया.

अविषेक प्रसाद
क्षे.का.वरंगल

तेलंगाना के उद्योग, व्यवसाय, विशिष्ट केंद्र

तेलंगाना यूं तो कहने के लिए नवगठित राज्य है परंतु इसके खजाने में कई ऐसी चीजें हैं जो बहुत वर्षों से स्थापित राज्यों को भी पीछे छोड़ देती है. हैदराबाद वित्तीय और आर्थिक राजधानी के रूप में भी उभर के सामने आया है. हैदराबाद विश्व की फॉर्च्यून 500 कंपनियों को भी आकर्षित कर यहाँ निवेश करा चुका है. तेलंगाना के उद्योग/व्यवसाय व विशिष्ट केन्द्रों की बात करें तो इसमे भी आप इस राज्य को अग्रणी पाएंगे. हैदराबाद और शहर के आसपास स्थापित उद्यमी फैशन और फैशन संबन्धित उद्योगों के साथ सूचना प्रौद्योगिकी, ऑटोमोबाइल और मल्टीमीडिया स्टार्टअप के लिए भी ये राज्य जाना जाता है. मसाले, खदानें और खनिज, कपड़ा और परिधान, दवा, बागवानी, मुर्गी पालन भी यहाँ के मुख्य उद्योगों में शामिल हैं. हैदराबाद सूचना प्रौद्योगिकी और इंजीनियरिंग कंसल्टेंसी सिटी या हाईटेक सिटी तेलंगाना का एक प्रमुख आईटी केंद्र है.

तेलंगाना की औसत वार्षिक विकास दर 13.90% है, वर्ष 2020-21 के लिए घरेलू उत्पाद रु.11.05 लाख करोड़ है. वर्ष 2018-19 में लगभग 65% हिस्सेदारी के साथ तेलंगाना की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का सबसे बड़ा योगदान है. कृषि, तेलंगाना की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है. भारत की दो मुख्य नदियां गोदावरी और कृष्णा, राज्य से होकर बहती है जिससे सिंचाई में सहायता होती है. राज्य में 68 विशेष आर्थिक क्षेत्र हैं. तेलंगाना एक खनिज युक्त राज्य है, जिसमें सिंगरेनी कोलरीज़ में कोयला भंडार है. तेलंगाना भारत में बीज हब के रूप में विकसित हो रहा है. राज्य ने 2251 एकड़ में बीज की खेती की और सूडान, फिलीपींस जैसे देशों को 17,000 क्विंटल निर्यात भी किया. 2017-18 में इसने 2567 एकड़ में खेती का विस्तार किया और 26,000 क्विंटल उपज की उम्मीद कर रहा है.

ऑटोमोबाइल सेक्टर : सन 1942 में अलविन को हैदराबाद शहर की प्रथम ऑटो कॉम्पोनेंट बनाने वाली मेन्यूफ़ेक्यचरिंग और असेंबलिंग यूनिट के रूप में स्थापित किया गया. हैदराबाद शहर की भौगोलिक बनावट और स्थिति के कारण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कंपनी इसकी तरफ आकर्षित हुई और अपने उद्योग के लिए रिसर्च व डेवलपमेंट के लिए शहर व उसके आसपास में निवेश करने लगीं. इन सभी कारणों से ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री के एक हब के रूप में शहर का विकास होने लगा खासकर इलैक्ट्रिक गाड़ियों के उद्योग में.

वर्तमान में हुंडई, हैदराबाद अलविन, प्रगा टूल्स, एचएमटी बेयरिंग्स, आर्डिर्नेन्स फ़ैक्टरी, टाटा बोईंग एरोस्पेस, डेक्कन ऑटो, महिंद्रा एंड महिंद्रा, फिएट ऑटोमोबाइलस, मारुति सुज़ुकी और ट्राईटोन एनेर्जी आदि ऑटोमोबाइल कंपनियाँ हैदराबाद शहर में निवेश कर रही हैं.

फरवरी 2016 में तेलंगाना के आईटी मंत्री केटी रामा राव ने मंडिकोंडा, वारंगल में आईटी ऊष्मायन केंद्र की आधारशिला रखी. जनवरी 2020 में टेक महिंद्रा आर सायंट नाम की प्रमुख दो कंपनियाँ लगभग 2000 लोगों को रोजगार देने के लिए परिसर का उदघाटन कर चुकी हैं.

मोतियों का शहर : हैदराबाद को 'मोतियों का नगर' भी कहा जाता है. मोतियों का बाजार चारमीनार के पास स्थित है. 16वीं और शुरुआती 17वीं शताब्दी में जैसे-जैसे कुतुब शाही राजवंश की शक्ति और सत्ता बढ़ती गयी, हैदराबाद हीरों के व्यापार का केंद्र बनता गया. महारानी एलिज़ाबेथ के राजमुकुट में जड़ा विश्व में सर्वाधिक प्रसिद्ध कोह-ए-नूर, गोलकोंडा की हीरों की खानों से ही निकला है.

अपेरल पार्क गुंदलपोचमपल्ली - गौरतलब है कि पोचमपल्ली हैदराबाद से 50 किमी दूर तेलंगाना के नलगोंडा जिले का एक शहर है. इस गाँव को उत्कृष्ट साड़ियों के लिए भारत के रेशम शहर के रूप में जाना जाता है. इस खास साड़ी को इकत नामक एक अनूठी शैली के माध्यम से बुना जाता है.

एक्सपोर्ट प्रोमोशन पार्क पाशाम्यलारम : टाटा बोईंग एरोस्पेस-लिमिटेड--14,000 वर्ग मीटर में फैले, अत्याधुनिक विनिर्माण सुविधा बोइंग के AH-64 अपाचे हेलीकॉप्टर के लिए एयरो-स्ट्रक्चर का उत्पादन कर रही है, जिसमें दुनिया भर के ग्राहकों के लिए फ्यूजलेज, सेकेंडरी स्ट्रक्चर और वर्टिकल स्पर बॉक्स शामिल हैं. टीबीएएल आत्मनिर्भर भारत के प्रति बोइंग की प्रतिबद्धता और न केवल भारत के लिए बल्कि दुनिया के लिए एरोस्पेस और रक्षा में एकीकृत प्रणालियों के सह-विकास का एक उदाहरण है.

2016 में सुविधा की नींव रखे जाने के बाद, टीबीएएल ने 2018 में पहला अपाचे फ्यूजलेज दिया. जुलाई 2021 में, टीबीएएल ने बोइंग को एएच-64 अपाचे लड़ाकू हेलीकॉप्टर के लिए 100वां धड़ दिया. संचालन के तीन वर्षों के भीतर इसे हासिल करना सहयोग, मजबूत विनिर्माण क्षमता, उन्नत तकनीक और उच्च स्तर की गुणवत्ता की बात करता है.

टीबीएएल, भारत में बोइंग का पहला इक्विटी संयुक्त उद्यम, टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड (टीएएसएल) के साथ 2015 के साझेदारी समझौते का परिणाम है. हाल ही में, बोइंग ने 737 हवाई जहाजों के परिवार के लिए जटिल ऊर्ध्वाधर फिन संरचनाओं के निर्माण के लिए एक नई उत्पादन लाइन को जोड़ने की घोषणा की.

बायो टेक्नालजी पार्क, तुरकापल्ली-जीनोम वेली : हैदराबाद के आसपास 25 वर्ग किलोमीटर में फैली जीनोम वैली, भारत का पहला संगठित अनुसंधान एवं विकास क्लस्टर है, जिसमें औद्योगिक/ज्ञान पार्क, विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड), बहु-किरायेदार जीवन विज्ञान केंद्रित केंद्रों के रूप में विश्व स्तरीय बुनियादी सुविधाएं हैं. क्लस्टर कृषि-बायोटेक, क्लिनिकल रिसर्च मैनेजमेंट (सीआरएम), बायोफार्मा, वैक्सीन निर्माण, नियामक और परीक्षण और अन्य संबंधित क्षेत्रों सहित जीवन विज्ञान क्षेत्र में कंपनियों के स्वस्थमिश्रण के माध्यम से तालमेल प्रदान करता है. यह उपनगरों तुरकापल्ली, शमीरपेट, मेडचल, उप्पल, पाटनचेरु, जिदीमेटला, गचीबोवली और किसारा में स्थित है.

जीनोम वैली भारत में अनुसंधान एवं विकास केंद्रित जीवन विज्ञान कंपनियों का पसंदीदा स्थान है. अब इसमें 200 से अधिक कंपनियां

हैं, जो इसे एक ही स्थान पर बहु-किरायेदार प्रयोगशाला-अंतरिक्ष बुनियादी ढांचे का देश का सबसे बड़ा समूह बनाती है. शमीरपेट - हैदराबाद में स्थित, जीनोम वैली को तेलंगाना सरकार से अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों के लिए उत्कृष्ट समर्थन बुनियादी ढांचा प्राप्त हुआ है. अपनी स्थापना के बाद से जीनोम वैली तेजी से विस्तार कर रही है, हर साल लगभग 2,00,000 एसएफ प्रयोगशाला स्थान जोड़े जा रहे हैं.

वैश्विक और भारतीय जैव-प्रौद्योगिकी कंपनियों, विश्व स्तर पर प्रसिद्ध अनुसंधान संस्थानों और सर्वश्रेष्ठ-इन-क्लास, विशेष समर्थन बुनियादी ढांचे की एक स्थापित उपस्थिति के साथ, जीनोम वैली आज देश में सबसे बड़ा और सबसे जीवंत आर एंड डी क्लस्टर है.

तेलंगाना सरकार ने 1999 में अनुसंधान एवं विकास कंपनियों को आकर्षित करने और हैदराबाद में मौजूदा जीवन विज्ञान कंपनियों के लाभ के तालमेल के लिए जीनोम वैली बनाई. तेलंगाना इंडस्ट्रियल इंफ्रास्ट्रक्चर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (TSIIC) के साथ राज्य सरकार ने हैदराबाद के पास शमीरपेट में विशाल भूमि पार्सल की पहचान की, जहां जीनोम वैली क्लस्टर विकसित किया जा सकता है. क्लस्टर में सुविधाओं हेतु कंपनियों को आकर्षित करने के लिए सड़कों, समर्पित बिजली और पानी की आपूर्ति जैसे समर्थन बुनियादी ढांचे का भी विकास किया. इसके बाद, विशेष पार्क जैसे कि आईसीआईसीआई नॉलेज पार्क (अब आईकेपी नॉलेज पार्क) और शापूरजी पालन जी बायोटेक पार्क (पूर्व में अलेक्जेंड्रिया नॉलेज पार्क, अब एमएन पार्क) को सरकारी सहायता से क्रमशः वर्ष 2000 और 2001 में विकसित किया गया था.

लौरस, विमता लैब्स और ड्यूपॉन्ट ने बाद के वर्षों में क्लस्टर में अपने स्वयं के समर्पित आर एंड डी परिसरों को विकसित करना शुरू कर दिया. आज तक, नोवार्टिस, जीएसके और नेकटार सहित कई वैश्विक कंपनियों ने यहां अपनी सुविधाएं स्थापित की हैं और पूरी तरह से जीनोम वैली में काम कर रही हैं.

अक्टूबर 2016 में, लाइटहाउस कैंटन पीटीई द्वारा जीनोम वैली में आर एंड डी एसेट्स के अधिग्रहण के माध्यम से एमएन का गठन किया गया था और पार्क का नाम बदलकर 'एमएन पार्क' कर दिया गया.

फार्मा इंडस्ट्रीज़ : हैदराबाद औषधीय उद्योग का भी एक प्रमुख केंद्र है, जहाँ डॉ. रेड्डीज़ लेब, मैट्रिक्स लेबोरेटरीज़ हेटरो ड्रग्स लिमिटेड, डाइविस लैब, औरबिंदो फार्म लिमिटेड तथा विमता लैब जैसी बड़ी कंपनियाँ स्थापित हैं.

फार्मा इंडस्ट्रीज भारतीय अर्थव्यवस्था में एक बड़ी भूमिका निभा रहा है. भारतीय फार्मा इंडस्ट्री सालाना 13 अरब डॉलर से अधिक फार्मास्यूटिकल उत्पादों का निर्यात करती है. वर्तमान में यह 36.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है और कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार वर्ष 2020 तक यह 55 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच जाएगा. यह भारत का दूसरा सबसे तेजी से बढ़ने वाला उद्योग है और मात्रा के अनुसार यह विश्व में तीसरे स्थान पर है. भारत में कई फार्मा कंपनियां हैं जो भारत के फार्मा सेक्टर में बहुत बड़ी भूमिका निभा रही है और इस क्षेत्र में हैदराबाद की भूमिका अग्रणी रहती है. कैसी भी चिकित्सा सुविधा हो, हर सुविधा आप यहाँ पाएंगे. कई बड़ी कम्पनियां भी अपना मुख्यालय यहाँ स्थापित कर, कार्य कर रही हैं -

डॉ. रेड्डीज़ लेबोरेटरीज़ - डॉ. रेड्डीज़ लेबोरेटरीज़ भारत की शीर्ष फार्मा कंपनियों में से एक है. हैदराबाद में स्थित इस कंपनी की स्थापना कलाम अंजी रेड्डी ने 1984 में की थी और तब से इस कंपनी ने बहुत सफलता प्राप्त की जो मुख्य रूप से कंपनी के ओमेज़ उत्पाद के कारण थी. कंपनी के पास लगभग 60 एपीआई हैं और यह लगभग 190 औषधियों का निर्माण करती है. कंपनी का व्यापार लगभग 20 देशों में फैला हुआ है. डॉ. रेड्डी की सालाना बिक्री 2.4 बिलियन डॉलर से अधिक है.

अरबिन्दो फार्मा लिमिटेड - अरबिन्दो फार्मा हैदराबाद में स्थित एक अन्य शीर्ष फार्मा कंपनी है जो 1986 से इस क्षेत्र में कार्य कर रही है. इस कंपनी के प्रमुख उत्पाद एंटीएट्रोवायरल, एंटीबायोटिक्स और एंटी-एलर्जिक उत्पाद हैं. कंपनी ने पांडिचेरी में अपना एक मेन्युफेक्चरिंग यूनिट स्थापित किया है और आज यह कंपनी 125 देशों से अधिक देशों को अपने उत्पाद बेचती है. कंपनी का सालाना टर्नओवर लगभग 2 बिलियन डॉलर है. यह भारत की शीर्ष 10 फार्मा कंपनियों में से एक है.

इग्नू - क्षेत्रीय केंद्र : हैदराबाद क्षेत्रीय केंद्र की स्थापना 1987 में की गई थी. दो उत्तरी तटीय जिले श्रीकाकुलम और विजयनगरम को छोडकर यह क्षेत्रीय केंद्र पूरे आंध्र प्रदेश को समाहित करता है. इस क्षेत्रीय केंद्र का औपचारिक उदघाटन इग्नू के संस्थापक श्री वी सी प्रोफेसर, जी रामा रेड्डी द्वारा 2 फरवरी 1987 को किया गया था. कुछ ही वर्षों में इसने 60 अध्ययन केन्द्रों की स्थापना की और 120 से ज्यादा कार्यक्रम अध्ययन केंद्र में उपलब्ध कराया जाने लगा.

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान - क्षेत्रीय केंद्र : केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का दूसरा क्षेत्रीय केंद्र हैदराबाद में 1976 में स्थापित किया गया. यह केंद्र स्कूलों/ कॉलेजों एवं स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के हिन्दी अध्यापकों के लिए 1 से 4 सप्ताह के लघु अवधि के पुनश्चयी या उन्मुखीकरण कार्यक्रमों का आयोजन करता है. वर्तमान में हैदराबाद केंद्र का कार्यक्षेत्र आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, गोवा, महाराष्ट्र एवं केंद्र शासित प्रदेश पांडिचेरी एवं अंडमान निकोबार द्वीप समूह है.

ए सूरज कुमार
क्षे. का. पंजागुट्टा, हैदराबाद

तेलंगाना की लोक संस्कृति

तेलंगाना, दक्खन के पठार पर बसा, दक्षिण भारत का एक राज्य है. कृष्णा और गोदावरी नदियां इसके चरण पखारती हैं और यहां की 1,12,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को अपने अमृत जल से जीवन प्रदान करती हैं. यहां यादगिरीगुट्टा स्थित लक्ष्मी नरसिम्ह मंदिर, रामप्पा मंदिर, भद्राचलम मंदिर, गोदावरी तट पर स्थित बासर का सरस्वती मंदिर के देवी-देवताओं का शुभ आशीर्वाद सदा इस क्षेत्र के लोगों पर बना रहता है. इस क्षेत्र पर मौर्य, सातवाहन, राष्ट्रकूट, चालुक्य, काकतीय, बहमनी और निजामों का शासन रहा है. सितंबर 1948 में ऑपरेशन पोलो के फलस्वरूप यह प्रदेश निजामों की हुकूमत से निकलकर भारत सरकार के अधीन आया. 2 जून 2014 में तेलंगाना और आंध्र प्रदेश अलग राज्यों में विभाजित हुए. वर्तमान में तेलंगाना राज्य में कुल 33 जिले हैं और जनसंख्या लगभग चार करोड़. यहां तेलुगू भाषी 76%, उर्दू भाषी 12%, और शेष भाषा वाले 12% हैं. आबादी का 82% हिंदू और 12% मुसलमान हैं, शेष इसाई, बौद्ध, जैन आदि हैं.

तेलंगाना की वेशभूषा में, धोती-कुर्ता, पुरुषों का और साड़ी, महिलाओं के मुख्य परिधान हैं. मुस्लिम स्त्रियां काले बुर्के में और पुरुष कुर्ते पाजामे और जालीदार टोपी पहनते हैं. दक्षिण भारत के अन्य प्रदेशों की भांति यहां का मुख्य भोजन इडली, दोसा, वड़ा, सांबर, चटनी नाश्ते में और चावल, दाल, सब्जी, रसम, दही, अचार, पापड़ आदि दोपहर और रात्रि के भोजन हैं. उसमानिया बिस्कुट और ईरानी चाय मशहूर नाश्ता है. यहां के भोजन में तिल, इमली और लाल मिर्च का अत्यधिक प्रयोग होता है. चटनी में हरी मिर्च का खूब प्रयोग होता है. यहां बिरयानी, चिकन और मांस के अनेक व्यंजन मुसलमान घरों के मुख्य आहार हैं. तेल में काफी देर तक भूने हुए स्वादिष्ट पकौड़े (मिर्ची, बैंगन आदि के), भुजिया आदि भी यहां नाश्ते में काफी प्रयोग में आते हैं. गुड़, दूध, चावल, नारियल और सूखे मेवे से बना पायसम यहां के लोग बहुत पसंद करते हैं.

हिंदुओं का मुख्य त्योहार मकर संक्रांति और उगादि बहुत धूम-धाम से मनाए जाते हैं. संक्रांति के अवसर पर रंगोली बनाकर स्त्रियां पूरे राज्य को शोभायमान बना देती हैं. इस दिन पायसम, खिचड़ी, तिल और गुड़ मिश्रित मिठाइयां आदि बनायी जाती हैं. महाशिवरात्रि और नागपंचमी भी बड़ी श्रद्धा से मनाते हैं.

तेलंगाना के हर हिंदू दरवाजे के आगे प्रतिदिन सुबह स्त्रियां रंगोली बनाती हैं. बोनालु पर्व यहां का बड़ा ही खास पर्व है. यह मां काली की पूजा है, जिन्हें यहां 'येल्लम्मा', 'पोचम्मा' आदि नामों से पुकारते हैं. यह वर्षा ऋतु में मनाई जाती है. इस दिन स्त्रियां घड़े में नैवेद्य रखकर, घड़े को नीम की झाड़ियों से सजाकर, उसके ऊपर एक दीया जलाकर, अपने सिर पर रख कर, सपरिवार मंदिर तक जाती हैं. मंदिर में जानवरों की बलि या कोहड़े और नींबू की बलि देकर, माता को प्रसन्न किया जाता है. उसके बाद सभी वहीं भोजन बनाकर सपरिवार खाते हैं. इस पर्व के दौरान तपस्वी भक्त पोतराजु के वेश में कोड़े से अपने खुले शरीर पर प्रहार करते हुए मंदिर जाते हैं.

दशहरे में मनाया जाने वाला बतुकम्मा पर्व भी स्त्रियों द्वारा मां पार्वती को समर्पित विशेष त्यौहार है. फूलों से बनी बतुकम्मा (पार्वती देवी) को धरती पर स्थापित कर महिलाएं सुंदर परिधानों में सज-धज कर, इसके चारों ओर नृत्य करते हुए, परिक्रमा करती हैं. यह खुले मैदान में आयोजित होता है. दशहरे के नौ दिनों तक बतुकम्मा चलता है. विजयादशमी के दिन पूजा के बाद लोग कोहड़े को अपने दरवाज़े के ऊपर, बाहर से टांग देते हैं. ऐसी मान्यता है कि, कोहड़ा समस्त नकारात्मक तरंगों को अपने में जब्त कर लेता है और परिवार में सदा उन्नति एवं खुशहाली बरकरार रहती है. विजयादशमी में लोग अपने वाहनों की पूजा करके उन्हें फूलों की माला पहना देते हैं.

महाराष्ट्र की भांति तेलंगाना में भी गणेश चतुर्थी सामाजिक पर्व के रूप में बड़ी धूम-धाम से मनाते हैं. लगभग हर घर में गणेश जी की मिट्टी की छोटी या बड़ी प्रतिमा स्थापित की जाती है. इसके अलावा हर गली-नुक्कड़ पर सामूहिक गणेश पंडाल लगाये जाते हैं. सबसे ऊंची प्रतिमा खैरताबाद में स्थापित गणपति की होती है. पंडित जी विधिवत वेद मंत्रों के साथ गणपति बप्पा को स्थापित करते हैं, तीन दिन, पांच दिन, सात दिन या नौ दिनों के लिए सुबह-शाम भगवान की पूजा और आरती की जाती है. आखरी दिन भगवान को धूम-धाम से पूरे मुहल्ले में कंधे पर रख कर परिक्रमा कराते हुए, ढोल-नगाड़े बजाते हुए, नाचते -गाते हुए और जयकारा लगाते हुए, किसी सरोवर में विसर्जन कर देते हैं. इतनी श्रद्धा कि भगवान अपने भक्तों को साल भर वरदान देते रहेंगे.

तेलंगाना राज्य लंबे समय से विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का एक केंद्र बिंदु रहा है. यह अपनी गंगा-जमुना तहज़ीब (हिंदू-मुस्लिम एकता) के लिए भी जाना जाता है. धर्म के संदर्भ में इस्लाम दूसरे

स्थान पर है. 14वीं शताब्दी के बाद से इस्लाम के प्रचार के साथ मुस्लिम शासन के दौरान क्षेत्र के कई हिस्सों में मस्जिद बने. सन 1701ई. से, मुख्यत: सामाजिक रूप से अक्षम लोगों में, ईसाई धर्म फैलना शुरू हुआ.

18वीं - 19वीं सदी में शैक्षणिक संस्थानों, चर्चों की संख्या में वृद्धि हुई जब ईस्ट इंडिया कंपनी और बाद में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें प्रोत्साहित किया. कुल मिला कर तेलंगाना में संस्कृति, धर्म और समाज एक दूसरे से घुल-मिल गए. तेलंगाना को एक लघु भारत के रूप में आंका जा सकता है जहाँ देश के सभी त्यौहारों को मनाया जाता है. इसीलिए तेलंगाना को 'उत्तर के दक्षिण और दक्षिण के उत्तर' के रूप में जाना जाता है, जहाँ हिंदू भी मुसलमान के त्योहार में भाग लेते हैं और मुसलमान भी हिंदू त्योहारों का लुत्फ उठाते हैं.

मुहम्मद कुली कुतुब शाह उर्दू के प्रथम साहेब-ए-दीवान थे. शुरुआती युग से तेलंगाना के अन्य कवियों में पोतना, कंचरा गोपन्ना या भक्त रामदासु, मल्लिया रेचन्ना, गोना बुद्धा रेड्डी, पालकुर्ती सोमनाथ, मल्लिनथा सूरी और हुलुकी भास्कर शामिल हैं. आधुनिक युग के कवियों में पद्म विभूषण कालोजी नारायण राव, साहित्य अकादमी पुरस्कृत दासराथी कृष्णमाचार्युलू और ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त श्री सी नारायण रेड्डी हैं. साथ ही भारत के नौवें प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव जैसे व्यक्तित्व भी यहीं से थे. श्री सामला सदाशिव को हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विषय पर उनकी पुस्तक 'स्वर-लयलू' ने वर्ष 2011 में केंद्र साहित्य पुरस्कार प्राप्त किया.

तेलंगाना के सभी मंदिरों में एक ही प्रकार की स्थापत्य कला नज़र आती हैं. मंदिर के आगे ध्वजस्तंभ अनिवार्य है. मंदिर में नीम, पीपल, आमला आदि वृक्ष अवश्य होते हैं. नारियल फोड़ने का स्थान, हवन का स्थान, प्रसाद वितरण का स्थान भी सामान्य बात है. लोग पूजा के बाद कान पकड़, उठक-बैठक कर भगवान से क्षमा मांगते हैं और साष्टांग नमन करते हैं. मंदिर में थोड़ी देर बैठ कर भक्तों का मन शांत-प्रशांत हो जाता है और नई ऊर्जा से भर जाता है. आम तौर पर यहां के पुरुष और स्त्रियों के नाम देवी-देवताओं के नाम पर ही रखे जाते हैं. अगर गलती से किसी का पैर दूसरे के पैर से स्पर्श हो जाए, तो वो ईश्वर से क्षमा मांगते हैं. यहां दुर्गा माता, बालाजी, शिवजी, गणेश जी और साई बाबा के मंदिर अधिक संख्या में देखे जा सकते हैं. दुर्गा पूजा के 40 दिवस पहले बहुत से दुर्गा भक्त लाल धोती-कुर्ते में नंगे पांव सात्विक, शाकाहारी और ब्रम्हचारी व्रत पालन करते हैं और दिसंबर में काले धोती-कुर्ते में अयप्पास्वामी भगवान के भक्त एक मंडल काल तक सात्विक, शाकाहारी और ब्रम्हचर्य व्रत करते हैं.

तेलंगाना में बच्चे एक नियत उम्र को पार करते हैं तो उन्हें बड़ों के समान पहनावा पहनाकर एक बड़े उत्सव का आयोजन किया जाता है, जिसमें सारे रिश्तेदार आते हैं तथा उनके लिए खाने-पीने का सुंदर प्रबंध भी किया जाता है. लड़के को धोती पहनायी जाती है और लड़की को साड़ी. इसी प्रकार लडकी का पहली बार रजस्वला होना भी एक बड़े उत्सव के रूप में मनाया जाता है.

तेलंगाना के लोगों में फिल्मों का शौक चरम सीमा पर है. लोग पूरे परिवार के साथ सप्ताह के अंत में सिनेमा देखने अवश्य जाते हैं और खाली समय में फिल्मों की बातें करके आनंदित होते हैं. यहां महान लोगों, नेताओं की आदमकद मूर्तियां चौराहों पर जगह-जगह परिलक्षित होती हैं. स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, डॉक्टर अंबेडकर आदि की मूर्ति हर मुहल्ले में आप देख सकते हैं. किसी के मरने पर उसका बड़ा पोस्टर चौराहे पर लगाकर उस पर फूल चढ़ाना, अर्थी के साथ शहनाई, ढोल आदि बजते हुए अंतिम संस्कार किया जाता है.

घर में चाहे जो शुभ अवसर हो, गृह-प्रवेश, विवाह आदि सुबह तड़के चार बजे के ब्रह्म मुहूर्त से पूजा पाठ आरंभ हो जाता है. प्राय: सभी घरों में हर शुभ कार्य में सत्यनारायण पूजा एक अनिवार्य अंग है. सुबह-सवेरे का मूहुर्त हो तो सात बजे तक आप प्रसाद खा सकते हैं. जिस घर में शादी होने वाली होती है, उस घर में सुबह सूर्योदय से पूर्व ही शहनाई और ढोल नगाड़े की एक खास ध्वनि पूरे वातावरण में गूंजने लगती है और शाम में भी वही ध्वनि गूंजती है. यह तब तक चलता है जब तक शादी संपन्न न हो जाए. आंध्र की भांति कुचीपुड़ी तेलंगाना का मुख्य शास्त्रीय नृत्य है. इसमें थाली पर खड़े होकर नृत्य की मुद्राओं के साथ थाली घुमाना बड़ा दिलकश लगता है. यहां के आदिवासी और पहाड़ी नागरिकों द्वारा किया जाने वाला लंबाड़ी नृत्य भी काफी मशहूर है. इसके अतिरिक्त गुस्डी नृत्य, दापू नृत्य, पेरिनी शिव तांडव नृत्य भी प्रसिद्ध है. लोक नाट्य, जो मंच पर किए जाते हैं, के ज्यादातर कथानक पौराणिक विषयों से संबंधित रहते हैं.

बिदरी शिल्प एक प्रसिद्ध कला है जिसमें धातु से बनी कलाकृतियों पर सोना-चांदी का लेप चढ़ाया जाता है. इसके अलाव डोकरा मेटल क्राफ्ट्स ,बंजारा सुई शिल्प, जिसमें दर्पण डालकर कढ़ाई की जाती है और निर्मल के तैल चित्र काफी मशहूर हैं .

यहाँ की हथकरघा की ख्याति देश-विदेश में फैली है. भूदान आंदोलन का जन्मस्थल पोचमपल्ली में बनी इक्कत डिज़ाइन की साडियां, सूट और चादर, सिरसिल्ला की साड़ियां इतनी नाज़ुक हैं कि इन्हें एक माचिस की डिब्बी में सहेजा जा सकता है. गडवाल की ज़री युक्त सूती साड़ियां आरामदायक और आकर्षक भी हैं. तिरुपति बालाजी के ब्रह्मोत्सव का पहला पहनावा इन साड़ियों का ही होता है. इनके अलावा नारायणपेट, सिद्दिपेट की गोल्लभामा की साड़ियां भी काफी प्रसिद्ध हैं. तेलंगाना के लोग जितने बलिष्ठ और पुष्ठ होते हैं उतने ही सरल स्वभाव और मिलनसार भी. हर अवसर में सामूहिक भावना से एक साथ एकत्रित होना यहाँ की सामाजिक प्रवृत्ति और लोक संस्कृति है.

संजय कुमार सुमन
अलवाल शाखा, सिकंदराबाद

तेलंगाना के दर्शनीय, पर्यटन स्थल

तेलंगाना राज्य का गठन भारत के आंध्रप्रदेश राज्य से हुआ है. तेलंगाना को एक स्वतंत्र राज्य बनाने के लिए लंबे समय से चले आ रहे आंदोलन के बाद आखिरकार तेलंगाना के रूप में भारत के नये राज्य का जन्म हुआ. यह 29वें राज्य के रूप में घोषित किया गया है.

तेलंगाना में पर्यटन के लिए बहुत कुछ है. यहाँ के दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए देश-विदेश के लोग आते हैं. यहाँ कई ऐतिहासिक स्थल, आकर्षक मंदिर, झरने हैं. ये पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं.

दर्शनीय और ऐतिहासिक स्थान :

चारमीनार : तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में स्थित चारमीनार भारत की सबसे खूबसूरत इमारतों में से एक है. इसे कुतुबशाही वंश के पाँचवें शासक कुली कुतुबशाह ने 1591 ई. में बनवाया था. इसकी संरचना फारसी प्रभावों के साथ भारत-इस्लामी वास्तुकला का एक उदाहरण है. इसकी आयु 450 वर्ष है. इसकी नक्काशी बेमिसाल है. दीवारें ग्रेनाइट और चूने से बनी हैं. इसकी चार मीनारें हैं. यह हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई धर्मों का प्रतीक है. इसे घातक महामारी प्लेग के अंत का जश्न मनाने के लिए बनाया गया था.

वरंगल : वरंगल तेलंगाना के उत्तरी भाग में बसा हुआ एक खूबसूरत शहर है. वास्तव में यह इतिहास प्रेमियों के लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं है. ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करने वाले सैलानियों को यह शहर हमेशा आकर्षित करता है. शानदार मंदिर, प्राचीन किले, शांत झील, बेहद खूबसूरत यह शहर कई कलाओं से परिपूर्ण हैं जो सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं.

वरंगल का किला : यह भारत के ऐतिहासिक धरोहरों में से एक है. 13वीं सदी में बने इस किले की मज़बूती बेमिसाल है. इस किले पर कई हमले हुए लेकिन अपनी मजबूती के कारण यह किला आज भी अस्तित्व में है.

हज़ार खंभा मंदिर: यह मंदिर हन्मकोंडा में हैं. इसका इतिहास बहुत प्राचीन है. इसका निर्माण काकतीय राजवंश के राजा रुद्रदेव के आदेशानुसार 1175-1324 ईस्वी में किया गया था. इस मंदिर में हर दिन भगवान शिव की पूजा की जाती है. यह वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है.

रामप्पा: यूनेस्को ने तेलंगाना में स्थित 13वीं सदी के काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर को विश्व धरोहर स्थल की मान्यता दे दी है. 13वीं सदी में बना यह मंदिर आज भी मज़बूती से खड़ा है.

बोगता जलप्रपात: यह मुलुगु जिले में चीकुपल्ली जलधारा पर स्थित एक जलप्रपात है. यह मुलुगु से 90 कि.मी. वरंगल से 140 किमी दूरी पर है. इस जलधारा को देखने के लिए अलग-अलग प्रांतों से सैलानी आते हैं.

राजा राजेश्वर मंदिर, वेमुलावाड़ा: राजान्ना श्रीसिल्ला जिला के वेमुलावाड़ा गांव में स्थित यह मंदिर प्राचीन एवं प्रसिद्ध शिव मंदिरों में से एक है. इसका उल्लेख पुराण में मिलता है. इसे 'दक्षिण काशी' भी कहा जाता है. ऐसा कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण राजा परीक्षित के पोते राजा नरेन्द्र द्वारा किया गया था. तीर्थयात्रियों को शिव लिंग दर्शन से पहले धर्म गुंडम नामक एक पवित्र तालाब में दिव्य स्नान करना होता है. ऐसी मान्यता है कि तालाब के पवित्र जल में औषधीय गुण हैं जो कई रोगों से मुक्ति दिलाते हैं. हर वर्ष महा शिवरात्रि के समय, बड़ी संख्या में भगवान शिव की पूजा करने के लिए भक्त वेमुलावाड़ा आते हैं.

जोगुलम्बा मंदिर: आलमपुर नगर के जोगुलम्बा मंदिर तुंगभद्रा नदी के किनारे अवस्थित है. जोगुलम्बा मंदिर के प्रमुख देवता जोगुलम्बा और बलब्रह्मेश्वर हैं. देवी जोगुलम्बा को देश के 18 शक्तिपीठों में 5वां शक्तिपीठ माना जाता है. यह मंदिर चालुक्य कला और संस्कृति का प्रतीक है. कहा जाता है कि भगवान ब्रह्मा ने इस स्थान पर हजारों वर्षों तक तपस्या कर भगवान शिव को प्रसन्न कर संसार की रचना करने की शक्ति प्राप्त की थी.

श्री सीता रामचंद्रस्वामी मंदिर, भद्राचलम: भद्राचलम नगर में गोदावरी नदी के तट पर स्थित यह मंदिर भगवान श्री रामचंद्र को समर्पित है. इस मंदिर का महत्व रामायण काल से है. यह क्षेत्र

रामायण काल के 'दंडकारण्य' में स्थित था जहां भगवान श्रीराम ने अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वनवास काटा था. मंदिर से लगभग 35 किलोमिटर दूर पर्णशाला है, जहां से रावण ने माँ सीता का अपहरण कर लिया था. मंदिर में स्थापित श्री रामचंद्र, श्री लक्ष्मण एवं देवी सीता जी की प्रतिमाएं पोकला धामक्का नामक राम भक्त को मिली थीं. सन् 1674 में कंचर्ला गोपन्ना जो भक्त रामदास के नाम से जाना जाता है द्वारा इस मंदिर का निर्माण कर प्रतिमाएं स्थापित की गयी थी.

श्री लक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी मंदिर, यादाद्री: इसे यादगिरिगुट्टा मंदिर के नाम से भी जाना जाता है. स्कंद पुराण के अनुसार, महर्षि ऋष्यश्रृंग के पुत्र यदा ऋषि ने इस स्थान पर भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए तपस्या की थी. उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु उनके सामने नरसिंह अवतार के पांच रूपों में प्रकट हुए - ज्वाला नरसिम्हा, श्री गंदभिरंदा नरसिम्हा, श्री योगानंद, श्री उग्र और लक्ष्मी नरसिम्हा. वर्तमान में इन सभी पांच रूपों की पूजा मंदिर में की जाती है. ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर में आने वाले सच्चे भक्त की सभी मनोकामनाएं पूरी होती है.

इस हजारों वर्ष पुराने मंदिर का कायाकल्प किया जा रहा है तथा नया मंदिर बनाया जा रहा है. यह तेलंगाना सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना है. तेलंगाना के मुख्यमंत्री, के चंद्रशेखर राव ने मंदिर के जीर्णोद्धार की पहल की है. मंदिर का नवीनीकरण किया जा रहा है. पुराने मंदिर का क्षेत्रफल 9 एकड़ था जिसे भव्यता प्रदान करने के लिए 1900 एकड़ जमीन का अधिग्रहण किया गया है. मंदिर में 39 किलो सोना और लगभग 1,753 टन चांदी से सारे गोपुर (द्वार) और दीवारें मढ़ी जा रही हैं. यादाद्री मंदिर विकास प्राधिकरण द्वारा पुनर्निर्माण का कार्य वर्ष 2016 से निष्पादित किया जा रहा है जो कि अब लगभग पूरा हो गया है.

मो. अब्दुल सलाम
क्षे.का. खम्मम

तेलगांना के धार्मिक, ऐतिहासिक स्थल

तेलंगाना भारत का एक नया राज्य है. इसका अपना एक इतिहास है. तेलंगाना में कई ऐतिहासिक तथा आध्यात्मिक स्थान हैं. जहाँ देश-विदेश से श्रद्धालु एवं पर्यटक आते हैं उनमें से कुछ महत्वपूर्ण स्थान इस प्रकार से हैं-

बासर

श्री ज्ञान सरस्वती मंदिर, बासर गोदावरी नदी के तट पर स्थित है. तेलंगाना के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में यह एक है. यह स्थान तेलंगाना के निर्मल जिले के अंतर्गत आता है. कई राज्यों से यहाँ श्रद्धालु आते हैं. कई माता-पिता अपनी संतान को यहाँ पर सबसे पहले अक्षराभ्यास करवाते हैं, फिर स्कूल में प्रवेश करवाते हैं. मान्यता है कि ऐसा करने से बच्चों का ध्यान पढ़ाई में अधिक रहता है.

मक्का मस्जिद हैदराबाद

मक्का मस्जिद एक मशहूर मस्जिद है. इस मस्जिद का निर्माण 17वीं शताब्दी में हुआ. यह काफी विशाल मस्जिद है जिसमें 10000 लोग एक साथ नमाज़ पढ़ सकते हैं. यह भारत के प्रसिद्ध स्मारकों में एक है, जो हैदराबाद के पुराने शहर में स्थित है और चारमीनार के समीप है.

चिलकुर बालाजी मंदिर

चिलकुर बालाजी मंदिर जिसे 'वीसा मंदिर' के नाम से भी जाना जाता है. यह एक प्राचीन मंदिर है. यह रंगारेड्डी जिले के उस्मान सागर के तट पर स्थित है. यह हैदराबाद शहर का सबसे पुराना मंदिर है. यह मंदिर भक्त रामदास के पूर्वज मद्दना और अक्कना द्वारा बनाया गया है.

जो श्रद्धालु मंदिर में आते हैं वे खास तरह की परंपरा का पालन करते हैं. जब वे मन्नत मांगते हैं तब मंदिर के 11 चक्कर काटते हैं और जब-जब मन्नत पूरी होती है तब वे 108 बार मंदिर की प्रदक्षिणा करते हैं. अधिकतर श्रद्धालु यहाँ वीसा की मनोकामना लेकर आते हैं इसीलिए इसे वीसा मंदिर कहा जाता है.

सेंट जॉर्ज चर्च, हैदराबाद

सेंट जॉर्ज चर्च, हैदराबाद ई.पू. का सबसे पुराना चर्च है. यह 1844 ई. में चर्च मिशनरी सोसायटी द्वारा बनाया गया था. इसका एक अपना अलग इतिहास है. यह चर्च एक पहाड़ी पर स्थित विशाल वास्तुकला है और यहाँ तक पहुँचने के लिए 500 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती है.

हुसैन सागर

हुसैन सागर, हैदराबाद शहर की सुंदरता में चार चाँद लगाता है. इसका दूसरा नाम टैंकबंड भी है. यह एक हार्ट के आकार की झील है. जिसे इब्राहीम कुली कुतुब शाह द्वारा 1536 में बनाया गया है. यह 5.7 वर्ग किलोमीटर तक फैली है. इस झील के बीचों-बीच गौतम बुद्ध की विशाल प्रतिमा बनी हुई है, जिसे 1992 में बनाया गया है. इसकी अधिकतम गहराई 32 फीट है.

महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल -

अनंतगिरि हिल्स

यह तेलंगाना में स्थित प्रमुख पर्यटन स्थल है. हैदराबाद से इसकी दूरी 79 किलोमीटर है. अनंतगिरी वन इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि यहाँ अनंत पदनामास्वामी मंदिर बना हुआ है, जिसे निज़ाम नवाबों द्वारा 400 साल पहले बनाया गया है. मंदिर की थोड़ी दूरी पर एक झील है जिसके इर्दगिर्द भगवान शिव के नष्ट किए हुए मंदिर के अवशेष हैं. अनंतगिरी का मुख्य मंदिर एक गुफा के चारों ओर बना हुआ है. यहाँ ट्रैकिंग की सुविधा भी उपलब्ध है.

बिरला मंदिर

बिरला मंदिर एक और आकर्षण का केंद्र है. जो 280 फीट ऊंचाई पर एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है. यह मंदिर द्रविड़, राजस्थानी और उत्कल वास्तुकला के मिश्रण को दर्शाता है. इसका निर्माण 2000 टन शुद्ध संगमरमर से किया गया है. भगवान वेंकटेश्वर स्वामी की मूर्ति लगभग 11 फीट ऊँची है. मुख्य मंदिर के अलावा यहाँ भगवान वेंकटेश्वर स्वामी, पद्मावती जैसे अलग-अलग कई मंदिर हैं. यह एक धार्मिक स्थान होने के साथ-साथ एक पर्यटन स्थान भी है.

दुर्गमचेरुवु (झील)

यह हाई टेक सिटी के काफी करीब स्थित है. यह विभिन्न ग्रेनाइट चट्टानों के बीच छिपा हुआ है और इसीलिए इसे गुप्त झील भी कहा जाता है. इसे माधापुर झील के नाम से भी जाना जाता है. झील के चारों ओर चट्टानें हैं जो 63 एकड़ के क्षेत्र में फैली हुई हैं. यह भी कहा जाता है कि गोलकोंडा किले में झील के पानी को पीने के पानी के रूप में इस्तेमाल किया जाता था. इस झील पर कई तरह की गतिविधियों के लिए सुविधाएं हैं जैसे पेडल, कैपिंग के साथ-साथ ट्रैकिंग भी.

मल्लेला तीर्थम-

मल्लेला तीर्थम यह श्रीशैलम से 58 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. यह तेलंगाना का एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है. यह सप्ताह के अंत के छुट्टियों के दौरान सैर के लिए अच्छी जगह है. यहाँ एक आकर्षक झरना है जो कि सुंदर घने जंगल के बीच स्थित है. इस झरने का पानी 150 मीटर की ऊंचाई से गिरता है और यह पानी फिर कृष्णा नदी से जाकर मिलता है.

रचकोंडा किला

रचकोंडा किले को 14वीं शताब्दी में पद्म नायक वंश के शासक रेचेरला सिंगमा नायक द्वारा बनाया गया था. इस किले के आसपास मैदानों का मनोरम दृश्य है. साथ-ही-साथ यह किला अद्भुत मध्ययुगीन वास्तुकला का प्रदर्शन करता है. यहाँ भ्रमण करने वाले सभी के लिए यह आकर्षण का केंद्र है.

भोनगिरि फोर्ट

भोनगिरि किला/फोर्ट तेलंगाना का एक और महत्वपूर्ण पर्यटन का केंद्र है. यह नलगोंडा जिले के भोनगिरि में स्थित है. जो तेलंगाना का इतिहास बयां करता है. इतिहास प्रेमी को यह किला खासा प्रभावित करता है. इसका निर्माण 12वीं शती में त्रिभुवनमल्ला विक्रमादित्य vi, प्रमुख चालुक्य शासक द्वारा किया गया. यह किला एक विशाल अखंड चट्टान पर स्थित है. यह तेलंगाना के महत्वपूर्ण स्थानों में एक है.

कुंतला झरना

कुंतला झरना कड़म नदी पर स्थित है जो कि आदिलाबाद के नारडीगोंडा में स्थित है. यह तेलंगाना राज्य का सबसे ऊंचा झरना है. जिसकी ऊंचाई 50 मीटर है. यह गोंड समुदाय द्वारा बसे घने जंगल में स्थित है. 'कुंता' का मतलब तेलुगू और गोंडी में तालाब होता है. इस झरने का उद्गम कई तालाबों को मिलकर होता है और फिर इस झरने का पानी कड़म नदी से जा मिलता है. यह एक प्रसिद्ध झरना है. आस-पास के राज्यों के कई पर्यटक इस झरने का आनंद लेने के लिए आते हैं. इसके अलावा कई ऐसे पर्यटन एवं धार्मिक स्थल तेलंगाना में हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं. जैसे निज़ाम सागर, कामारेड्डी में स्थित है, बड़ा पहाड़ जो निजामाबाद जिले में स्थित है, कारीमनगर फोर्ट, श्रीराम सागर डैम- निजामाबाद, श्रीशैलम टाइगर रिजर्व पार्क इत्यादि.

सुमित कुमार बम्मिडी
क्षे.का. हैदराबाद, कोटी

तेलंगाना के त्योहार

भारत विविधताओं का देश है, जिसमें हर राज्य अपनी कुछ विशेषता के लिए प्रसिद्ध है और साथ ही प्रसिद्ध हैं, यहाँ मनाए जाने वाले त्योहार. हर राज्य की अपनी एक मान्यता और त्योहार होते हैं जिससे न सिर्फ उस राज्य की संस्कृति के बारे में पता चलता है वरन उसमें बसने वाले लोगों की मान्यताओं के बारे में भी जानकारी मिलती है. ऐसे तो कई त्यौहार हैं जिन्हें हम सब मनाते है परंतु कुछ त्योहार सिर्फ कुछ विशेष राज्य में ही मनाए जाते है जिनके बारे में आज हम इस लेख में जानेंगे.

मकर सक्रांति : मकर सक्रांति वैसे तो भारत का प्रमुख पर्व है. मकर सक्रांति पूरे भारत में किसी-न-किसी रूप में मनाया जाता है. पौष मास में जब सूर्य मकर राशि पर आता है तभी इस पर्व को मनाया जाता है. वर्तमान में यह त्यौहार जनवरी माह के चौदवहें या पन्द्रहवें दिन ही पड़ता है. तमिलनाडु में इसे पोंगल नामक उत्सव के रूप में मनाते हैं जबकि कर्नाटक, केरल तथा आंध्र प्रदेश में इसे केवल सक्रांति ही कहते हैं. मकर सक्रांति पर्व को कहीं-कहीं उत्तरायण भी कहते हैं, यह भ्रांति है कि उत्तरायण भी इस दिन होता है, किन्तु मकर संक्रांति उत्तरायण से अलग है. तेलंगाना में भी इसे सक्रांति के नाम से ही धूम-धाम से मनाते हैं. ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान भास्कर अपने पुत्र शनि से मिलने स्वयं उसके घर जाते हैं. चूंकि शनिदेव मकर राशि के स्वामी हैं, अत: इस दिन को मकर सक्रांति के नाम से जाना जाता है. मकर सक्रांति के दिन ही गंगाजी भागीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होती हुई सागर में जाकर मिली थी.

नागोबा यात्रा उत्सव : नागोबा जात्रा एक आदिवासी त्यौहार है जो केसलापुर गाँव, इंद्रवेल्ली मण्डल अदिलाबाद जिले, तेलंगाना में आयोजित किया जाता है. इस आदिवासी त्यौहार को केसलापुर जात्रा के नाम से भी जाना जाता है. यह आदिवासी राजा गोंड और पवर्धन जनजातियों के मेश्राम कबीले की भोईगुड़ा शाखा का एक विशाल धर्मिक और संस्कृतिक उत्सव है. इस त्यौहार के दौरान नाग देवता नागोबा की महापूजा आयोजित की जाती है.

यह त्यौहार पौष मास में शुरू होता है और 10 दिनों तक चलता है. इस त्यौहार पर मेश्राम कुल से संबन्धित महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ ओडिशा और मध्यप्रदेश के आदिवासी पूजा करते हैं. आदिवासी पुजारियों द्वारा केसलपुर गांव से 70 किमी दूर गोदावरी नदी से लाये गए जल से नागोबा की मूर्ति पर जलाभिषेक करने के बाद 10 दिवसीय उत्सव शुरू होता है. इस उत्सव के दौरान गोंड जनजाती के आदिवासी लोग सफ़ेद धोती -कुर्ता और पगड़ी तथा महिलाएं पारंपरिक रंगीन नौ वारी साडी पहनती हैं. इस पर गुसाड़ी नृत्य का आयोजन किया जाता है. भेटिंग इस उत्सव का एक अभिन्न अंग है जहां पहले जात्रा के दौरान नई दुल्हनों का कुल देवता से परिचय कराया जाता है.

आरती नागरकर
क्षे.का. पंजागुट्टा, हैदराबाद

येल्लम्मा, पोचम्मा, मुत्यालम्मा, मैसम्मा इस प्रकार कई रूपों में अपने भक्तों की रक्षा करने वाली देवी माँ को समर्पित यह तेलंगाना का एक पारंपरिक हिंदू त्योहार है, जिसे बीमारियों से बचने और सुख समृद्धि की कामना करते हुए वर्षा ऋतु में मनाया जाता है. तेलंगाना राज्य के हैदराबाद-सिकंदराबाद नगरद्वय तथा समीपवर्ती क्षेत्रों में प्रतिवर्ष 'आषाढ़' के माह में यह त्योहार मनाया जाता है. हिंदू संस्कृति में जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रार्थना से जोड़ने की परंपरा रही है. हर ऋतु के आरंभ में कोई-न-कोई उत्सव मनाया जाता है जिसका मुख्य उद्देश्य उस ऋतु के साथ आने वाले मौसमी परिवर्तन का सामना करने के लिए आवश्यक तैयारी करना होता है. इसी प्रकार वर्षा ऋतु के आरंभ में नीम, हल्दी तथा सामूहिक रस्मों में लोबान का प्रयोग करते हुए स्वयं को और अपने परिसर को बीमारियों से बचाने की तैयारी इस त्योहार का मुख्य उद्देश्य कहा जा सकता है.

इस त्योहार के शुरू होने के पीछे एक और घटना जुड़ी है. कहा जाता है कि 1813 में हैदराबाद-सिकंदराबाद नगर द्वय में हैजे का बड़ा प्रकोप फैला था, जिससे कई लोगों की मृत्यु हुई. इसी दौरान शहर की सेना की एक टुकड़ी मध्यप्रदेश के उज्जैन में तैनात थी. कहा जाता है कि हालातों से बचने के लिए सेना के इन जवानों ने उज्जैन शहर में महाकाली के मंदिर में पूजा की और यह मन्नत माँगी कि अगर बीमारी की समस्या पूरी तरह टल जाती है तो वे सिकंदराबाद शहर में माँ काली की मूर्ति स्थापित करेंगे. इसके बाद धीरे-धीरे शहर से हैजा का संक्रमण कम होते-होते पूरी तरह से समाप्त हो गया. इसके बाद सेना के जवानों ने यहाँ माँ महाकाली की मूर्ति की स्थापना की. तब से प्रतिवर्ष आषाढ़ के महीने में यह त्योहार मनाया जाता है.

इस त्योहार के दौरान महिलाएं मिट्टी के बर्तन में दूध, चावल और गुड़ / शक्कर मिलाकर 'बोनम' तैयार करती हैं, इस बोनम को एक पीतल या मिट्टी के मटके में रखा जाता है जिसके ऊपर एक कटोरी ढकी जाती है. इस कटोरी में घी या तेल का दिया जलाया जाता है. इससे पहले मटके को हल्दी और कुमकुम से पोत कर रंगा जाता है. मटके को नीम के पत्तों से सजाया जाता है. महिलाएं सज-धज कर नए कपड़े पहन कर 'बोनम' को सिर पर लिए माता के मंदिर की ओर शोभायात्रा में नाचते हुए निकलती हैं. यह माना जाता है कि माता स्वयं इनमें प्रवेश करती हैं. अत: यह अक्सर देखा जाता है कि बोनम ले जा रही महिलाएं मंदिर के पास पहुंचते-पहुंचते एक प्रकार की समाधि अवस्था में आ जाती हैं और उग्र होने लगती हैं. उनके साथी भक्त उनके पैरों पर नीम और हल्दी मिलाया हुआ पानी डालते हुए माता के उग्र रूप को शांत करने का प्रयास करते हैं. इस उत्सव के दौरान महाकाली को प्रसन्न करने के लिए मुर्गी, बकरी की बली भी चढ़ाई जाती है, इसके बाद भोग तैयार किया जाता है और माता को नैवेद्य अर्पित किया जाता है. पूर्व में उत्सव के प्रारंभ में माता के मंदिर के सामने भैंसे की बली चढ़ायी जाती थी. लेकिन अब पशुबलि के स्थान पर नींबू या नारियल चढ़ाया जाता है.

हैदराबाद में आषाढ़ माह के पहले रविवार को सबसे पहले गोलकोंडा के श्री जगदंबिका मंदिर में बोनालु अर्पित किया जाता है. इसके बाद

सिकंदराबाद के उज्जैनी महाकाली मंदिर में यह उत्सव मनाया जाता है. इसे लश्कर बोनालु के नाम से जाना जाता है. इसके पश्चात लाल दरवाजा के माता के मंदिर में बोनालु अर्पित किया जाता है. इसके बाद ही अन्य जगहों पर बोनालु अर्पित किया जाता है. अंतिम बोनालु भी गोलकोंडा के जगदंबिका मंदिर को अर्पित करने के बाद बोनालु उत्सव समाप्त हो जाता है.

लोक कथा के अनुसार देवी माँ के भाई 'पोतराजु' इस उत्सव का निर्वहन करते हैं. अत: पोतराजु का रूप धारण किये व्यक्ति शोभायात्रा को चलाते हैं. वह अपने पूरे शरीर पर हल्दी का लेप लगाए, माथे पर कुमकुम का बड़ा तिलक लगाए, लाल रंग की छोटी धोती पहने, पैरों पर घुंघरू बांधे, स्वयं पर कोड़े बरसाते हुए ताल-वाद्यों की ध्वनि पर नाचते हुए शोभायात्रा को मंदिर तक ले जाता है. पोतराजु को पूजा कार्यक्रम के प्रवर्तक और भक्त जनों के रक्षक के रूप में माना जाता है.

बोनालु उत्सव के दौरान 'रंगम' नाम की खास रस्म में एक महिला कच्चे घड़े पर खड़ी हो जाती है और भविष्यवाणी करती है. मान्यता है कि इस रस्म के दौरान माता स्वयं उस महिला में प्रवेश करती है और भविष्यवाणी करती हैं. यह रस्म शोभायात्रा से पहले होती है. इस त्योहार से जुड़ा एक और रस्म है 'घटम'. मान्यता के अनुसार आषाढ़ के महीने में माता अपने मायके आती है. पीतल के घड़े को माता के आकार में सजाया जाता है, इसे घटम कहा जाता है. त्योहार के पहले दिन घटम की शोभायात्रा निकाली जाती है.

आषाढ़ के पहले रविवार से लेकर श्रावन के माह तक हर सप्ताह रविवार और सोमवार को शहर के अलग-अलग प्रांतों में मनाया जाने वाला बोनालु त्योहार दो दिन का उत्सव है. हर घर, हर गली-नुक्कड नीम के पत्ते, गेंदे के फूल और बिजली के झिलमिल दीपों के तोरणों से जगमगा उठते हैं.

हरिबावली के अक्कन्ना मादन्ना मंदिर में हाथी पर घटम की शोभायात्रा निकाली जाती है. इसके साथ अक्कन्ना और मादन्ना के पुतले घोड़ों पर सवार होकर शोभायात्रा में शामिल होते हैं. नयापुल में घटम के विसर्जन के साथ यह शोभायात्रा समाप्त होती है. सिकंदराबाद शहर (लश्कर) के करबाला मैदान में उज्जैनी महाकाली और महादेवी पोचम्मा के घटम, हिमाम बावी में डोक्कलम्मा, कलासीगुडा, चिलकलगुडा, उप्पर बस्ती, कुम्मरिगुडा, रेजिमेंटल बज़ार आदि में मुत्यालम्मा, पुराने मडफोर्ट में तिरु तुलकांतम्मन, सुलतानशाही की जगदम्बा, शाह अली बंडा में बंगारू मैसम्मा, बोग्गुलकुंटा की मैसम्मा और चंदुलाल बेला, गनफाउंड्री की मुत्यालम्मा मंदिरों का घटम उत्सव काफी प्रसिद्ध हैं.

प्रत्यूषा पी अंबटवार
क्षे. का., सिकंदराबाद

कुछ त्योहार प्रांतीय होते हुए भी उसकी झांकी बहुत दूर तक जाती है. धीरे-धीरे वह त्योहार पूरे राष्ट्र में मनाया जाने लगता है. ऐसा ही एक त्योहार है, 'बतुकम्मा' जो तेलंगाना का प्रमुख त्योहार है. यह त्योहार तेलंगाना की पहचान है. 'बतुकम्मा' शरद ऋतु के आगमन पर मनाया जाता है तथा प्रमुख रूप से महिलाओं द्वारा मनाया जाता है. वर्तमान समय में पुरुष भी इसमें उत्साह से सहभागी हो रहे हैं.

इस त्योहार के संबंध में कई कथाएँ, किंवदंतियाँ प्रचलित हैं. चोल राजा धर्मगदा और सत्यवती ने अपने 100 पुत्रों को युद्ध के मैदान में खो दिया देवी लक्ष्मी से उनके घर में उनके बच्चे के रूप में जन्म लेने की प्रार्थना की, देवी लक्ष्मी ने उनकी प्रार्थना सुनी जब राजा-रानी को पुत्री हुई तो सभी ऋषि उन्हें आशीर्वाद देने आए और तब सभी ने उन्हें 'बतुकम्मा' या हमेशा के लिए अमर रहने का आशीर्वाद दिया. एक और किंवदंती यह है कि देवी और महिशासुर के मध्य भीषण युद्ध के बाद देवी ने महिशासुर राक्षस का वध किया तथा भक्त अश्वयुज पद्यमी पर सोने चली गयी. वह दशमी को जागी और तभी से यह उत्सव मनाया जाता है.

'बतुकम्मा' तेलंगाना का प्रमुख त्योहार है. यह फूलों का त्योहार है. इस समय वसंत का आगमन होता है और हर तरफ फूल खिले होते हैं, हरियाली बिछी होती है. नदी, तलाब पानी से लबालब हो जाते हैं.

'बतुकम्मा' तेलंगाना के साथ आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र का तेलंगाना की सीमा से जुड़ा हुआ क्षेत्र है वहाँ पर भी यह त्योहार नौ दिनों के लिए मनाया जाता है. दुर्गाष्टमी के समय यह त्योहार मनाया जाता है. महालय अमावस्या के दिन शुरू होकर यह 9 दिवसीय उत्सव अश्वयुज नवमी पर 'सद्दुला बतुकम्मा' या 'पेड़ा बतुकम्मा' उत्सव पर समाप्त होता है जो दशहरे से दो दिन पहले होता है. आम तौर पर यह उत्सव सितंबर-अक्तूबर में मनाया जाता है. इस त्योहार के बाद 'बोद्देम्मा' त्योहार आता है जो वर्षा ऋतु के अंत का प्रतीक है. जब कि 'बतुकम्मा' शरद ऋतु की शुरुआत का संकेत देता है. नौ दिनों के लिए इसके अलग-अलग नाम हैं -

1) अंगीलीपुला बतुकम्मा 2) अतुकल्ला बतुकम्मा 3) मुद्दपु बतुकम्मा 4) नानाबियम बतुकम्मा 5) अतला बतुकम्मा 6) आलिगीना बतुकम्मा 7) वेपकायाला बतुकम्मा 8) वेन्ना मुदला बतुकम्मा 9) सद्दुला बतुकम्मा

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में इस त्योहार का अर्थ 'जीवन का त्योहार' होता है. यह नारी सम्मान का त्योहार है. इस विशेष अवसर पर महिलाएं/युवतियाँ आभूषण और पारंपरिक वस्त्र पहनती हैं. इस त्योहार को घर में खुशहाली हो, वसंत का आगमन, स्वस्थ जीवन, युवतियों को अच्छा वर मिले आदि भावनाओं के साथ यह त्योहार कई सारी

इच्छा-आकांक्षाओं को लेकर चलता है.

त्योहार में कई सारे फूलों को इकट्ठा किया जाता है. उन की अनेक सतह बनाई जाती हैं. नीचे से इसका आकार बड़ा होता है और ऊपर जाते-जाते इसका आकार छोटा होते जाता है. यह दिखने में बिल्कुल मंदिर के शिखर की तरह नज़र आता है. महिलाएं बड़े उत्साह से आँगन में आकर इसके इर्दगिर्द गोल चक्कर काटते हुए 'बतुकम्मा' गीत गाती हैं. कई सारी महिलाएं एक जगह पर आकर इस प्रकार से यह उत्सव मनाती हैं. इसके अलावा कहीं-कहीं इस समारोह के दौरान संगीत, नृत्य, नाटक तथा विभिन्न प्रकार के मनोरंजक कार्यक्रम होते हैं. प्रकृति को धन्यवाद करने के लिए तरह-तरह के फूलों के साथ इस त्योहार को मनाया जाता है. अंततः फूलों से बनाए हुए 'बतुकम्मा' को तालाब, नदी, कुएं में बहाया जाता है.

जे. चैतन्या कुमार
क्षे. का. हैदराबाद, कोटी

सम्मक्का-सारलम्मा (सारक्का) जातरा

सम्मक्का-सारक्का या सम्मक्का-सारलम्मा जातरा (मेला) यह तेलंगाना राज्य का एक प्रमुख जनजातीय मेला है. यह वरंगल से लगभग 110 किलोमीटर दूरी पर स्थित जयशंकर-भूपालपल्ली जिले के ताड़वाई मंडल के मेडारम गाँव में धूम-धाम से मनाया जाता है. देश की कई जनजातियों का विश्वास है कि सम्मक्का-सारक्का अत्यंत शक्तिशाली माताएँ हैं और वे उनकी हमेशा रक्षा करतीं हैं. विविध राज्यों व प्रांतों से लोग मेडारम तक आ कर दुर्गा देवी व काली देवी के रूप में सम्मक्का-सारलम्मा की उपासना करते हैं. यह एशिया का सबसे बडा जनजातीय मेला है इसका आयोजन पूर्ण रूप से जनजातीय रीति-रिवाजों के अनुसार किया जाता है.

12वीं शताब्दी में तत्कालीन करीमनगर जिले के जगतियाल प्रांत के पोलवासा के जनजातीय शासक मेडराजू की इकलौती पुत्री सम्मक्का का विवाह मेडारम के शासक पगिडिद्दा राजू के साथ हुआ. इनको सारलम्मा (सारक्का), नागुलम्मा और जंपन्ना नामक संतानें हुई. सारक्का का विवाह गोविन्दराजू के साथ हुआ. सम्मक्का व पगिडिद्दा राजू, उनके पुत्री सारलम्मा व गोविन्दराजू (दामाद) और उनके पुत्र जंपन्ना व छोटी पुत्री नगुलम्मा मिल कर अपने मेडारम राज्य की देख-भाल करते हुए सभी की प्रशंसा प्राप्त करते गए. सम्मक्का की महिमा उसी समय लोगों ने जानी. वह अपने हाथों से दवाईयां देकर हर तरह की बीमारियों का इलाज करती थी. परंतु उस नगरी में पानी की समस्या थी. घना जंगल व पहाड़ी प्रांत होने के पश्चात, अकाल पड़ने पर वहाँ पीने का पानी तक नहीं मिलता था.

ऐसे समय, राज्य विस्तार की आकांक्षा से काकतिया नरेश प्रथम प्रतापरुद्र ने पोलवासा पर आक्रमण किया. उनके आक्रमण से मेडराजू अज्ञातवास में चला गया. उसके पश्चात, मेडारम के आदिवासियों के शासक पगिडिद्दा राजू काकतिया सामंत के रूप में रहने लगे. किन्तु एक बार जब अकाल के कारण काकतिया नरेश को पगिडिद्दा राजू कर देने में विफल हुए, तब प्रथम प्रतापरुद्र ने अपने महामंत्री युगंधर के साथ माघ पूर्णिमा के दिन मेडारम पर आक्रमण कर दिया.

अपनी मातृभूमि की सुरक्षा हेतु, सांप्रदायिक ढंग से अस्त्र-शस्त्र धारण कर पगिडिद्दा राजू, सारक्का, नागुलम्मा, जंपन्ना, गोविन्दराजू ने अलग-अलग प्रांतों से गोरिल्ला युद्ध का आरंभ कर वीरता का परिचय दिया. परंतु प्रशिक्षित और बहुसंख्यक काकतिया सेना के हाथों, वे लोग पराजित होकर वीरगति को प्राप्त हुए. जंपन्ना समपेट्ट्रा नहर में जल समाधि लेते हैं. तभी से समपेट्ट्रा वागु (छोटी नहर) जंपन्ना वागु के नाम से जानी जाती है. इन घटनाओं से क्रोधित सम्मक्का काकतिया सेना पर चंडी का रूप लेकर टूट पड़ती है और उनकी सेना को पराजित करने लगती है. राजा प्रतापरुद्र भी सम्मक्का के युद्ध कौशल को देख आश्चर्य चकित रह जाते हैं. सम्मक्का की एक तलवार की धार से दसों सैनिकों की मृत्यु हो रही थी. सम्मक्का को परास्त करने का उन्हें कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था. तब धोखे से काकतिया सेना सम्मक्का को पीछे से वार कर घायल कर देती है. घायल अवस्था में सम्मक्का युद्ध भूमि से चिलुकल गुट्टा (चिलुकल पहाड़) की ओर जाती हुई अदृश्य हो जाती है. इस तरह सम्मक्का, सारक्का, जंपन्ना की दुखद मृत्यु हो जाती है. सम्मक्का को खोजने गए आदिवासियों को उस प्रांत में हल्दी, कुमकुम की भरिणी मिली. उसी को सम्मक्का के रूप में मानकर हर दो वर्षों में एक बार माघ पूर्णिमा के दिन सम्मक्का-सारलम्मा जातरा, बड़े धूम-धाम से मनायी जाती है.

जातरा के पहले दिन कन्नेपल्ली नामक जंगल से सरलम्मा की सवारी लाई जाती है. दूसरे दिन चिलुकलगुट्टा नामक पहाड़ से भरिणी के रूप में सम्मक्का की सवारी आती है. इनके साथ-साथ पगिडिद्दा राजू और जम्पन्ना की भी सवारी लायी जाती है. करोड़ों भक्तजन इस मेले में भाग लेते हैं. इसलिए इसे तेलंगाना का 'कुंभ मेला' कहा जाता है. तीसरे दिन दोनों माताओं को आसन पर प्रतिष्ठित कर सम्मक्का परिवार के अन्य परिजनों, को भी आसन के पास प्रतिष्ठित किया जाता है. चौथे दिन देवियों का आह्वान कर दोनों को युद्ध प्रांत की ओर ले जाया जाता है. सभी भक्तजन अपनी-अपनी मनोकामना पूरी होने पर गुड़ को ही सोना मान कर श्रद्धानुसार माताओं को चढ़ावा चढ़ाते है. इस मेले का इतिहास लगभग नौ सौ वर्ष पुराना है. वर्ष, दर वर्ष भक्तों की संख्या और मेलों का वैभव बढ़ता ही जा रहा है. यह जातरा अपने आपको देश के प्रति समर्पित करने से देवता के समान बनने का संदेश देती है तथा देश की सुरक्षा के लिए मर-मिटने की प्रतिबद्धता दर्शाती है. तेलंगाना राज्य की जनजातीय संस्कृति का यह एक अद्भुत उदाहरण है जो अब सभी वर्गों में और देश के कई राज्यों में फैल चुका है.

वेलिदे नरसिम्ह मूर्ति
क्षे.का.वरंगल

तेलंगाना की भाषायी यात्रा

तेलंगाना भारत के आंध्र प्रदेश राज्य से अलग होकर बना भारत का 29वां राज्य है. हैदराबाद को दस साल के लिए तेलंगाना और आंध्र प्रदेश की संयुक्त राजधानी बनाया गया है. यह परतंत्र भारत के हैदराबाद नामक रजवाड़े के तेलुगुभाषी क्षेत्रों से मिलकर बना है. तेलंगाना शब्द का अर्थ है - 'तेलुगूभाषियों की भूमि'. तेलंगाना के 76% लोग तेलुगू बोलते है. 12% लोग उर्दू तथा 12% लोग अन्य भाषाएँ बोलते है.

2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 82 मिलियन वक्ताओं के साथ तेलुगू भारत में सबसे अधिक देशी वक्ताओं के साथ चौथे स्थान पर है. यह द्रविड़ भाषा परिवार की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली सदस्य भाषा है. 29 अगस्त को तेलुगू भाषा दिवस भी मनाया जाता है. ऐसा कहा जाता है कि तेलुगू भाषा के लेखक गिदगु वेंकट राममूर्ति की जयंती के मौके पर यह दिवस धूमधाम से मनाया जाता है. तेलुगू दिवस को विशेष रूप से इसलिए मनाया जाता है क्योंकि यह आज के युवाओं के बीच लोकप्रिय हो, वैसे तेलुगू भाषा को 'द इटालियन ऑफ द ईस्ट 'भी कहा जाता है. निकोलो दी कोंटी (1395-1469) एक इतालवी व्यापारी और खोजकर्ता थे, जिन्होंनें भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया की यात्रा की. भारत में उन्होंनें 1420 से पहले डेक्कन की राजधानी विजयनगर का दौरा किया और कई महीनों तक रहे. मूल भाषा से परिचित होने के कारण उन्होंनें तेलुगू भाषा को संदर्भित करने के लिए 'इटालियन ऑफ द ईस्ट 'का वाक्यांश गढ़ा, जिसमें उन्होंनें पाया कि इतालवी के समान स्वरों के साथ समाप्त होने वाले शब्द थे. इस प्रकार तेलुगू को पूर्व का इतालवी कहा जाता है क्योंकि प्रत्येक शब्द स्वर ध्वनि के साथ समाप्त होता है. कुछ उपनामों को देखा जाये तो ये आपको सही सा प्रतीत होता दिखाई देगा, जैसे-

उपनाम : इतालवी-तेलुगू, मूसेट्टी-मुथमसेटी, मनसिनी-मालिनी, बेनेवेंटी-वेलिवेंटी, बोनी-बोइनी, गेल्ली-गैलिक, माजांती-चेगंती, नप्पी-अप्पी

भाषा का इतिहास व साहित्य - उद्गम बोली व लिपि : तेलुगू का साहित्य अत्यंत समृद्ध एवं प्राचीन है. इसमें काव्य, उपन्यास, नाटक, लघुकथाएँ तथा पुराण आते हैं. तेलुगू साहित्य की परंपरा 11वीं शताब्दी के आरंभिक काल से शुरू होती है जब महाभारत का संस्कृत से नन्नय्य द्वारा तेलुगू में अनुवाद किया गया. विजयनगर साम्राज्य के समय यह पल्लवित पुष्पित हुई. तेलुगू शब्द का मूल रूप संस्कृत में त्रिलिंग है. इसका मतलब यह है कि आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम के मल्लिकार्जुन लिंग, कालेश्वर और द्राक्षाराम के शिवलिंग से है. इसे त्रिलिंग देश भी कहा जाता है क्योंकि यह देश इन तीन सीमाओं से घिरा हुआ है और इसलिए यहाँ की भाषा त्रिलिंग (तेलुगू) कही जाती है. कहा जाता है कि तेलुगू में तेने का मतलब 'शहद हो' होता है और इसी वजह से इसका नाम तेलुगू है.

तेलुगू लिपि, ब्राह्मी से उत्पन्न एक भारतीय लिपि है जो तेलुगू भाषा लिखने के लिए प्रयुक्त होती है. अक्षरों के रूप और संयुक्ताक्षर में ये अपने पश्चिमी पड़ोसी कन्नड़ लिपि से बहुत मेल खाती है. आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले के भट्टीप्रोलू में 400 ईसा पूर्व और 100 ईसा पूर्व के बीच के कुछ तेलुगू शब्दों के प्राकृत शिलालेख मिले हैं. तेलुगू का शब्दकोश संस्कृत के व्यापक प्रभाव को दर्शाता है जो कम-से-कम 1000 साल पुराना है. यह अनुमान लगाया गया है कि तेलुगू के 80% शब्दकोश संस्कृत से प्राप्त हुए है. इंडोलोजिस्ट डेविड शूलमेन कहते हैं कि 'तेलुगू ने संस्कृत को पूरी तरह से निगल लिया होगा, जैसा कि नन्नया से पहले भी कहा था वह आगे कहते है कि हर संस्कृत शब्द संभावित रूप से एक तेलुगू शब्द है और यह कि तेलुगू भाषण और साहित्यिक ग्रंथों को विशाल डिग्री के लिए संस्कृतकृत किया गया है. तेलुगू की शब्दावली विशेष रूप से तेलंगाना की, फारसी, अरबी उधारों का समूह है, जिसे तेलुगू स्वर विज्ञान के अनुरूप संशोधित किया गया है. तेलुगू की सात भिन्न क्षेत्रीय बोलियाँ तथा तीन सामाजिक

बोलियाँ: ब्राह्मण, अब्राह्मण और हरिजन हैं. औपचारिक या साहित्यिक भाषा बोलियों से भिन्न है. इस स्थिति को जनद्विभाषिता भी कहा जाता है. अन्य द्रविड़ भाषाओं की भांति तेलुगू में भी कई मूर्धन्य व्यंजन हैं. उदाहरण के लिए त, द और न तालू पर मुड़ी हुई जिव्हा के स्पर्श से उच्चरित है और यह प्रत्ययों के माध्यम से कारक, वचन, पुरुष तथा काल जैसे व्याकरण के वर्गीकरण को दर्शाता है.

तेलुगू की बोलियाँ है बेराड, दसारी, डूमारा, गोलारी, कामठी, कोमताओ, कोंडा- रेड्डी. सालवारी, तेलंगाना, वारंगल, महबूबनगर (पलामुरु) गड़वाल (रायलसीमा मिश्रण) नारायण पेटा (कन्नड और मराठी प्रभाव) विजयवाड़ा, वडागाँव, श्रीकाकुलम, विशाखापटनम, तोरपु (पूर्व) गोदावरी, पश्चिम (गोदावरी), कंडुला. रायलसीमा, नेल्लोरु, प्रकाशम, गुंटूरु, तिरुपति, वडारी और यानदी (येनादी). मानक तेलुगू को अक्सर शुद्ध तेलुगू कहा जाता है.

तेलुगू साहित्य तेलुगू भाषा में लिखे गए कार्यों का संग्रह है. इसमें कविताएं, लघु कथाएँ, उपन्यास, नाटक और गीत के बोल आदि शामिल हैं. कुछ संकेत यह बताते हैं कि तेलुगू साहित्य कम-से-कम पहली सहस्त्राब्दी के मध्य का है, पहली मौजूदा रचनाएँ 11वीं शताब्दी से है जब महाभारत का पहली बार संस्कृत से तेलुगू में नन्नया द्वारा अनुवाद किया गया था. विजय नगर के राजा कवि कृष्णदेवराय के संरक्षण में भाषा ने एक स्वर्ण युग का अनुभव किया.

प्रारम्भिक तेलुगू लेखकों के बारे में जानकारी के लिए विभिन्न स्त्रोत उपलब्ध हैं. इनमें से उनकी कविताओं की प्रस्तावनाएँ हैं, जो संस्कृत मॉडल का पालन करते हुए लेखक का संक्षिप्त विवरण देते हुए, राजा का इतिहास जिसे पुस्तक समर्पित है और उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की कालानुक्रमिक सूची है. इसके अलावा, ऐतिहासिक जानकारी उन शिलालेखों से उपलब्ध है जिन्हें कविताओं से जोड़ा जा सकता है. ऐसे कई व्याकरण, ग्रंथ और संकलन हैं जो दृष्टांत श्लोक प्रदान करते हैं और कवियों के जीवन और उनके द्वारा पालन की जाने वाली परम्पराओं के बारे में भी जानकारी प्रदान करते है.

तेलुगू साहित्य का विभाजन प्रमुख रूप से चार कालों में किया गया है -

प्रारम्भिक तेलुगू साहित्य मुख्य रूप से विषय वस्तु में धार्मिक है. कवियों और विद्वानों ने अपनी अधिकांश सामग्री को रामायण, महाभारत, भगवत और पुराणों जैसे महाकाव्यों का अनुवाद करने में अपना अधिकांश समय बिताया. सोलहवीं शताब्दी के बाद इसे पुराणों के दुर्लभ ज्ञात प्रसंग तेलुगू - भाषा काव्य की परंपरा का आधार बने. अठारहवीं शताब्दी में परिणय, कल्याण और विवाह शीर्षक के तहत नायकों के विवाह लोकप्रिय हुए. धार्मिक साहित्य में धर्म के संस्थापकों की आत्मकथाएँ, उनकी शिक्षाएँ और साथ ही टिप्पणियाँ शामिल थी. पारंपरिक हिंदू ज्ञान प्रणाली जैसे ज्योतिष, कानून, व्याकरण, बैले, नैतिक सूत्र और हिन्दू देवताओं के लिए भक्ति-भजन तेलुगू साहित्य के अधिक लोकप्रिय कार्यों की विशेषताएँ है.

1 पुराणकाल (1001 से 1400 ई. तक) - किसी भी भाषा के साहित्य का आरंभ लिपि के पूर्व ही गीतों के रूप में होता है. गीत, साहित्य की तरह स्थायी नहीं होते. ईसा से 800 वर्ष पूर्व तेलुगू लिपि का प्रादुर्भाव माना गया है. लेकिन उस काल का साहित्य लिपिबद्ध नहीं है. उसके पश्चात शिलालेखों में कुछ तेलुगू साहित्य पाया जाता है, इसके पूर्व गीत साहित्य के प्रचलन होने का अनुमान किया जा सकता है. तेलुगू का लिपिबद्ध साहित्य ई सन 11वीं शताब्दी के आरंभ से पाया जाता है.

2 काव्य काल (1400 से 1700 ई. तक)

3 हास काल (1650 से 1900 ई. तक)

4 आधुनिक काल (1850 ई. से आगे)

तेलुगू प्रकाशन : तेलुगू भाषा में मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्र-पत्रिकाएँ काफी संख्या में प्रकाशित होती हैं. मासिक पत्रों में प्रथम पत्रिका 'शारदा' थी. भारती का आरंभ 1924 ई. में हुआ. काशीनथुनी नागेश्वर राव इस पत्रिका के संस्थापक थे. उस कांग्रेसी नेता तथा साहित्य सेवी के औदार्य से कई साहित्य लेखक, विद्यार्थी और साहित्यिक संस्थाएं पली हैं. भारती के अलावा सखी, उषा, वीणा, उदायिनी और जयंती आदि तेलुगू मासिक पत्रिकाएँ हैं. साप्ताहिक पत्रिकाओं में कृष्णा पत्रिका प्रमुख हैं.

साहित्यिक गतिविधियों के कारण तेलुगू भाषा और साहित्य का भविष्य उज्ज्वल एवं विकासोन्मुख दिखाई देता है.

वी अरुण
क्षे का पंजागुट्टा, हैदराबाद

तेलंगाना की कला एवं हस्तशिल्प

तेलंगाना राज्य एक धन्य भूमि है, जो जीवंत कला और शिल्प से संपन्न है. कहा जाता है कि तेलंगाना में 100 से अधिक कला और शिल्प जीवंत हैं. कई राजाओं और राजवंशों के संरक्षण ने इस प्रदेश में विभिन्न संस्कृतियों का एक अनूठा संश्लेषण स्थापित किया है, जिसके कारण तेलंगाना राज्य में एक अनूठी कला और शिल्प परंपरा का विकास में हुआ है. तेलंगाना रचनात्मकता का भंडार है. विभिन्न माध्यमों में कलाकृतियाँ, गहरे रंगों का प्रयोग और अनोखी शैली से यहाँ की कलाकृतियों बहुत ही अनूठे और लोकप्रिय बने हैं.

पेम्बर्थी धातु शिल्प - तेलंगाना राज्य के वारंगल जिले के पेम्बार्थी में बनने वाला एक लोकप्रिय धातु हस्तशिल्प है, जो उत्कृष्ट पर्ण धातु कला के लिए सुप्रसिद्ध है. यहां बनाई गई जटिल पीतल की पर्ण धातु की नक्काशी और कलाकृतियों का इतिहास लगभग 800 से अधिक वर्षों का है. पेम्बार्थी के धातु कारीगरों को विश्वकर्मा कहा जाता है. हिंदू मंदिरों में मूर्तियों और रथों को इस पर्णधातु कला से सजाया जाता था. मुसलमान शासन के आगमन के साथ इस कला ने दोनों संस्कृतियों को आत्मसात किया. सुपारी की पेटी, पानदान, इत्रदान, झूमर, फूलदान, विशेष पट्टिकाएं और स्मृति चिह्न जैसी उपयोगी वस्तुएं भी तैयार किए जा रहे हैं. इसे प्रतिष्ठित भौगोलिक संकेत (जीआई टैक) प्राप्त हुआ है.

चेरियाल पट्ट चित्र - वर्तमान में ज्यादातर हैदराबाद में बनाया गया है. चेरियाल पट्ट चित्र नक्काशी कला का एक लोकप्रिय और संशोधित संस्करण है, जिसे स्थानीय रूपांकनों में अत्यधिक समृद्ध माना जाता है. स्क्रॉल में पहले स्थानीय लोक नायकों के कारनामों को दर्शाया जाता था. काकी पडगोलु नामक गाथागीत समुदाय, जो संगीत और नृत्य के साथ, इन पट्ट चित्रों को प्रदर्शित करते हैं, को इस कला रूप का एक अविभाज्य हिस्सा माना जाता है. पट्ट चित्र एक फिल्म रोल की तरह होते हैं, जो कहानी के आधार पर लगभग तीन फीट चौड़ाई और लगभग 40 से 45 फीट लंबाई के होते हैं. अब इनके छोटे संस्करण तैयार किये जा रहे हैं जिन्हें आधुनिक घरों की दीवारों पर सजाया सकता है. चेरियाल पट्ट चित्र को वर्ष 2007 में भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग भी प्राप्त हुआ.

निर्मल चित्रकारी और खिलौने - 'निर्मल उद्योग' में निर्मल पेंटिंग और हस्तशिल्प शामिल हैं. यह कला और शिल्प पूरे देश में ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी लोकप्रिय है. निर्मल में रहने वाले शिल्पकारों के कला और शिल्प समुदाय को 'नक्काश' भी कहा जाता है. यह शहर निर्मल पेंटिंग्स और खिलौनों के लिए काफी मशहूर है. निर्मल कला 400 साल पुरानी समृद्ध परंपरा है जिसमें नरम लकड़ी के खिलौने और आकर्षक पेंटिंग के साथ-साथ फर्नीचर बक्से, कटोरे, बड़े पर्दे, ट्रे, खिलौने और चित्र बनाते हैं. शील्ड और कॉर्पोरेट उपहार, नेम प्लेट, दरवाजे, दीवार की सजावट आदि पर भी चित्र बनाएं जाते हैं. निर्मल चित्रों को स्मृति चिन्ह के रूप में उपहार में दिया जाता है. निर्मल कलाकृतियां कई दशकों से लोकप्रिय हैं और तेलंगाना सरकार इनके लिए वैश्विक पहचान हासिल करने के लिए सभी प्रयास कर रही है.

बिदरी शिल्प - कर्नाटक राज्य में बीदर और तेलंगाना में हैदराबाद भारत में बिदरी कारीगरी के लोकप्रिय केंद्र हैं. धातु पर उकेरी गई चांदी की इस अनूठी कला ने तीक्ष्ण जड़ाई कला के कारण कलाप्रेमियों को मंत्रमुग्ध किया है. बिदरी कलाकृतियों को भारत का महत्वपूर्ण हस्तशिल्प निर्यात वस्तु माना जाता है. फारसी और अरबी संस्कृतियों के मिश्रण के कारण इसका रूप विकसित हुआ और स्थानीय शैली के साथ संलयन के बाद, इसकी अपनी एक नई और अनूठी शैली बनी. हैदराबाद के निज़ाम ने हैदराबाद राज्य में इस कला को बढ़ावा दिया. बिदरी कलाकृतियां चमकदार काले रंग की होती हैं, जिनमें चांदी की शानदार जड़ाई होती है. बिदरी कलाकार फूल, पत्ते और ज्यामितीय डिजाइन, पौधे, मानव आकृति आदि जैसे डिजाइन बनाते हैं. कुछ देशों में फारसी गुलाब के डिजाइन और अरबी लिपि में पवित्र कुरान के अंशों की भी बहुत मांग है. पानदान, हुक्का और फूलदान के साथ-साथ कटोरे, आभूषण बक्से, झुमके, ट्रे और अन्य गहने और सजावट की वस्तुएं भी बनायी जा रही हैं. इस मूल कला रूप ने भौगोलिक संकेत (जीआई) रजिस्ट्री भी प्राप्त की है.

डोकरा धातु शिल्प - यह तेलंगाना के अदिलाबाद जिले के जैनूर मंडल में प्रचलित एक आदिवासी धातु शिल्प है. मोम की ढलाई की

तकनीक भारत में 4000 से अधिक वर्षों से प्रचलित है और आज भी इसका उपयोग इन शिल्पकारों द्वारा किया जाता है. ये डोकरा कलाकृतियां मुख्य रूप से पीतल से बनती हैं और अत्यधिक अनूठी हैं. इनमें टुकड़ों में किसी भी प्रकार का जोड़ नहीं होता है. यह पूरी तरह दस्तकारी में बनने वाला हस्तशिल्प है. मोम की ढलाई तकनीक में मोल्ड का उपयोग केवल एक बार ही किया जाता है. कलाकृति बन जाने के बाद यह मोल्ड टूट जाता है, अत: इस मोल्ड का उपयोग करते हुए दूसरी कलाकृति नहीं बनाई जा सकती. आदिलाबाद जिले में लगभग 50 परिवार ऐसे हैं जो इस श्रमसाध्य और जटिल पुश्तैनी शिल्प में कुशल हैं. डोकरा कला में धातु की मूर्तियां, हाथी, लोक रूपांकन, मोर, घोड़े और घरेलू सामान बनाए जाते हैं. ये कलाकृतियां अपने सौंदर्य और आदिम सादगी के कारण घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में लोकप्रिय है.

चांदी का फिलिग्री - तेलंगाना में करीमनगर क्षेत्र कई उच्च कुशल कलाकारों का घर है, जो फिलीग्री नामक नाजुक शिल्प कौशल का अभ्यास करते हैं. वे चांदी की फिलिग्री की कलाकृतियां और उपयोगी वस्तुएं बनाते हैं यथा - आभूषण, चम्मच, सिगरेट केस, बटन बॉक्स, ऐशट्रे, बटन पिल बॉक्स, पानदान और इत्रदान आदि. वे मयूर, तोते और मछली को शामिल करते हुए विशेष डिजाइन बनाते हैं जो इत्र के कंटेनरों में स्पष्ट रूप से चित्रित होते हैं. करीमनगर सिल्वर फिलीग्री को 2007 में बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण या भौगोलिक संकेत (जीआई) का दर्जा भी मिला.

हैदराबादी मोती - हैदराबाद मोतियों के शहर के रूप में सदियों से जाना जाता रहा है. सभी आकार, रंग और रूपों के दुर्लभ, चमकदार, मुलायम और टीयर-ड्रॉप मोती के लिए एकल गंतव्य है. चावल के मोतियों की छोटी किस्म से लेकर कीमती बसरा तक, जो एक दुर्लभ किस्म है, हैदराबाद में पाए जा सकते हैं. मोती को प्रकृति के चमत्कारों और समुद्री गहनों में से एक माना जाता है. यह उन पाँच कीमती रत्नों में से एक है जिनका उपयोग 5000 से अधिक वर्षों से अलंकरण के उद्देश्य से किया जाता रहा है. मोतियों को पवित्रता का प्रतीक माना गया है और इसलिए इसे सबसे अधिक मांग वाले गहनों में से एक माना जाता है.

हैदराबाद के पास के चंदनपेट गांव की लगभग पूरी आबादी मोतियों की ड्रिलिंग की नाजुक कला में संलिप्त है. हैदराबाद देश के सबसे बड़े मोती ड्रिलिंग केंद्रों में से एक है और यहाँ मोती के ज़ेवरात बनाने वाले कारीगरों का कौशल विश्वविख्यात है. यहां से मोतियों को विदेशों के बाजारों में भी निर्यात किया जाता है.

बंजारा कढ़ाई तेलंगाना के लंबाडी जाति के बंजारों द्वारा बंजारा कढ़ाई, दर्पण और सुई का काम किया जाता है. बंजारा महिलाएं रंगीन घाघरा, चोली और ओढ़नी पहनती हैं जिसमें बड़े-बड़े शीशे और एप्लिक काम किया होता है. बंजारा कढ़ाई के माध्यम से बनाए गए उत्पादों में महिलाओं के लिए स्कर्ट, सलवार सूट, ब्लाउज आदि के अलावा बैग, पर्स, बेल्ट, कुशन और तकिए के कवर, रजाई और बेड स्प्रेड शामिल हैं. कढ़ाई में चांदी, कौड़ी, पीतल, जानवरों की हड्डियों और सोने का भी उपयोग किया जाता है.

लाक की चूडियां तेलंगाना क्षेत्र लाक की बनी चूड़ियों के लिए प्रसिद्ध है. ये मुख्य रूप से चारमीनार के पास लाड बाजार में पाए जाते हैं, जिसे हैदराबाद में चूड़ियों का बहुत पुराना बाजार माना जाता है. लाड यानी लाक की चूडियों पर कृत्रिम हीरे जड़े होते हैं. चूड़ियों को कम मूल्य के जवाहरात, रंगीन पत्थर और मोतियों से भी जड़ा जाता है. चूड़ी बनाने वालों की मेहनत, रमज़ान आदि त्योहारों और शादियों के मौसम में उभर कर सामने आता है. इन लाक की बहुरंगी चूड़ियों की मांग मध्य पूर्वी देशों में भी है.

आर. पावनी
क्षे.का. सिकंदराबाद

भारत में पारिस्थितिकी संतुलन कायम रखने और वनों के अस्तित्व को चिरस्थाई बनाए रखने के लिए वन प्रबंध में प्रणालीगत दृष्टिकोण अपनाया जाता है. वनाच्छादित क्षेत्र के विस्तार और जलवायु संवर्धन के लिए वन लगाने के नए-नए तरीकों का पता भी लगाया जाता है. भारत में विविधतापूर्ण जलवायु और मिट्टी के अनेक प्रकारों की वजह से अब तक प्राकृतिक वनों के उद्धार के लिए कोई महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक अध्ययन नहीं कराया जा सका है.

पौधे लगाने की बजाय समूचा वन विकसित करने के तेलंगाना सरकार के महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम 'तेलंगानाकु हरित हारम' से वृक्षारोपण और रोपे गए पौधों के संरक्षण के प्रति समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों में उत्साह जगा है. इस बात पर भी विचार किया जा रहा है कि जिन जगहों पर वन भूमि का उपयोग अन्य कार्यों में करने के लिए वनों को काटा जा चुका है, उनमें काटे गए पेड़ों के एवज में पौधे रोपने की बजाय समूचा जंगल विकसित किया जाना चाहिए. इसमें जाने-माने जापानी वनस्पति वैज्ञानिक, पादप पारिस्थितिकीयविद और बंजर भूमि पर प्राकृतिक वनस्पतियां उगाने के विशेषज्ञ अकीरा मियावाकी के सिद्धान्तों को आधार बनाया गया है. उन्होंने सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए निचले इलाकों के मियावाकी पुनर्स्थापना तकनीक का अविष्कार किया. मियावकी का सिद्धान्त मूलत: यह है कि जमीन के छोटे से टुकड़े पर स्थानीय पेड़-पौधों की ऐसी प्रजातियों का सघन रोपण किया जाए जो इस तरह के इलाकों का प्राकृतिक आपदाओं से बचाव कर सके.

उजड़े हुए वन क्षेत्र में प्राकृतिक वन के विकास की एक किफायती विधि को यदाद्री प्राकृतिक वन स्थापना (वाइ.एन.एफ) मॉडल के नाम से जाना जाता है. इस मॉडल के विकास में मियायकी विधि के सिद्धान्तों के साथ स्थानीय तौर-तरीकों व सामग्री का उपयोग किया जाता है.

- प्राकृतिक वनों के विकास के मियावाकी सिद्धान्त
- पेड़-पौधों के बीच कोई निश्चित दूरी नहीं रखनी चाहिए.
- वनीकरण करने से पहले जमीन को उपजाऊ बनाने के प्रयास करने चाहिए.
- बंजर जमीन में पेड़-पौधों, वनस्पतियों, झाड़ियों और वृक्षों का सघन रोपण किया जाना चाहिए. एक हैक्टेयर में 10,000 पौधे लगाए जा सकते हैं.
- स्थानीय प्रजाति की वनस्पतियों के बीज रोपकर वनों को और घना बनाया जा सकता है.
- पौधों को रोपने के बाद कम-से-कम अगले बरसाती मौसम आने तक उनकी सिंचाई की जानी चाहिए.
- खरपतवार की रोकथाम और मिट्टी में वाष्पन से नमी की कमी को दूर करने के लिए पलवार बिछानी चाहिए.
- जमीन को उपजाऊ बनाने के प्रयास में क्षेत्र में किसी भी पेड़ को काटा नहीं जाना चाहिए.
- नालियों में पानी बहाकर सिंचाई करने की बजाए पाइपों के जरिए स्प्रिंकलर विधि से सिंचाई की जानी चाहिए.
- पौधारोपण के बाद अगले बरसाती मौसम के आने तक समय-समय पर निराई करनी चाहिए.
- बरगद जैसे पेड़ों जिनका वितान बहुत बड़ा होता है, नहीं लगाना चाहिए.
- वनीकरण के लिए सभी आकार-प्रकार के पेड़-पौधों की पौध या पौधे उपलब्ध कराए जाने चाहिए ताकि लगाया गया वन तीन स्तरीय प्राकृतिक वनों की तरह दिखे.
- मिट्टी के गुणों का विश्लेषण पहले ही करवा लेना चाहिए ताकि जमीन की उर्वराशक्ति बढ़ाने के लिए बेहतरीन तौर-तरीकों का चुनाव किया जा सके.
- खरपतवार को छोड़कर प्राकृतिक रूप से उगे किसी प्रकार के पेड़ पौधों को क्षेत्र से उखाड़ना नहीं चाहिए.

इस मॉडल में मानव निर्मित वन लगाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मियावाकी सिद्धान्त का उपयोग किया जाता है. इसके लिए अपनायी जाने वाली प्रविधि को पिछले साल हुए वनरोपण के व्यवस्थित रूप से प्रलेखित रिकॉर्ड और नतीजों के आधार पर बताया जा रहा है. शीर्ष सरकारी अधिकारियों और विभिन्न संस्थानों के वैज्ञानिकों ने भी इसका निरीक्षण किया था. इसलिए हरियाली बढ़ाने, जलवायु में सुधार लाने और परती भूमि के विकास में सफल रहा. वाइ.एन.एफ. मॉडल एक क्रान्तिकारी अवधारणा सिद्ध हो सकता है. वाइ.एन.एफ.मॉडल की स्थापना लागत 2 लाख रुपए प्रति एकड़ या 5 लाख रुपए प्रति हैक्टेयर आंकी गई है.

प्रविधि : यदाद्री प्राकृतिक वन स्थापना (वाइ.एन.एफ) मॉडल के पीछे बुनियादी सिद्धान्त छोटे से क्षेत्र में उच्च घनत्व वृक्षारोपण की अवधारणा काम करती है. इसमें पौधों के बीच कोई निश्चित दूरी नहीं रखी जाती और प्रति एकड़ रोपे जाने वाले पौधों की संख्या 10,000 तक हो सकती है. इस मॉडल की सफलता विभिन्न घटनाओं के अनुक्रम जैसे, स्थान का चयन और विकास, मिट्टी की उर्वराशक्ति का विकास, रोपे जाने वाली प्रजातियों के पौधों का चयन, गड्ढे का आकार, रोपण का तरीका, जैव उर्वरकों (आर्गेनिक बायो-फर्टिलाइजर) का उपयोग, पौधारोपण के बाद प्रबंधन तथा सिंचाई कार्यक्रम पर निर्भर करती है.

स्थान का सीमांकन और सफाई : इलाके की हदबंदी और उसमें उगे वृक्षों को छोड़कर उसे वहाँ उगी सभी अवांछित वनस्पतियों से मुक्त कराना बहुत जरूरी है. सीमांकन के बाद बायोमास का मात्रात्मक आकलन और वनीकरण वाले क्षेत्र के लिए पौधों की आवश्यकता का आकलन किया जाता है.

अभिषेक कुमार
माधापुर शाखा
क्षे.का.हैदराबाद-सैफाबाद

"खेलने कूदने का लो संकल्प, स्वस्थ रहने का यही विकल्प"

जी हाँ, यही कुछ पंक्तियाँ हैं जिन्हें आज सभी सार्थक करते दिखाई पड़ते हैं और अपनी सेहत को किसी-न-किसी माध्यम से सुधारने में लगे हुए है. सफल और सुखद भविष्य के लिए मनुष्य का स्वस्थ और ऊर्जावान होना अति आवश्यक है. खेलों का मानव जीवन में बहुत महत्व है क्योंकि खेलों से इंसान का न सिर्फ शारीरिक परंतु मानसिक, सामाजिक विकास भी होता है. प्राचीन काल से ही लोग मनोरंजन के लिए तरह-तरह के खेल खेला करते थे. खेल हमारी शिक्षण पद्धति का एक अंग है. हैदराबाद में भी खेलों पर बहुत ज़ोर दिया जाता है. यहाँ से कई खेलों में नामचीन खिलाड़ी संबंध रखते हैं. देश में सर्वश्रेष्ठ खेलनीति तैयार करने के लिए आईटी मंत्री के टी रामराव और मंत्री श्री वी श्रीनिवास गौड़ ने कहा कि आगामी खेल नीति देश में सबसे अच्छी होगी और उन्होंने शारीरिक साक्षरता के महत्व पर भी ज़ोर दिया.

2003 में अफ्रीका एशियाई खेलों का आयोजन भारत का दूसरा सबसे बड़ा खेल महोत्सव था. शहर में निर्मित सबसे पुराना स्टेडियम लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम है जो पूर्व में फतेह मैदान के रूप में जाना जाता था. हैदराबाद के जीएमसी बालयोगी एथलेटिक स्टेडियम ने 2003 में एफ्रो एशियाई खेलों की मेजबानी की है जिसमें भारत ने 19 स्वर्ण पदक जीते थे.

यह शहर हॉर्स रेसिंग के लिए भी जाना जाता है. हैदराबाद रेस क्लब जिसे पहले निजाम रेस क्लब के नाम से जाना जाता था, मलकपेट में स्थित है. हैदराबाद रेस क्लब देश भर में डर्बी/जाँकी कार्यक्रम आयोजित करके सब को आकर्षित करता है. डेक्कन डर्बी नियमित तौर पर आयोजित होने वाला एक वार्षिक आयोजन है.

हैदराबाद से अंतरराष्ट्रीय स्तर के उल्लेखनीय खिलाड़ियों में से **क्रिकेट से जुड़ी प्रसिद्ध हस्तियाँ :-**

गुलाम अहमद- 4 जुलाई 1922 को हैदराबाद में जन्मे गुलाम अहमद क्रिकेट के जगत का जाना माना नाम है. वे एक ऑफ स्पिन गेंदबाज थे जिन्होंने टेस्ट क्रिकेट में भारत की कप्तानी भी की थी. उन्होंने 1930-40 से 1958-59 तक हैदराबाद के लिए प्रथम श्रेणी क्रिकेट और 1948-49 से 1958-59 तक भारत के लिए 22 टेस्ट मैच खेले.

अपनी सेवानिवृत्ति के पश्चात उन्होंने कई वर्षों तक बीसीसीआई के सचिव के रूप में भी कार्य किया था. अहमद जी पाकिस्तान के पूर्व कप्तान आसिफ इकबाल और भारतीय टेनिस खिलाड़ी सानिया मिर्जा के चाचा थे. 28 अक्तूबर 1998 को उनकी मृत्यु हैदराबाद में हुई.

शिवलाल यादव - शिवलाल यादव भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी है. इनका जन्म 26 जनवरी 1957 को हैदराबाद, तेलंगाना में हुआ था. यह 1979 से 1987 तक 35 टेस्ट और 7 ओडीआई खेले हैं. यह दाएं हाथ के गेंदबाज के रूप में सन 1979 में टेस्ट मैच क्रिकेट में आए. पहली बार ऑस्ट्रेलिया के साथ खेले और 5 मैचों में 24 विकेट हासिल करने में सफल रहे.

अरशद आयुब - हैदराबाद में जन्मे अरशद आयुब का जन्मदिन 2 अगस्त 1958 को हुआ है. अरशद आयुब भूतपूर्व दाएँ हाथ के स्पिनर क्रिकेट खिलाड़ी हैं, इनके द्वारा 13 टेस्ट मैच एवं 32 ओडीआई 1987 से 1997 तक भारत की तरफ से खेले गये. हैदराबाद में 'अरशद आयुब' के नाम से उनकी क्रिकेट अकादमी भी है. हैदराबाद क्रिकेट एसोसिएशन में उन्होंने अध्यक्ष के रूप में कार्य किया है. अरशद आयुब ने वेस्टइंडीज के खिलाफ वर्ष 1987 में 25 से 29 नवंबर तक दिल्ली में खेले गए टेस्ट मैच में अंतराष्ट्रीय क्रिकेट करियर का आगाज किया था. पाकिस्तान के खिलाफ 21 रन देकर पाँच विकेट लेना, इनका सबसे शानदार प्रदर्शन रहा है.

मोहम्मद अजहरुद्दीन- भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान रह चुके मोहम्मद अजहरुद्दीन का जन्म 8 फरवरी 1963 को हैदराबाद में हुआ था. इन्होंने अपने अंतरराष्ट्रीय टेस्ट कैरियर की शुरुआत 1984-85 में इंग्लैंड के विरुद्ध की थी, इनके द्वारा 99 टेस्ट मैचों में 45.03 की औसत से 6214 रन बनाए गए हैं. इसमें 199 इनका सर्वाधिक व्यक्तिगत स्कोर रहा है. इनकी शिक्षा भी हैदराबाद के आल सेंट्स स्कूल से हुई है. इनके द्वारा 156 कैच पकड़े गए हैं, तथा 103 ओडीआई मैच में कप्तान बन कर जीत हासिल की है. मोहम्मद अजहरुद्दीन को 1986 में 'अर्जुन अवार्ड' और 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया था, जो खेल के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान के सम्मान में दिया गया था. वर्ष 1991 में इन्हें 'विस्डन क्रिकेटर ऑफ द इयर' के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है.

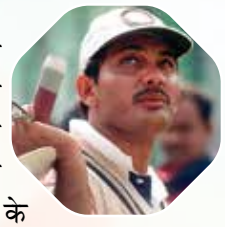

वी वी एस लक्ष्मण- 1974 में जन्मे वी वी एस लक्ष्मण पूर्व भारतीय क्रिकेटर है और वर्तमान में क्रिकेट कमेंटेटर हैं. वह अपने अद्भुत स्ट्रोक खेलने, कई मैच जीतने और मैच बचाने

वाली पारियों के लिए जाने जाते हैं. उन्हें 'पद्मश्री' पुरस्कार एवं भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया था और वे वर्तमान में आईपीएल सन राइजर्स हैदराबाद के मेंटर के रूप में कार्यरत हैं. वी वी एस लक्ष्मण को उनकी शैली के लिए 'वेरी वेरी स्पेशल' के नाम से भी जाना जाता है.

मोहम्मद सिराज - 1994 में हैदराबाद में पैदा हुए भारतीय क्रिकेटर

मोहम्मद सिराज क्रिकेट जगत का एक प्रसिद्ध नाम है, भारतीय क्रिकेट टीम में सक्रिय खिलाड़ी और इंडियन प्रिमियर लीग (2018) में आरसीबी का प्रतिनिधित्व भी कर चुके हैं. उन्होंने 2015-16 में रणजी ट्रॉफी और सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी से अपनी क्रिकेट यात्रा शुरू की थी. बाद में वर्ष 2017 में सनराइजर्स हैदराबाद के लिए चुने गए. वे एक तेज गेंदबाज के रूप में जाने जाते हैं. आईपीएल और 14 से अधिक अंतरराष्ट्रीय मैचों में लगभग 50 मैच उन्होंने खेले हैं.

मिताली राज - 3 दिसंबर 1982 को जन्मी

मिताली राज को कौन नहीं जानता? दुनिया उन्हें 'लेडी सचिन' के नाम से भी पहचानती है. मिताली राज का जन्म जोधपुर राजस्थान में हुआ था, परंतु उनका गृह नगर हैदराबाद है. मिताली राज भारत की ऐसी अकेली खिलाड़ी हैं, जिन्होंने टी 20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 2 हजार या इससे अधिक रन बनाए हैं. वह एकमात्र ऐसी खिलाड़ी हैं जिन्होंने एक से अधिक आईसीसी ओडीआई विश्व कप फ़ाइनल में भारत का नेतृत्व किया है. वर्ष 2003 में उन्हें अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया गया तथा वर्ष 2015 में उन्हें 'पद्मश्री' से भी सम्मानित किया गया.

सिंधुजा रेड्डी - तेलंगाना प्रांत की क्रिकेट खिलाड़ी सिंधुजा रेड्डी को अमेरिका की राष्ट्रीय टीम में जगह मिली है. नलगोंडा के अमंगल

गाँव की रहने वाली रेड्डी अगस्त में स्कॉटलैंड के खिलाफ होने वाले टी 20 विश्व कप क्वालिफाइ में अमेरिका टीम से खेली थी. रेड्डी ने अपनी स्कूली शिक्षा हैदराबाद से पूरी की. वह हैदराबाद की अंडर 19 टीम की कप्तान रह चुकी है.

बैडमिंटन से जुड़ी प्रसिद्ध हस्तियाँ

पुल्लेला गोपीचन्द - पुल्लेला गोपीचन्द

भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी हैं. इनका जन्म 16 नवंबर 1973 को आंध्र प्रदेश के प्रकाशम जिले के नगंदला में हुआ था. पुल्लेला गोपीचन्द का जन्म हैदराबाद में नहीं हुआ परंतु उनकी कॉलेज की पढ़ाई हैदराबाद के ए वी कॉलेज से पूरी हुई है, जहाँ से उन्होंने लोक प्रशासन में स्नातक की डिग्री प्राप्त की है. वह वर्ष 1990और 1991 में भारतीय संयुक्त विश्वविद्यालयों की बैडमिंटन टीम के कप्तान थे. उन्होंने 2001 में चीन के चेंग हाँग को फ़ाइनल में 15-12, 15-6 से हराते हुए आल इंडिया इंग्लैंड ओपन बैडमिंटन चैम्पियनशिप में जीत हासिल की. इस जीत से प्रकाश पादुकोण के बाद इस जीत को हासिल करने वाले वे दूसरे भारतीय बन गए. इन्हें वर्ष 2001 में 'राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार' से सम्मानित किया गया. 2005 में उन्हें 'पद्मश्री' से भी सम्मानित किया गया. अब वे गोपीचन्द बैडमिंटन अकादमी चलाते हैं. वे एक जाने-माने कोच हैं जो 'द्रोणाचार्य पुरस्कार' से सम्मानित हो चुके हैं. साइना नेहवाल को एक सफल खिलाड़ी के रूप में बनाने में उनका बहुत बड़ा योगदान है. 2014 में इन्हें 'पद्म भूषण' से भी सम्मानित किया गया है.

साइना नेहवाल- इस पूर्व विश्व नं 1, बैडमिंटन

एकल खिलाड़ी का पालन-पोषण हैदराबाद में हुआ. इनके नाम पर 24 से अधिक अंतरराष्ट्रीय खिताब हैं. यह विश्व नंबर 1 रैंकिंग हासिल करने वाली एकमात्र भारतीय महिला खिलाड़ी हैं. अपने क्षेत्र में उस्ताद रह चुके पुलेला गोपीचन्द से प्रशिक्षण प्राप्त कर कड़ी मेहनत एवं कठोर परिश्रम से गुजरते हुए उन्होंने सफलतापूर्वक कई बार हैदराबाद और तेलंगाना की जमीं को गौरवान्वित किया है. वैसे तो इनका जन्म 17 मार्च 1990 को हिसार, हरयाणा में हुआ लेकिन इनकी कर्मभूमि हैदराबाद रही. एक महीने में तीन बार लगातार प्रथम वरीयता प्राप्त करने वाली यह अकेली महिला खिलाड़ी हैं. लंदन ओलिम्पिक 2012 में साइना ने इतिहास रचते हुए महिला एकल स्पर्धा में कांस्य पदक हासिल किया है. बैडमिंटन में ऐसा करने वाली वह भारत की पहली खिलाड़ी हैं. 2008 में बीजिंग में आयोजित हुए ओलिम्पिक खेलों में भी वे क्वार्टर फ़ाइनल तक पहुंची थी. वह 'बी डबल्यूएफ़ विश्व कनिष्ठ प्रतियोगिता' जीतने वाली पहली भारतीय है. वर्तमान में वह शीर्ष महिला भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी हैं और भारतीय बैडमिंटन लीग में अवध वैरीयर्स की तरफ से खेलती हैं.

पी वी सिंधु - 1995 में हैदराबाद में जन्मी इस खिलाड़ी का नाम भी बैडमिंटन की दुनिया में गर्व से लिया जाता है. 2019 में विश्व

चैम्पियनशिप में स्वर्ण जीतकर, उन्होंने अपने खाते में कुल 323 जीत हासिल की है. ओलिम्पिक में भारत का प्रतिनिधित्व करना हो, विश्व चैम्पियनशिप, एशियाई खेल, राष्ट्रमंडल युवा खेल या एशियाई जूनियर चैम्पियनशिप हो, पी. वी. सिंधु ने हैदराबाद व भारत का नाम हमेशा रोशन किया है. विश्व वरीयता प्राप्त यह भारतीय महिला बैडमिंटन खिलाड़ी भारत की ओर से ओलिम्पिक खेलों में महिला एकल बैडमिंटन का रजत व कांस्य पदक जीतने वाली पहली खिलाड़ी हैं. इससे पहले वह भारत की नेशनल चैम्पियन भी रह चुकी हैं. सिंधु ने नवंबर 2016 में चीन ओपन का खिताब अपने नाम किया है. ओलिम्पिक रजत पदक विजेता पी वी सिंधु ने बीडबल्यूएफ़ वर्ल्ड चैम्पियनशिप के फ़ाइनल में शानदार जीत दर्ज कर पहली बार इस खिताब को अपने नाम किया है. टोक्यो ओलिम्पिक 2020 में भी पी वी सिंधु ने चीन को हराकर कांस्य पदक अपने नाम किया है.

एन सिक्कि रेड्डी - 18 अगस्त 1993 को कोडाद, तेलंगाना में जन्मी नेल्लकुरी सिक्की रेड्डी भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी हैं जो युगल और मिश्रित युगल में खेलती हैं. 2016 में इन्होंने प्रणव चोपड़ा के साथ मिश्रित युगल स्पर्धा में ब्राज़ील और रूस ओपन ग्रां प्री खिताब जीता. इनकी जोड़ी ने दक्षिण एशियाई खेलों में पदक भी जीता है. इनके भी कोच पुल्लेला गोपीचन्द रहे हैं एवं इन्हें वर्ष 2018 में अर्जुन पुरस्कार प्राप्त हुआ है.

टेनिस खिलाडी

ज्वाला गुट्टा- बैडमिंटन खिलाड़ी ज्वाला गुट्टा का जन्म 7 सितंबर 1983 को वर्धा, महाराष्ट्र में हुआ. उनके पिता एम क्रांति तेलुगू और माँ येलन, चीन से है. उनकी माँ येलन गुट्टा पहली बार 1977 में अपने दादाजी के साथ भारत आई थी. ज्वाला गुट्टा की प्रारम्भिक पढ़ाई हैदराबाद से हुई और यहीं से उन्होंने बैडमिंटन खेलना भी शुरू किया. इन्होंने 13 बार नेशनल बैडमिंटन चैम्पियनशिप जीती है तथा वह भारत की सबसे बेहतरीन डबल्स प्लेयर में से एक हैं. वर्ष 2011 में उन्हें 'अर्जुन' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. राष्ट्र मण्डल खेल, 2017 में इनके द्वारा स्वर्ण पदक जीता गया है.

सानिया मिर्ज़ा- हैदराबाद शहर से ताल्लुक रखने वाली सानिया मिर्जा का जन्म मुंबई, महाराष्ट्र में 15 नवंबर 1986 को हुआ है. सानिया मिर्जा के पिता इमरान मिर्जा खेल संवाददाता थे. कुछ समय के बाद उन्हें हैदराबाद जाना पड़ा जहाँ पारंपरिक शिया खानदान के रूप में सानिया का बचपन गुजरा. निजाम क्लब हैदराबाद में सानिया ने 6 साल की उम्र से टेनिस खेलना शुरू किया. महेश भूपति के पिता और भारत के सफल टेनिस प्लेयर सीके भूपति से सानिया ने अपनी शुरुआती कोचिंग ली. वर्ष 2003 से 2013 तक लगातार एक दशक तक उन्होंने महिला टेनिस संघ के एकल और डबल में शीर्ष भारतीय टेनिस खिलाड़ी के रूप में अपना स्थान बनाए रखा. मात्र 18 वर्ष की आयु में वैश्विक स्तर पर चर्चा पाने वाली इस खिलाड़ी को 2006 में 'पद्मश्री' से भी सम्मानित किया गया है. इस सम्मान को सबसे कम उम्र में हासिल करने वाली यह पहली खिलाड़ी हैं. उन्हें 2006 में अमेरिका में विश्व की टेनिस की दिग्गज हस्तियों के बीच का 'मोस्ट इंप्रेसिव न्यू कमर' अवार्ड प्रदान किया गया था. अक्तूबर 2005 में 'टाइम' पत्रिका के द्वारा सानिया को एशिया के 50 हस्तियों में नामित किया गया. मार्च 2010 में नवभारत टाइम्स समाचार पत्र द्वारा उन्हें भारत की गौरान्वित 33 महिलाओं की सूची में नामित किया गया था. वर्तमान में वह नवगठित राज्य तेलंगाना की ब्रांड एंबेसडर हैं.

हॉकी खिलाडी

मुकेश कुमार - 16 अप्रैल 1970 को हैदराबाद में जन्मे मुकेश कुमार फील्ड हॉकी प्लेयर हैं. इनके द्वारा वर्ष 1992 में पुरुषों की राष्ट्रीय टीम के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्दापण किया गया. मुकेश ने 307 अंतरराष्ट्रीय मैचों में भारत का प्रतिनिधित्व किया और 80 गोल किए. वर्ष 1992 बार्सिलोना ओलंपिक में इन्होंने 4 गोल किए तथा 1996 के अटलांटा ओलंपिक में दो गोल कर पाये और 2000 के सिडनी ओलंपिक में उनके द्वारा 2 गोल किए गए. सन 1995 में उन्हें अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया और 2003 में पद्म श्री से भी सम्मानित किया गया. मुकेश कुमार ने हॉकी खिलाड़ी निधि खिल्लर से शादी की है.

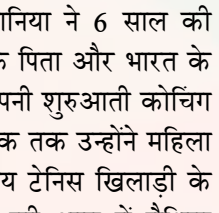

निशानेबाजी

गगन नारंग - इनका जन्म 6 मई 1983 को चेन्नई में हुआ था. इनके पूर्वज हरियाणा के पानीपत जिले में स्थित समल्खा से हैं. बाद में उनके दादा-दादी पानीपत से हैदराबाद जाकर बस गए. इनके माता-पिता का नाम भीमसेन नारंग और अमरजीत है. गगन नारंग का जन्मस्थल चेन्नई है, परंतु उनका लालन-पोषण हैदराबाद में ही हुआ है. भारत के ये राइफल निशानेबाज खिलाड़ी लंदन ओलंपिक्स हेतु पात्रता पाने वाले प्रथम भारतीय है. लंदन 2012 ओलंपिक में हुई पुरुषों की 10 मीटर ऐयर राइफल इवैंट में 701.1 अंकों के साथ आपने कांस्य पदक हासिल किया है .

फुटबाल खिलाडी

सैयद नईमुद्दीन- वर्ष 1944 में जन्मे सैयद नईमुद्दीन फुटबाल खेल में प्रसिद्ध भारतीय नाम है. भारतीय फुटबाल टीम के भूतपूर्व भारतीय कप्तान, सैयद नईमुद्दीन, भारतीय फुटबाल में योगदान के लिए वर्ष 1997 में अर्जुन पुरस्कार व द्रोणाचार्य पुरस्कार जीतने वाले एकमात्र खिलाड़ी हैं. 1964-1971 में भारतीय राष्ट्रीय टीम के लिए खेले और बाद में 1997 में राष्ट्रीय फुटबाल टीम के लिए मुख्य कोच के रूप में नियुक्त भी हुए. इनके द्वारा महिंद्रा यूनाइटेड, ब्रदर्स यूनियन, ढाका मोहम्मदन और बांगलादेश की राष्ट्रीय टीम को कोचिंग दी गयी है. एक खिलाड़ी के रूप में इन्होने 1970 के एशियाई खेलों में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय टीम की कप्तानी की थी.

तेलंगाना की धरती से निकले ये कुछेक खिलाड़ी हैं. इनके अलावा घरेलू स्तर के भी कई खिलाड़ी हैं जो अपनी पहचान बनाने के लिए प्रयासरत हैं. विशेष नीति व योजना के तहत तेलंगाना में खिलाड़ियों के प्रशिक्षण एवं उन्हें दी जानेवाली सुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है. भविष्य में हमें इस धरती से कई नामचीन खिलाड़ी मिलेंगे इसका हमें पूर्ण विश्वास है जो कि भारत का नाम विश्व स्तर पर रोशन करेंगे.

विभोर सैनी
क्षे.का. पंजागुट्टा, हैदराबाद

तेलंगाना के राष्ट्रीय उद्यान व अभयारण्य

पाखल तालाब एवं वन्यजीव अभयारण्य : वारंगल तेलंगाना का एक खूबसूरत वन्यजीव अभयारण्य है, जो यहाँ की पाखल झील के आसपास लगभग 860 वर्ग कि.मी. में फैला है. यह लेक मानव निर्मित है, तथा इस झील का निर्माण 1213 ईस्वी में यहाँ के काकतिया राजवंश ने करवाया था. आप यहाँ वनस्पतियों में बांस के पेड़, टीक और अन्य सदाबहार वृक्षों को देख सकते हैं. वन्यजीवों में आप यहाँ भालू, सांभर, चार सींगों वाला हिरण, नील गाय, काला हिरण, तेंदुआ, लकड़बग्गा, जंगली कुत्ता, लंगूर आदि देखने को मिलते है. जंगली जीवों के अलावा आप यहाँ देशी-विदेशी पक्षियों के साथ प्रवासी पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों को देखने का मजा ले सकते हैं. पाखल वन्यजीव अभयारण्य तेलंगाना राज्य के वारंगल क्षेत्र के अंतर्गत आता है.

एतुर्ननगरम अभयारण्य : वारंगल-तेलंगाना राज्य के मुलुगु जिले के एतुरनगरमगाँव में स्थित यह वन्यजीव अभयारण्य हैदराबाद से 250 किमी दूर स्थित है, तथा एकीकृत आदिवासी विकास शहर है. यह अभयारण्य वारंगल से 100 किमी दूर स्थित है. अभयारण्य महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना की सीमा के पास स्थित है. तेलंगाना के सबसे पुराने अभयारण्यों में से एक है. गोदावरी नदी इस अभयारण्य से होकर गुजरती है. अभयारण्य में सम्मक्का सरलम्मा जतारा का द्विवार्षिक उत्सव आयोजित किया जाता है. दय्याम वागु नामक एक बारहमासी जल स्रोत अभयारण्य को लगभग दो हिस्सों में विभाजित करता है. यहाँ बाघ, तेंदुआ, भेड़िया, गोल्डन सियार, भालू, चौसिंघा, काला हिरण, नील गाय, सांभर, चित्तीदार हिरण, चिंकारा, भारतीय विशाल गिलहरी के साथ मगरमच्छ, अजगर, कोबरा, क्रेट जैसे सरीसृप भी पाये जाते हैं.

पोचारम डैम एवं वन्यजीव अभयारण्य, मेदक : पोचारम वन और वन्यजीव अभयारण्य मेदक से 15 किमी और और हैदराबाद से लगभग 115 कि.मी. की दूरी पर स्थित है. 20वीं शताब्दी की शुरुआत में इसे एक वन्यजीव अभयारण्य के रूप में घोषित किया गया था. निजामाबाद और मेदक जिलों में फैला यह अभयारण्य निजाम का एक पूर्व शिकरगाह था जिसे बाद में अभयारण्य का नाम दिया गया. अभयारण्य का नाम 1916-1922 के बीच अल्लायर नदी पर पोचाराम बांध के निर्माण के बाद बनी पोचारम झील से मिला हुआ है. यह अभयारण्य 130 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है. हरे-भरे जंगल से घिरे इस स्थान में समृद्ध वनस्पति और जीव हैं जो पखों वाले अंगतुकों जैसे ब्राह्मणी बक्स, बार हेडेड गूज़ और ओपन बिल स्टोर्क को आकर्षित करते हैं. यह स्थान एक आदर्श इको टूरिज़म है जहां आगंतुक मृग और हिरण की पाँच प्रजातियों को देखने का आनंद उठा सकते हैं. अभयारण्य में जंगली कुत्ते, तेंदुआ, भेड़िया, सियार, वन बिल्ली, सुस्त भालू, सांभर, नील गाय, चिंकारा, चीतल और चार सिंग वाले मृग हिरण दिखाई देते हैं.

किन्नेरसनी वन्यजीव अभयारण्य, खम्मम : भारत के तेलंगाना राज्य के भद्रादी कोठागुडेम जिले में स्थित एक जंगल है. वन्यजीव अभयारण्य 635.40 कि.मी. के क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें अभयारण्य के बीच घने जंगलों वाले द्वीपों के साथ सुरम्य किन्नरसानी झील है. यह जिला मुख्यालय कोठाकुडेम से 15 कि.मी. और मंदिर टाउन भद्राचलम से 25 कि.मी. दूर है. इस वन्यजीव अभयारण्य में घने झड़ियों और घास मैदानों के साथ मिश्रित जंगल हैं. लुप्तप्राय वनस्पतियों की विविधता के अलावा यह चौसिंघा, सांभर, जंगली सूअर, गौर, चिंकारा, चीतल हाइना, भालू आदि की कई प्रजातियों का घर है. यह क्षेत्र बर्डवाचर्स और फोटोग्राफरों के बीच एक लोकप्रिय जगह के रूप में जाना जाता है.

मृगावानी राष्ट्रीय उद्यान, हैदराबाद : मृगावानी राष्ट्रीय उद्यान तेलंगाना राज्य की राजधानी हैदराबाद में स्थित एक राष्ट्रीय उद्यान है. इसका कुल क्षेत्रफल 3.6 वर्ग कि.मी. (1.4 वर्ग मील) या 1211 एकड़ है. यह मोइनाबाद मण्डल के चिलकुर में एमजीबीएस से 20 कि. मी.दूर स्थित है. यह 600 विभिन्न प्रकार के पौधों एवं लगभग 350 चित्तीदार हिरणों का घर है. जानवरों में भारतीय खरगोश, वन बिल्ली, सिवेट, इंडियन रैट स्नेक, रसेल वाइपर, चीतल और फ्लोवर पिकर यहाँ पाए जाते हैं. 1994 में इसे राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था. पार्क हैदराबाद क्षेत्र के लगभग लुप्त हो रहे वनस्पतियों के संरक्षण का महत्वपूर्ण कार्य करता है.

कासु ब्रह्मानन्द रेड्डी राष्ट्रीय पार्क, हैदराबाद : जुबली हिल्स और बंजारा हिल्स में स्थित एक राष्ट्रीय उद्यान है. पार्क का अनुमानित क्षेत्रफल 390-एकड़ (1.6 वर्ग कि.मी.) है. पूरा पार्क व्यस्त शहर के जीवन और बढ़ते प्रदूषण के स्तर के बीच स्वच्छ पर्यावरण प्रदान करता है. पार्क में पौधों की 600 से अधिक प्रजातियां, पक्षियों की 140 प्रजातियां और तितलियों और सरीसृपों की 30 विभिन्न किस्में हैं. पार्क में अपना घर बनाने वाले कुछ जानवरों में शामिल हैं: पैंगोलिन, छोटा भारतीय सिवेट, मोर, जंगली बिल्ली और साही. इसके अलावा पार्क का नाम बदलकर कासु ब्रह्मानंद रेड्डी नेशनल पार्क कर दिया गया था, जिसमें केवल महल की इमारत को चिरान महल कहा जाता था. परिसर 400 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है. केंद्र से मंजूरी मिलने के बाद आंध्र प्रदेश राज्य सरकार द्वारा 1998 में इसे राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था.

महावीर हरिना वनस्थली राष्ट्रीय उद्यान हैदराबाद : साहेब नगर, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत में स्थित एक हिरण राष्ट्रीय उद्यान है. यह 3605 एकड़ में फैला हुआ है. हैदराबाद शहर के इस सबसे बड़े पार्क

का नाम जैन संत महावीर के नाम पर रखा गया था, जो वर्ष 1975 में उनकी 2500वीं निर्वाण वर्षगांठ के उपलक्ष्य में था. इसे निजाम ने राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना के लिए दान में दिया था. महावीर हरिना वनस्थली, हैदराबाद के बाहरी इलाके में हैदराबाद-विजयवाड़ा रोड पर स्थित है. ब्लैकबक्स (आंध्र प्रदेश का राज्य पशु), साही, पानी पर नज़र रखने वाले, छोटे पंजे वाले चील, भारतीय तालाब के बगुले, बगुले, किंगफिशर, जलकाग और कई अन्य पक्षी प्रजातियां यहाँ पाए जाते हैं.

नेहरू जुलोजिकल पार्क, हैदराबाद : नेहरू जूलॉजिकल पार्क का निर्माण 26 अक्टूबर 1959 को शुरू किया गया था और 6 अक्टूबर 1963 को जनता के लिए खोला गया था. पार्क वन विभाग, तेलंगाना सरकार द्वारा चलाया जाता है और इसका नाम भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के नाम पर रखा गया है. चिड़ियाघर 380 एकड़ (150 हेक्टेयर) में फैला है और 600 एकड़ (240 हेक्टेयर) मीर आलम टैंक के निकट है. चिड़ियाघर में पक्षियों, जानवरों और सरीसृपों की लगभग 100 प्रजातियों को रखा गया है, जिनमें भारतीय गैंडे, एशियाई शेर, बंगाल टाइगर, पैंथर, गौर, भारतीय हाथी, पतला लोरिस, अजगर, साथ ही हिरण, मृग और पक्षी जैसे स्वदेशी जानवर शामिल हैं. 600 एकड़ (240 हेक्टेयर) का मीर आलम टैंक अपने अनूठे बहु धनुषाकार बांध (तटबंध) के साथ सैकड़ों प्रवासी पक्षियों को आकर्षित करता है. चिड़ियाघर में निशाचर घर जानवरों के लिए कृत्रिम रूप से रात और दिन उलट देता है ताकि चिड़ियाघर में आने वाले लोग सक्रिय रहें. इस प्रदर्शनी में चिंपैंजी, जिराफ, फल चमगादड़, पतला लोरिस, धीमी लोरिस, सिवेट, तेंदुआ, बिल्लियाँ, हाथी, खलिहान उल्लू, धब्बेदार लकड़ी के उल्लू, मछली पकड़ने वाले उल्लू और बड़े सींग वाले उल्लू शामिल हैं. यहां एक एक्वेरियम, डिनो पार्क, बटरफ्लाई पार्क और कछुआ घर भी है.

कवाल टाइगर रिजर्व, तेलंगाना : कवाल टाइगर रिजर्व तेलंगाना राज्य में मनचेरियल जिले के जन्नाराम मण्डल में स्थित है. भारत सरकार ने 2012 में कवाल वन्यजीव अभयारण्य को टाइगर रिजर्व घोषित किया था. रिजर्व राज्य के उत्तरी तेलंगाना क्षेत्र का सबसे पुराना अभयारण्य है. प्रचुर मात्रा में वनस्पतियों व जीवों के लिए जाना जाता है. यह अभयारण्य गोदावरी और कदम नदियों के लिए जलग्रहण क्षेत्र है, जो अभयारण्य के दक्षिण की ओर बहती है. इस जगह को 1965 में स्थापित किया गया था और बाद में 1999 में वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम 1972 के तहत इसे एक संरक्षित क्षेत्र के रूप में घोषित किया गया. अप्रैल 2012 में बाघ अभयारण्य के रूप में सूचीबद्ध किया गया. इसके तहत शिकार आबादी के रूप में 150 चीतलों को भी छोडने के साथ आवास विकास बनाया जाता है. यह सह्याद्रि पहाड़ियों से लेकर महाराष्ट्र के ताडोबा जंगल तक फैला हुआ है. यह 893 किमी (345 वर्ग मील) लगभग 220800 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है. यह राज्य के सबसे समृद्ध सागौन के जंगलों में से एक है, गोदावरी नदी भी इस क्षेत्र से होकर गुजरती है. बाघ, तेंदुआ, गौर, चीतल, सांभर, नील गाय, भौंकने वाले हिरण, चौसिंघा, मोर और सुस्त भालू यहाँ दिखाई पड़ जाते हैं. यहाँ लगभग 20 बाघ रहते हैं.

नागार्जुनसागर श्रीसैलम टाइगर रिजर्व : यह भारत का सबसे बड़ा टाइगर रिजर्व है. प्रकाशम, गुंटूर, नलगोंडा और महबूबनगर जिले में यह फैला हुआ है. इस टाइगर रिजर्व का कुल क्षेत्रफल 3728 किमी (1439 वर्ग मील) है. इस रिजर्व का मुख्य क्षेत्र 1200 किमी है (460 वर्ग मील) है. श्रीशैलम के जलाशय और मंदिर कई पर्यटकों और तीर्थयात्रियों के लिए प्रमुख आकर्षण है. यह भारत का सबसे बड़ा टाइगर रिजर्व वन है और नल्लामाला वन के अंदर स्थित है.

शमिर्पेट हिरन पार्क, रंगारेड्डी : यह राष्ट्रीय उद्यान हैदराबाद से 24 किमी की दूरी पर स्थित है. यह एक पिकनिक स्पॉट के रूप में भी जाना जाता है इस पार्क की स्थापना भी निज़ाम शासकों के दौर में सन 1971 में की गयी थी. यह पार्क 54 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है जिसमें जानवरों की विभिन्न प्रजातियाँ पायी जाती हैं. काला हिरण और चीतल के अलावा यहाँ भी हिरण की कई प्रजातियों को अपने प्राकृतिक आवास में देखा जा सकता है. यहाँ पर प्रसिद्ध शमीरपेट झील भी है जो इस पार्क में क्षेत्र में आती है. 1971 में निज़ाम शासक से लिये जाने के बाद इस पार्क को वन विभाग को 1975 में दे दिया गया जिसे आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री एम चेन्ना रेड्डी द्वारा उद्घाटित किया गया था. भारत के प्रथम प्रधान मंत्री के नाम पर इसे जवाहर हिरण पार्क भी कहा जाता है.

अलीसागर हिरन पार्क, निज़ामाबाद : अलीसागर पार्क निजामाबाद के पास बहुत ही खूबसूरत स्थान है, यह निजामाबाद जिले से 13 किमी की दूरी पर स्थित है. यह अलीसागर जलाशय के आसपास बनाया गया है. इस जलाशय को निज़ामों द्वारा बनवाया गया था, जो उस समय के शासक थे. अब यह क्षेत्र आम पहाड़ियों और चकाचौंध भरे चमकीले फूलों के बगीचों के बीच फैला हुआ है. इस पार्क की स्थापना 1985 में की गयी थी और इसमें हिरणों की कई प्रजातियाँ पायी जाती हैं. इस पार्क में सबसे लोकप्रिय हिरण के रूप में सुनहरे हिरण को रखा गया है. इस पार्क में ट्रेकिंग और कुछ वाटर स्पोर्ट्स जैसी सुविधाएं भी हैं. इस जगह पर जाने के लिए सबसे अच्छा समय सर्दियों का होता है क्योंकि इस वक्त आप बहुत सारे हिरण एक साथ देख सकते हैं.

मनोज
क्षे.का. पंजागुट्टा, हैदराबाद

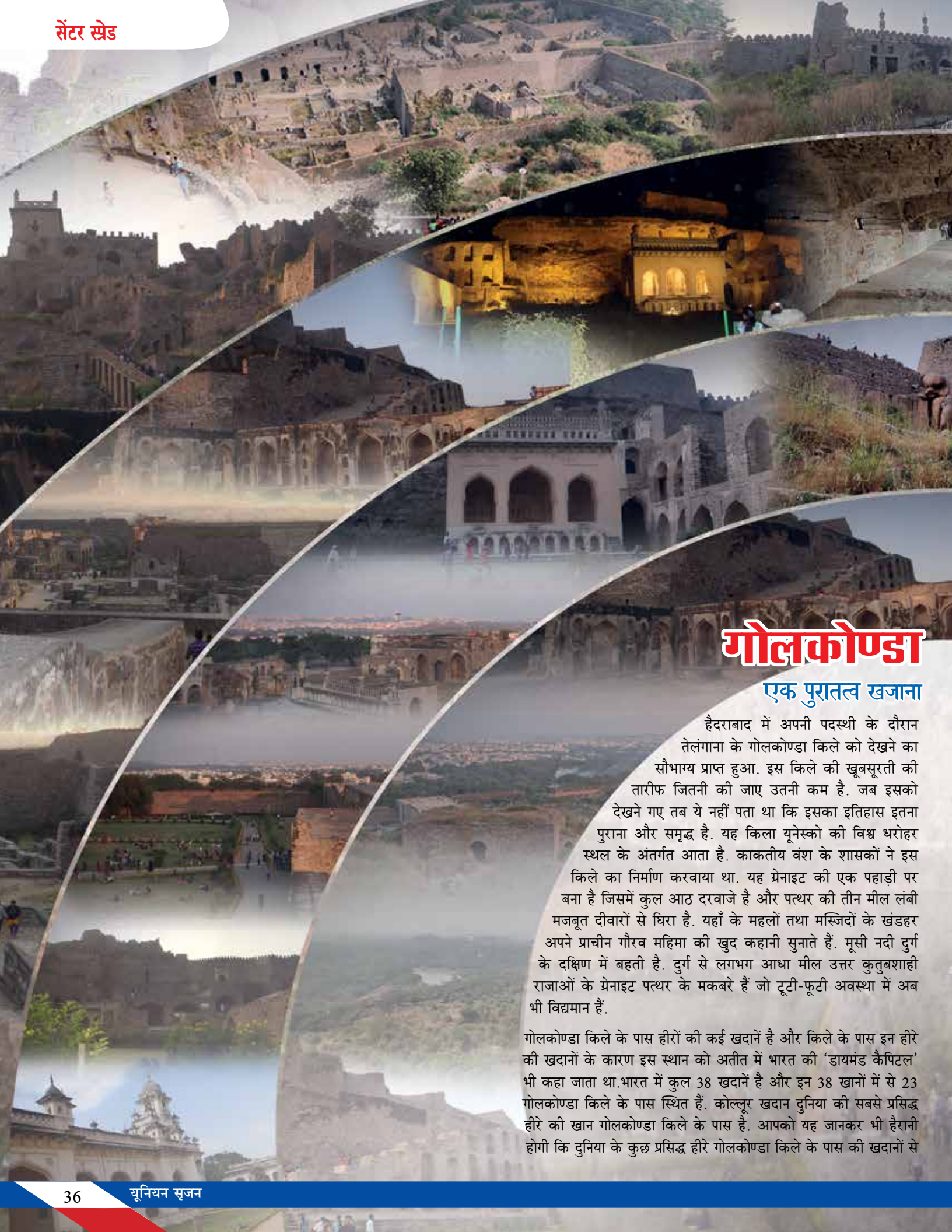

गोलकोण्डा

एक पुरातत्व खजाना

हैदराबाद में अपनी पदस्थी के दौरान तेलंगाना के गोलकोण्डा किले को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. इस किले की खूबसूरती की तारीफ जितनी की जाए उतनी कम है. जब इसको देखने गए तब ये नहीं पता था कि इसका इतिहास इतना पुराना और समृद्ध है. यह किला यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के अंतर्गत आता है. काकतीय वंश के शासकों ने इस किले का निर्माण करवाया था. यह ग्रेनाइट की एक पहाड़ी पर बना है जिसमें कुल आठ दरवाजे है और पत्थर की तीन मील लंबी मजबूत दीवारों से घिरा है. यहाँ के महलों तथा मस्जिदों के खंडहर अपने प्राचीन गौरव महिमा की खुद कहानी सुनाते हैं. मूसी नदी दुर्ग के दक्षिण में बहती है. दुर्ग से लगभग आधा मील उत्तर कुतुबशाही राजाओं के ग्रेनाइट पत्थर के मकबरे हैं जो टूटी-फूटी अवस्था में अब भी विद्यमान हैं.

गोलकोण्डा किले के पास हीरों की कई खदानें है और किले के पास इन हीरे की खदानों के कारण इस स्थान को अतीत में भारत की 'डायमंड कैपिटल' भी कहा जाता था.भारत में कुल 38 खदानें है और इन 38 खानों में से 23 गोलकोण्डा किले के पास स्थित हैं. कोल्लूर खदान दुनिया की सबसे प्रसिद्ध हीरे की खान गोलकोण्डा किले के पास है. आपको यह जानकर भी हैरानी होगी कि दुनिया के कुछ प्रसिद्ध हीरे गोलकोण्डा किले के पास की खदानों से

प्राप्त हुए थे, कोह-ए-नूर हीरा (जो अब यूनाइटेड किंगडम के स्वामित्व में है) इसमें सबसे प्रसिद्ध है.

किले में एक जगह है जिसे 'बाला हिसोर मंडप' के नाम से जाना जाता है. यह स्थान किले का उच्चतम बिन्दु है और प्रवेश द्वार से 1 किमी दूर है. यदि आप प्रवेश द्वार पर ताली बजाते है तो यह बाला हिसोर पवेलियन में स्पष्ट रूप से सुनाई देगी. प्रवेश द्वार इस तरह बनाया गया था कि किले के अंदर के राजघरानों को पता चल सके कि उनके दरवाजे पर कौन आया है.कहा जाता है कि किले में कई गुप्त सुरंगें भी हैं और चार मीनार तक पहुँचने के लिए भी सुरंग है. गोलकोण्डा के ऊपर स्थित श्री जगदंबा महा मंदिर किले के समान ही प्रसिद्ध है. राजा इब्राहिम कुली कुतुब शाह अपनी प्रजा के बीच इतना लोकप्रिय था कि उसे हिंदुओं द्वारा मलकाभिराम कहा जाता था. शाम के समय इस किले की खूबसूरती देखते ही बनती है और ध्वनि प्रकाश शो में आप इसकी पूरी कहानी जान सकते हैं. आइये, इस किले के इतिहास में खो जाइए.

पारुल सौरभ सरवटे
सरल, पंजागुट्टा-हैदराबाद

जनकल्याण और साहित्य को समर्पित

श्री गरिकिपाटि नरसिंहा राव

कवि, प्रवचनकर्ता, साहित्यकार, वक्ता, आलोचक और वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भागवत तथा पुराणों के पंडित और सामाजिक अधिवक्ता जैसी वैविध्यपूर्ण प्रतिभाओं को स्वयं में आत्मसात करनेवाले गरिकिपाटि नरसिंहा राव जी एक बहुमुख प्रतिभा संपन्न सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व हैं. सरल, सरस, छंदबद्ध भाषा में चमत्कारिता पूर्ण कविताओं की रचना करने वाले श्री गरिकिपाटि जी सुपरिचित व्यक्तित्व ही नहीं कईयों के लिए गुरुतुल्य भी हैं. एक ओर अपनी अमोघ धारणाशक्ति से प्रकांड पंडितों को भी मंत्रमुग्ध करने की क्षमता रखने वाले गरिकिपाटि जी अपने सामाजिक और दार्शनिक विचारों और प्रवचनों से जनमानस का मार्गदर्शन करते हैं. व्यवसाय से अध्यापक और प्रवृत्ति से सामाजिक हितवादी श्री गरिकिपाटि जी स्वभाव से सरल और विनम्र व्यक्ति हैं. आपका मानना है कि किसी भी विषय या वस्तु की सार्थकता, मनुष्य की उन्नति में उसकी उपयोगिता से ही सिद्ध होती है, चाहे वह साहित्य हो या विज्ञान या फिर धर्म. आपको कई पुरस्कार, सम्मान और उपाधियां प्राप्त हुई हैं. आपकी साहित्य सेवा के लिए भारत सरकार ने गणतंत्र दिवस पर 'पद्मश्री' उपाधि से सम्मानित करने की घोषणा की है. आप हमारी नेताजी नगर शाखा के ग्राहक हैं. श्री आई यू बी वी एन श्रीनिवास राव, सहायक महाप्रबंधक और श्रीमती गायत्री रवि किरण, संवाददाता, यू. सृजन को आपसे दो बातें करने का सुअवसर प्राप्त हुआ.

प्रश्न : अपने माता-पिता और अपने बचपन के बारे में बताएं?

थाडेपल्लीगुडेम के पास बोडापाडु नामक एक छोटे से गाँव में मेरा जन्म 14 सितंबर 1958 को हुआ. माता का नाम गरिकिपाटि वेंकट रामणम्मा और पिता का नाम गरिकिपाटि सूर्यनारायण है. पिता एक किसान थे. उनके सोलह वर्ष की आयु में दादाजी का देहांत हो गया. एक पारंपरिक ब्राह्मण परिवार से आने के कारण उन्होंने कुछ हद तक हमारे दादाजी से वेद पठन सीखा था. मेरे छह भाई-बहन हैं. हमारे पिता ने हम सभी को पढ़ाया और हमारी बहनों का विवाह अच्छे जमींदारी परिवार में करवाया. उन्हें आडंबर पसंद नहीं था. थोड़े में गुजारा करना, कर्ज से बचना, आय से अधिक खर्च न करना, ऐसे सिद्धांतों का पालन करते थे. मैंने उनसे इस प्रकार का अनुशासन सीखा.

मेरे सभी भाइयों ने स्नातक तक पढ़ाई की. मैंने 'विशेष तेलुगु' में स्नातक किया. बी. एड पूरा करने के बाद स्वप्रयत्न से नौकरी हासिल की. उसमानिया विश्वविद्यालय से तेलुगू में स्नातकोत्तर किया. बाद में तेलुगू विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद मौखिक लोक साहित्य विषय पर मैंने एम.फिल किया. एम. फिल में स्वर्ण पदक प्राप्त किया. उसके बाद मैंने डॉक्टरेट की.

प्रश्न : यह एक ज्ञात तथ्य है कि साहित्य के प्रति रुझान के कारण आपने अपने पुत्रों का नाम तेलुगू के महान साहित्यकार श्री श्री और गुरजाडा रखा. ऐसा क्यों?

जब मुझे बड़े बेटे के जन्म का समाचार मिला, मेरे हाथ में श्री श्री जी की महाप्रस्थानम पुस्तक थी. श्री श्री जी के प्रति मेरी श्रद्धास्वरूप मैंने बेटे का नाम श्री श्री रखा. 1992 में जब हमारे दूसरे बेटे का जन्म हुआ, तो मैंने सोचा था कि अगर लड़की का जन्म हुआ तो बर्मा की नेता आँग सान सूकी के नाम पर गरिकिपाटि सूकी नाम रखेंगे लेकिन लड़का पैदा हुआ. उस समय तेलुगू के महान साहित्यकार गुरजाड अप्पा

राव जी के कन्याशुल्कम् नाटक के शताब्दी समारोह चल रहा था. इसी उपलक्ष्य में मैंने दूसरे बेटे का नाम गुरजाडा रखा. गुरजाडा जी ने साहित्यिक सुधार के साथ विशेष रूप से महिलाओं की दुर्दशा के बारे में बहुत गहराई से विमर्श किया था. समाज का डटकर सामना किया. मुझे समाज की भलाई के लिए साहसपूर्ण कार्य करने वाले बहुत प्रभावित करते हैं और पसंद हैं.

प्रश्न : आपके गुरु कौन हैं? उनके बारे में बताएं?

मैंने अपनी शिक्षा के दौरान गुरुओं से लिखना-पढ़ना सीखा. लेकिन कविता, अवधान कला, आध्यात्मिक शिक्षा में मेरा कोई विशेष गुरु नहीं है. मैं माता सरस्वती को ही अपना गुरु मानता हूँ. एकलव्य की भाँति माता की मूर्ति के सामने ध्यान लगाता हूँ. मैं मानता हूँ कि माता ने मुझे अवधान कला और अध्यात्म से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध करवायी हैं. कौन भेजता था, पता नहीं चलता था, लेकिन किताबें मिलती थीं. आकाशवाणी विजयवाड़ा द्वारा प्रत्येक मंगलवार को 'सरस विनोदिनी समस्यापुराणम्' कार्यक्रम प्रसारित किया जाता था. 1978 से 1988 तक मैंने इस आयोजन में 500 कविताएँ भेजीं. इसमें समस्याएं, दत्तपदि, वर्णन विधाएं शामिल थी. ये अवधान कला के तीन पहलू हैं. जब मैंने शेष 4-5 पहलुओं को सीखना चाहा, तो मुझे तिरुपति वेंकट कवियों का साहित्य, कोप्पारापु कवियों का साहित्य और पिशुपाटि के अवधान पढ़ने का अवसर मिला. ये पुस्तकें मेरे लिए मार्गदर्शक साबित हुईं.

प्रश्न : आप किन पुस्तकों से प्रभावित हुए ?

साहित्य की दृष्टि से अवश्य ही श्री श्री जी का महाप्रस्थान, जिसने मुझे लोगों के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया. आध्यात्मिक रूप से - योगवाशिष्ठं. पोताना जी के भागवतम् ने ईश्वर के बारे में मेरे विचारों को ढाला. लोगों तक अपनी बात पहुंचाने के लिए सरल भाषा का प्रयोग करने की प्रेरणा करुणश्री के साहित्य से मिली. विचारों को प्रकट करते हुए भाषा में जोश और तीव्रता, जाशुआ साहित्य का प्रभाव है. शंकराचार्य जी के साहित्य ने भी मुझे प्रभावित किया. इसलिए

आप मेरी कविता में भक्ति, तर्कवाद, सरल शैली, सच्चाई, जोश और व्यंग्य देख सकते हैं.

मुझे शुरू से ही लयबद्ध कविताओं की रचना करने का शौक है. 1978 से 1987 तक नौकरी करते हुए मैंने स्वयं को आस्तिकता और नास्तिकता के बीच झूलता हुआ पाया. उस दौरान मैंने दयानंद सरस्वती जी के 'सत्यार्थ प्रकाश', श्री श्री जी का 'महाप्रस्थानम्', रंगनायकम्मा जी का साहित्य पढ़ा. मैंने इनके प्रभाव से अपने विचारों पर सवाल उठाना सीखा. मैं पौराणिक कहानियों में दर्शन की भावना को समझने की सीख देता हूँ. अंधविश्वास से कारोबार तो चलते हैं लेकिन आध्यात्मिक उन्नति नहीं होती. बाद में 'गीता मकरंदम' और प्रणवानंद स्वामी जी के व्याख्यान के साथ भगवत् गीता पढ़ने के बाद दुविधा का समाधान हुआ. परिस्थितियों में भी बदलाव आया. मैं 1987-88 में गुंटूर आ गया था, जहाँ अवधान कला, अध्यात्म और साहित्यिक कार्यक्रमों का नियमित आयोजन होता था. महान व्यक्तियों के प्रवचन सुनकर मेरे संदेहों का समाधान मिला. मैंने आशु कविता और अवधान कला का अभ्यास प्रारंभ किया.

प्रश्न : आपको लिखने की प्रेरणा किन बातों से मिलती है? आपकी रचनाओं के मुख्य विषय क्या हैं? आपकी रचनाओं में आपकी पसंदीदा रचना कौन सी है?

अब तक मैं 11189 कविताएँ लिख चुका हूँ. मुझे सीसपद्य छंद पसंद है. मैं अपनी परंपरा के अनुरूप मनुष्य के लिए उपयोगी मुद्दों को संबोधित करने वाले विषय पर जनरंजक भाषा में कविताएं लिखता हूँ. मुझे नए शब्द गढ़ना पसंद है. सामाजिक चेतना मेरी कविताओं का केंद्रीय विषय है. मैंने 1996 में सहस्रावधानम की. इस सहस्रावधानम के लिए काकिनाडा शहर, मेरी जननी, सागर का किनारा और बाईस दिन इस पूरे कार्यक्रम को निहारने वाली वाणी (देवी सरस्वती) साक्षी हैं. (काकीनाडायु साक्षी, कन्नतल्लियु साक्षी, सागरतीरम्मु साक्षी, इरुवदियु रेंडु रोजुलु इंत कथनु वालुचूपुल गमनिंचु वाणी साक्षी.)

राम के प्रति दशरथ को विशेष प्रेम था - इसका अर्थ यह नहीं था कि वे बाकियों को पसंद नहीं करते थे. इसी प्रकार मुझे अपनी सभी रचनाएं पसंद हैं. मेरी रचनाएँ 20 पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हुई हैं. 10 और किताबें जल्द ही आ रही हैं. इनमें से मेरी प्रमुख रचना 'सागरघोषा' है. एक निश्चित योजना के अनुसार इस काव्य की 1116 कविताओं को लिखने में मुझे 2 साल लगे - 1999-2000 में लिखे गए काव्य का

प्रकाशन 2001 में हुआ. इस काव्य की रचना के बाद मुझे काव्य रचना के मामले में पूर्ण संतुष्टि का अनुभव हुआ. इस कविता का दो बार अंग्रेजी में अनुवाद हो चुका है. अब हिंदी में अनुवाद पूरा हो गया है. मैंने सारा शंकर साहित्य पढ़ा. शंकर साहित्य के सारांश को प्रतिपादित करते हुए अद्वैत सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में मैंने सागरघोषा की रचना की. इस काव्य का सारांश है- समस्त विश्व के इतिहास का पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक विषयों का भारतीय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में वर्णन करने वाला काव्य.

प्रश्न : क्या आप वर्तमान में कोई नई रचना कर रहे हैं?

जी नहीं. अब मैं कुछ नहीं लिख रहा हूँ और लिखने का मन भी नहीं है. वर्तमान में जप-तप के प्रति प्रवृत्त हूँ.

प्रश्न : समाज में भाषा का क्या महत्व है? क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भाषा अध्ययन के लिए उचित व्यवस्था उपलब्ध है?

मातृभाषा को बढ़ावा देने के सरकार के प्रयासों की तुलना में लोगों में परिवर्तन का अधिक महत्व है. हमें बदलना होगा. हम बाहर अंग्रेजी बोलते ही हैं, घर पर भी अंग्रेजी क्यों बोलते हैं? आइए, हम अपने बच्चों में अपनी मातृभाषा में संवाद करने की आदत डालें. आइए, हम उन्हें अपनी कविताएँ सिखाएँ. यह काम 5 साल की आयु से पहले प्रारंभ हो जाना चाहिए. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा को प्राथमिकता दी गई है. केंद्र सरकार की योजना में आठवीं तक मातृभाषा में पढ़ाई होनी चाहिए. इंजीनियरिंग में भी भी स्थानीय भाषा के माध्यम से पढ़ाई करने की व्यवस्था की गई है. इसी तरह धीरे-धीरे यह व्यवस्था सभी कक्षाओं में प्रारंभ होने की प्रबल संभावना दिख रही है.

प्रश्न : अवधान कला क्या है? समस्यापूरणम् क्या है? नियम क्या हैं? क्या यह प्रक्रिया तेलुगू के अलावा किसी अन्य भाषा में उपलब्ध है?

अवधानम् नामक प्रक्रिया तेलुगू भाषा की विशेष साहित्यिक प्रक्रिया है. 16वीं शताब्दी में कृष्णदेव राय के शासनकाल के दौरान भट्ट मूर्ति जी ने इसे प्रारंभ किया था. अवधानम् का स्रोत समस्यापूरणम् है - यानि समस्या का समाधान करना. उस ज़माने में राजा एक साहित्यिक समस्या देते थे और कवि उसका समाधान करते हुए कविता की रचना करते थे. अवधानम में 8 पहलू हैं - निषेधाक्षरी, समस्या, दत्तपदि, वर्णन, आशु, व्यस्ताक्षरी, पुराण-पठनम्, अप्रस्तुत प्रसंगम् .

प्रश्न : साहित्यिक रचना के लिए प्रतिभा के साथ-साथ वांछनीय गुण क्या हैं? क्या इस संबंध में कोई विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया जा सकता है?

आप चाहे जितने भी प्रतिभाशाली क्यों न हों, व्यापक अध्ययन के बिना रचना कौशल हासिल करना संभव नहीं है. यदि आप कुछ लिखने की इच्छा रखते हैं तो पहले 100 किताबें पढ़ें. यदि कविता लिखना चाहते हैं तो पहले 100 काव्य पढ़ें. इसके बाद यदि लगता है कि अब भी कुछ लिखने के लिए बचा है तो रचना करने का प्रयास करें. आप कुछ नया लिख नहीं पाते हैं - कोई बात नहीं. लेकिन कुछ पढ़ नहीं पाते हैं - यह हानिकारक है. अध्ययन के बाद आंतरिक प्रतिभा सहजता से प्रकट होती है.

प्रश्न : एक लेखक के रूप में ख्याति प्राप्त करने के बाद, अब आप एक वक्ता के रूप में कई लोगों के लिए आदर्श बने हैं. इस बदलाव का कारण क्या है ?

हर कवि मंच पर चढ़ता है और अपनी कविता की व्याख्या करता है या भाषण देता है. अवधानम् करने वाले, महाकाव्यों का पठन और संदर्भ सहित व्याख्या करते हैं. यह एक तरह का प्रवचन ही है. साहित्य की तुलना में प्रवचन के माध्यम से जनमानस तक सीधे पहुँचा जा सकता है. इस प्रकार हमें बड़े-बड़े महाकाव्य पढ़ने का अवसर मिलता है, इनमें प्रतिपादित विषय और दर्शन को स्पष्ट और प्रभावशाली तरीक़े से जनता तक पहुँचा सकते हैं और दैनंदिन जीवन में इन बातों को क्रियान्वित कर सकते हैं.

प्रश्न : आप हमारे पाठकों को क्या संदेश देंगे.

किताब पढ़ने के लिए हर दिन एक घंटा अलग रखें. फ़ोन या अन्य माध्यमों में पढ़ने के लिए सामग्री ढूँढ़नी पड़ती है, इससे समय नष्ट हो जाता है. पहले तय करें कि आपको क्या पढ़ना है. फिर निश्चित समय आबंटित करें और अनुशासन के साथ उसे पढ़ना पूरा करें. एकांत में किताब पढ़ने से आत्म-आलोचना का अवसर मिलता है. आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा. आपकी गृह पत्रिका में भी अच्छी बातें प्रकाशित की गई हैं. हर पाठक को पूरी पत्रिका अवश्य पढ़नी चाहिए. इससे अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे.

आई.यू.बी.वी.एन. श्रीनिवास राव
क्षे.का., सिकंदराबाद

गायत्री रवि किरण
क्षे.का., सिकंदराबाद

हैदराबाद – आई टी हब

हैदराबाद शहर अपने इतिहास, संस्कृति, परंपरा, भाषा और पकवानों के लिए मशहूर है. साथ ही इस शहर ने समय के अनुसार अपने आप को ढाला है. तकनीकी और प्रौद्योगिक प्रगति में हैदराबाद हमेशा से आगे रहा है. सन् 1950 के आस-पास हैदराबाद की संरचनात्मक वृद्धि हुई और कई सार्वजनिक उपक्रम यहाँ स्थापित हुए यथा बीएचईएल, बीईएल, डीआरडीओ, एचएएल, एनएमडीसी आदि. 1970 के दशक में फार्मा और इलेक्ट्रानिक उद्योगों की स्थापना हुई और 1990 के दशक में आई टी उद्योग के आगमन से हैदराबाद एक अत्यंत सक्रिय शहर के रूप में उभर कर आया. 2020 के अंत तक हैदराबाद स्थित 1500 से अधिक आईटी कंपनियों में कार्यरत 6,00,000 से अधिक कर्मचारी आईटी / आईटीईएस के क्षेत्र में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं. आईटी सेवाओं के निर्यात में हैदराबाद भारत में दूसरे स्थान पर है.

हैदराबाद में आई टी के विकास के लिए अनुकूल वातावरण पहले से ही विद्यमान रहा है. स्थानीय आई टी कंपनियाँ यथा सत्यम, इनफोटेक, इंटरग्राफ, पटनी, सोनाटा, वर्चुओसा की उपस्थिति से इस शहर में आईटी में प्रशिक्षित और दक्ष मानव संसाधन की उपलब्धता को सुनिश्चित किया. अच्छे इंजीनियरिंग कॉलेज यथा वासवी, जेएनटीयू, सीबीआईटी और पास ही स्थित वरंगल शहर में एनआईटी की उपस्थिति से मानव संसाधन का निरंतर स्रोत भी सुनिश्चित है.

नए स्टार्ट अप खोलने के लिए उद्यमियों को केंद्र और राज्य सरकारों की ओर से साधन और समर्थन प्रदान करने के उद्देश्य से इनक्युबेशन सेंटर की स्थापना की गई, जहाँ 'एक सोच लेकर आएं-उत्पाद, समाधान या प्रवर्तन के साथ लौटें' मॉडल का कार्यान्वयन किया गया. इससे उद्यमियों को काफी मदद मिली. समय और खर्च दोनों के मामले में प्राप्त अनुकूल वातावरण ने हैदराबाद को आई टी के विकास का केंद्र बिंदु बना दिया.

हैदराबाद एक महानगर होने के बावजूद यहाँ जीवन व्यतीत करना सुगम है. अन्य महानगरों की तुलना में यहाँ आवास, खान-पान और रहन-सहन से संबंधित व्यय कम है. मौसम संयमित है - न अधिक गरमी न अधिक ठंड. साथ ही शहर में परिवहन का सुनियोजित तंत्र विद्यमान है. मेट्रो रेल परियोजना से शहर का हर कोना आपस में जुड़ गया है. इससे आई टी उद्योग के विकास का मार्ग भी आसान हो गया है.

हैदराबाद को विश्व स्तरीय आई टी केंद्र के रूप में प्रवर्तित करने का श्रेय मुख्यत: तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री नारा चंद्र बाबु नायुडू को दिया जाता है, जिन्होंने स्वंय इस दिशा में पहल की और अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन से भेंट की. परिणामस्वरूप माईक्रोसॉफ्ट का विकास केंद्र यहाँ स्थापित किया गया. 1998 में हाईटेक सिटी का उद्भव हुआ. हाईटेक सिटी शहर की पहली टाउनशिप परियोजना है जिसमें निजी निवेश की शुरुआत हुई. माधापुर, गच्चिबावली, कोंडापुर, मणिकोंडा और नानकरामगुडा क्षेत्रों में आक्रामक प्रचार-प्रसार और विस्तारित आधारभूत संरचना का विकास किया गया. यहाँ आई टी के दिग्गज यथा माईक्रोसॉफ्ट, फेसबुक, विप्रो, कैपजेमिनी, टीसीएस, डेल आदि ने अपने परिसर स्थापित किए.

सरकार के बदलने के बाद भी श्री वाई एस राजशेखर रेड्डी की सरकार ने इस दिशा में काफी प्रोत्साहन दिया और आई टी कंपनियों के विकास के मार्ग में योगदान दिया. हैदराबाद के मशहूर साईबर टावर और आई टी हब इस शहर के प्रौद्योगिकी उन्मुख वातावरण की पहचान बनीं. इसमें कई वैश्विक आई टी कंपनियों ने अपने कार्यालय स्थापित किए.

राज्य के विभाजन के बाद तेलंगाना और केंद्र सरकार ने भी आई टी क्षेत्र के विकास की दिशा में कई महत्वपूर्ण पहल की. आई टी क्षेत्र में हो रहे विकास को ध्यान में रखते हुए अब दूसरे आईटी हब की स्थापना के लिए भी व्यवस्था की जा रही है. सरकार बदलने पर भी आई टी के प्रति सरकारी नीति में कोई परिवर्तन न होने के कारण कारोबार सुस्थिर रहा. यही कारण है कि यहाँ का आई टी क्षेत्र सरकारी, निजी, देशी और विदेशी दोनों निवेश को आकृष्ट कर पाया.

इस शहर को हाईटेक सिटी के रूप में विकसित करने और सिलिकॉन वैली तथा मलेशियन मल्टी मीडिया सुपर कॉरिडॉर की भांति विश्व स्तरीय आईटी हब के रूप में परिवर्तित करने की दिशा में हैदराबाद में आई टी के प्रति व्यापक प्रवर्तन कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सही कंपनियों को आकर्षित करना था. परिणामस्वरूप आज हैदराबाद विश्व में उत्तम आईटी केंद्रों में से एक है. आई टी कंपनियों के आगमन से विकसित क्षेत्र को साइबराबाद की संज्ञा दी गई. हैदराबाद-सिकंदराबाद नगरद्वय के समान साइबराबाद भी प्रसिद्ध हो गया.

टी पावनी
क्षे.का. सिकंदराबाद

तेलंगाना का पहनावा

तेलंगाना भारत का नया राज्य है. लेकिन इस राज्य की संस्कृति काफी पुरानी है. यहाँ के लोगों का पहनावा लगभग दक्षिण भारत के अन्य प्रांतों के समान है. लेकिन यहाँ के कपड़ों की अपनी एक विशेषता है. तेलंगाना, विशेषकर इसकी राजधानी हैदराबाद में गंगा-जमुनी तेहज़ीब, यानी हिंदू-मुसलमान एकता तथा संस्कृति और संप्रदाय के सहजीवन का अनोखा नज़ारा देखने को मिलता है. साड़ी / लंहगा-ओढ़णी पहने बालों में फूल सजाएं हिंदू महिलाओं की तुलना में मुसलमान महिलाएं सलवार कमीज़ और दुपट्टे में नज़र आते हैं और परदा करती हैं. लंबाडी महिलाएं कहीं तरकारी बेचती हुई या निर्माण कार्यों में मज़दूरी करती हुई नज़र आएंगी. शीशे और ऐप्लिक काम किए हुए गाढ़े रंग की लेहंगा-चोली और सिर पर घूंघट ओढे - इनके रंगबिरंगे पोशाक से इन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है.

दैनिक आधार पर यहाँ महिलाएं साड़ी, सलवार-कमीज़ और जीन्स आदि पाश्चात्य पोशाक पहनती हैं. बच्चों में पाश्चात्य प्रभाव अधिक देखने को मिलता है और दैनिक आधार पर लड़कियां फ्रॉक, जीन्स-टीशर्ट पहनती हैं. तथापि तेलंगाना के महिलाओं की पारंपरिक पोशाक साड़ी है और लड़कियां और युवतियां लेहंगा-चोली और इस पर साड़ी की तरह पल्लू लिए ओढ़नी पहनती हैं. साड़ी पहनने का तरीका दक्षिण भारत की अन्य हिस्सों की भांति ही है. 6 गज की साड़ी को दाएं से बाएं की ओर बांधते हुए, बाईं तरफ पल्लू आगे से पीछे की ओर ली जाती है. कुछेक घरों में इसके विपरीत साड़ी को बाएं से दाएं की तरफ बांधा जाता है और पल्लू दाएं तरफ ली जाती है. लेकिन यह तरीका अब बहुत कम ही देखने को मिलता है. मुसलमान महिलाएं दुपट्टे के साथ सलवार-कमीज़ में नज़र आती हैं. कई महिलाएं बुरखा पहनती हैं. दक्षिण भारत का सबसे बड़ा बुरखा बाज़ार हैदराबाद में ही है. आम तौर पर बुरखा काले रंग का होता है. हाल में दूसरे रंगों में और डिज़ाईन युक्त बुरखे भी बनने लगे हैं.

पुरुषों की पोशाक आम तौर पर शर्ट और पैंट ही हैं. हर वर्ग और हर धर्म के पुरुष इसी वेश में दिखते हैं. सांस्कृतिक मौकों पर कढ़ाई युक्त रेशमी कुर्ता-पजामा भी हर वर्ग और हर धर्म के लोग पहनने लगे हैं. हिंदू पुरुषों का पारंपरागत पोशाक धोती और अंगवस्त्र है. सामान्यत: धोती 8 गज की होती है और अंगवस्त्र 4 गज का. सफेद धोती के सिरे में सुनहरे रंग, एक सिरे में लाल और दुसरे सिरे में हरे रंग के बार्डर बने होते हैं. सफेद धोती और सफेद कमीज़ पर अंगवस्त्र या इसके स्थान पर तौलिए का भी उपयोग किया जाता है. पहले धोती का रंग सिर्फ सफेद होता था. अब धोती भी कई रंगों में मिलने लगे हैं. काम करते समय अंगवस्त्र / तौलिए को कमर पर या सिर पर बांध लिया जाता है. देहाती प्रांतों में अब भी इस प्रकार का पहनावा देखने को मिलता है. पूजा, त्यौहार आदि अवसर पर सूती की जगह रेशम की धोती पहनी जाती है.

मुसलमान पुरुष शेरवानी और कुर्ता - पजामा पहनते हैं. साथ ही कूफी (नमाज़ टोपी / गोल टोपी) और शेमाघ (सिर पर या कंधे पर पहना जाने वाला स्कार्फ) भी पहनते हैं. वे पजामे के स्थान पर लुंगी भी पहनते हैं. यह भी एक प्रकार की धोती है, जो ज्यादातर नीले रंग का होता है और इसपर धारियाँ या चेक डिज़ाइन बने होते हैं. आजकल कई प्रकार के रंगीन डिज़ाइन भी प्रचलन में हैं. मुसलमान ही नहीं अन्य भी लुंगी पहन रहे हैं. लुंगी दो प्रकार की होती है, खुली और सिली.

तेलंगाना में सूती वस्त्रों का अधिक उपयोग होता है. यहाँ सूती और रेशमी साड़ियों के साथ-साथ सूती धोती, तौलिए, चादर का उत्पादन बड़े पैमाने में होता है. अच्छी गुणवत्ता वाले इन मदों की माँग पूरे देश में रहती है.

तेलंगाना की साड़ियां :

साड़ी भारतीय महिला की पहचान है. दक्षिण भारत में साड़ी का महत्व और भी अधिक है. पारंपरिक अवसर पर ही नहीं, दैनिक पोशाक के रूप में साड़ी लोकप्रिय परिधान है. दक्षिण भारत के प्रत्येक राज्य में ही नहीं बल्कि प्रत्येक जिले में विशेष प्रकार की साड़ी तैयार होती है. सूती हो या रेशम, यहाँ की साड़ियां देश-विदेश में प्रसिद्ध हैं.

आप दक्षिण भारत आएं और यहाँ साड़ी न खरीदें तो आपका दौरा अधूरा है. हथकरघा उद्योग में तेलंगाना राज्य का स्थान महत्वपूर्ण है. तेलंगाना राज्य के सरकारी आंकड़ों के अनुसार राज्य में 17,069 हथकरघा मिलें काम कर रही हैं. इस उद्योग पर आश्रित बुनकरों और अनुषंगी श्रमिकों की संख्या 40,000 है. राज्य में 259 सूती, 33 रेशम और 44 रूई अर्थात कुल मिलाकर 336 हथकरघा सहकारी समितियां हैं. तेलंगाना की पोचमपल्ली इक्कत, गदवाल, नारायणपेट और गोल्लभामा साड़ियां देश-विदेश में प्रसिद्ध हैं.

पोचमपल्ली साड़ियां : पोचमपल्ली, इक्कत और पटोला इन सभी कपड़ों की बुनावट में एक ही प्रकार की बुनाई तकनीक का प्रयोग किया जाता है - टाई एंड डाय - साड़ी के डिज़ाइन के अनुरूप बुनाई से पहले धागे को टाई एंड डाय पद्धति में रंगा जाता है. फिर इन धागों को ज्यामिती और अन्य अनोखे डिज़ाइन और रंगों के अनुसार करघा के आधार में अंतरित कर दक्षता से बुनाई की जाती है. पोचमपल्ली इक्कत डिज़ाइन की साड़ियां सूती और रेशम दोनों कपड़े की बनती है. साथ ही इसी डिज़ाइन में सलवार कमीज़, चद्दर भी तैयार किए जाते हैं. कहा जाता है कि 18वीं शताब्दी में चीराला की चिट-कु कलाकारों ने पोचमपल्ली में अपना निवास बनाया और इन साड़ियों की तैयारी प्रारंभ की. अब 10000 के अधिक परिवार इस व्यवसाय पर निर्भर हैं. एक साड़ी तैयार करने में 4 व्यक्तियों को 10 दिन तक लग जाते थे. सन् 2000 में यांत्रिकीकरण के आगमन से अब यह कार्य शीघ्रता से पूरा हो जाता है.

चमकदार रंगों से बने अनोखे आकार की पोचमपल्ली साड़ियों की विशेषता यह है कि ये साड़ियां काफी हलकी और मुलायम हैं. इनमें रेशमी साड़ियों का रुतबा है और अनोखे ज्यामिती आकार और साड़ी के कम वज़न के कारण ये हर उम्र की महिलाओं का मन मोह लेती हैं. 2005 में पोचमपल्ली साड़ियों को जीआई टैग प्राप्त हुआ और युनेस्को की 'भारत के प्रमुख साड़ी बुनकर समूहों की अनंतिम सूची में भी इसे स्थान मिला है. हाल ही में ग्राहकों की रुचि के अनुरूप नए प्रकार के डिज़ाइन तैयार किए जा रहे हैं.

गदवाल साड़ी : तेलंगाना के जोगुलांबा-गदवाल जिले का गदवाल शहर अपनी अनोखी ज़री युक्त सूती साड़ियों के लिए विख्यात है. इसे जीआई टैग प्राप्त है. गदवाल साड़ियों की यह विशेषता है कि पूरी साड़ी सूती होती है लेकिन साड़ी का सिरा और पल्लू भारी ज़री का बना होता है. ये साड़ियां बहुत महीन होती हैं. हर साल तिरुपति बालाजी के ब्रह्मोत्सव के प्रारंभ में भगवान की मूर्ति को गदवाल में बना रेशमी परिधान ही पहनाया जाता है.

गदवाल रेशमी साड़ियों के लिए सीमित रंगों का ही प्रयोग किया जाता है. लेकिन गहरे हो या हल्के या फिर हल्के-गहरे रंगों का संयोजन, हर प्रकार के रंग इन साड़ियों में पाया जा सकता है. साथ ही, साड़ी का सिरा भी ग्राहक की पसंद के अनुरूप छोटा या बड़ा मिल जाता है. ज़री में की गई कारीगरी में भी कई प्रकार देखे जा सकते हैं. सादे डिज़ाईन से लेकर भारी जेकार्ड ज़री की साड़ियां भी उपलब्ध होती हैं. दक्षिण भारत के गरम मौसम में भारी रेशम साड़ी की भव्यता और सूती साड़ी का सुकून दोनों का अनोखा संगम गदवाल साड़ियों को लोकप्रिय बनाता है. साड़ी के सूती भाग की बुनाई अलग से की जाती है. ज़री के सिरे और पल्लू के साथ इसका अंतर्ग्रंथन किया जाता है. गदवाल में सीको साड़ियां - सूती और रेशम का मिश्रण- भी मिलता है. इन साड़ियों को अन्य साड़ियों की भांति मोड़ा नहीं जाता बल्की लंबवत रोल किया जाता है.

नारायणपेट साड़ी : महबूबनगर जिले का नारायणपेट शहर सूती और रेशम साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है. नारायणपेट की सूती साड़ियों की बुनाई की विशेष प्रक्रिया में एक साथ करघे पर 8 साड़ियां बनती हैं. इन साड़ियों की बनावट में 80 काउंट महीन सूत का प्रयोग किया जाता है. लगभग 300 मीटर लंबी वार्प की तैयारी में सेक्शनल वार्पिंग मशीन का प्रयोग होता है. दैनिक उपयोग हो या त्योहार उत्सव में पहनना हो, तेलंगाना ही नहीं बल्कि कर्नाटक और महाराष्ट्र में भी नारायणपेट साड़ियों की अधिक माँग रहती है. इन साड़ियों में महाराष्ट्र की बुनाई का प्रभाव देखा जा सकता है. इनके सिरे में और ज़री में ज्यामिती डिज़ाइन का प्रयोग होता है जो दक्षिण भारत के अन्य प्रांतों की साड़ियों से भिन्न है. नारायणपेट की सूती साड़ियां बहुत टिकाऊ हैं और इनका रंग भी जल्दी नहीं छूटता. दूसरी तरफ रेशमी साड़ियां बहुत ही मुलायम और हल्की होती हैं. नारायणपेट साड़ियों की एक और विशेषता यह है कि इनमें दो रंगों की मिश्रित बुनाई से साड़ी में दोहरे रंग का असर दिखता है.

सिद्दिपेट गोल्लभामा साड़ी : सिद्दिपेट की इन साड़ियों के उद्भव के पीछे की कहानी काफी रोचक है. राजा से दूर हुई रानी दूध बेचते हुए अपने दिन काटती है. एक दिन राजा उससे मिलता है और दूध खरीदता है. वह अपनी पत्नी को पहचान नहीं पाता है और पूछताछ करता है. बाद में पति-पत्नी एक दूसरे को पहचानते हैं और इनका मिलन होता है. इस कहानी पर बने सिनेमा से प्रभावित होकर इस क्षेत्र के बुनकर गोल्लभामा यानी गोपिका के आकार का डिज़ाइन साड़ियों के सिरे में शामिल करते हुए साड़ियों की बुनाई करने लगे. इन साड़ियों की बनावट में 2/120 मर्सिराइस्ड कॉटन और 20/2 डी सिल्क का प्रयोग किया जाता है. गोल्लभामा सिर पर एक घड़ा और हाथ में दूसरा घड़ा लिए नज़र आती है. ये सूती साड़ियां मुलायम होती हैं. आजकल इस डिज़ाइन में रेशमी और सीको साड़ियां भी बन रही हैं.

रजनी वी एस वल्लूरी
क्षे.का. सिकंदराबाद

कोमराम भीम

भारत देश का इतिहास वीर योद्धाओं, क्रांतिकारी और वीरांगनाओं की शौर्य गाथा से भर पडा है. जिन्होंने अन्यायकारी हुकूमत के खिलाफ तथा जमींदारों, साहुकारों, राजाओं के खिलाफ संघर्ष किया है. ताकतवर और धनवान वर्ग हमेशा दबे-कुचले को अपनी ताकत के बल पर कुचलता आया है. मगर इन दबे-कुचले वर्ग में भी कुछ ऐसे वीर योद्धा पैदा हुए, जिन्होंने अपने वर्ग पर हो रहे अन्याय का पूरी हिम्मत से सामना किया है. ऐसे ही एक वीर योद्धा का नाम है "कोमराम भीम".

वीर योद्धा कोमराम भीम का जन्म वर्ष 1901 में तत्कालीन ब्रिटिश भारत के सांकेपल्ली नामक स्थान पर आदिलाबाद जिले के हैदराबाद राज्य में आदिवासी गोंड समुदाय में हुआ. जब उनका जन्म हुआ था, तब जंगलों पर आदिवासियों का नहीं, सरकारी वन अधिकारियों का राज चलता था. सरकारी अधिकारी अपने स्वार्थ के लिए बड़े पैमाने में जंगलों को काटते थे.

कोमराम का आदिवासी परिवार तथा समुदाय के बाकी लोग खेती-किसानी करते थे और साथ में जंगलों से प्राप्त फलों एवं उत्पादों को खाकर अपना जीवन जीते थे. मतलब इनका परिवार रोजी-रोटी के लिए पूरी तरह से जंगल पर निर्भर था. ठीक उसी समय इन जंगल क्षेत्रों को वहाँ की सरकार द्वारा जमींदारों में बाँट दिया गया. जब यह जंगल क्षेत्र जमींदारों के अधीन आ गए तो जमींदारों ने इस क्षेत्रों से कर वसूल कर सरकारी खजाना भरना शुरू किया. इसी कर की वजह से जमींदार और आदिवासियों के बीच विवाद होते रहते थे. ऐसे ही एक विवाद में जमींदारो ने कोमराम भीम के पिता की हत्या कर दी. अपने पिता की मृत्यु के बाद भीम अपने परिवार को लेकर करीमनगर के जमींदार लक्ष्मण राव के पास आकर रहने लगे. भीम ने अपने परिवार का पेट पालने के लिए लक्ष्मणराव की बंजर भूमि पर खेती करना शुरू कर दिया. मगर वहाँ भी उन्हें कर वसूलने वाले परेशान करने लगे और कर के लिए उन्हें डराने धमकाने लगे.

एक दिन कर वसूलने आए निजाम शासन के अधिकारी सिद्दीक साहब कोमराम भीम को कर के लिए प्रताड़ित कर रहे थे, तभी कोमराम भीम के हाथों उस अधिकारी की हत्या हो गई. हत्या के बाद भीम को वहाँ से भागना पड़ा. अब कोमराम भीम भागकर एक छोटे से शहर चंद्रपुर पहुँच गए. इस शहर में उनकी मुलाकात विठोबा नाम के व्यक्ति से हुई. विठोबा एक प्रिंटिंग प्रेस चलाने का काम करते थे. विठोबा एक बहुत ही अच्छे इंसान थे. उन्होंने कोमराम भीम को काफी सहायता की. विठोबा की सहायता से कोमराम ने हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाएँ सीखी. मगर वहाँ की पुलिस ने विठोबा को गिरफ्तार कर लिया. विठोबा के गिरफ्तार होने के बाद कोमराम भीम वहाँ से भागे और भागकर असम चले गए. असम में कुछ वर्षो तक मज़दूर के रूप में चाय बागानों में काम किया. मगर यहाँ भी किसानों का शोषण होता रहता था. असम के किसानों के शोषण का कोमराम ने विरोध किया. असम में उन्होंने कई सारे किसान आंदोलन में भाग लिया. एक बार उन्हें वहाँ की स्थानीय पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और 4 साल की सजा सुनाकर जेल में बंद कर दिया मगर कोमराम भीम असम की जेल से फरार हो गए और लौटकर अपने गांव में आ गए. जब असम में थे तब उन्होंने हैदराबाद के स्वतंत्रता सेनानी अल्लूरी सीताराम राजू की वीरता के किस्से सुने थे. उनकी वीरता के किस्से सुनकर कोमराम भीम काफी प्रभावित हुए और उन्हीं से प्रेरणा लेकर अपने क्षेत्र के लोगों के लिए कुछ करने की ठानी.

असम से अपने गांव में आने के बाद कोमराम भीम लच्छु पटेल नाम के एक आदमी के साथ मिलकर काम करने लगे थे. लच्छु पटेल ज़मीनी विवादों को सुलझाने का काम करता था. कोमराम भीम ने लच्छु पटेल को निजाम के खिलाफ चल रहे जमीनी विवाद में बहुत सहयोग किया था. इसलिए कोमराम भीम पर हैदराबाद के निजाम शासन की नज़र फिर पडी. कोमराम भीम का विवाह सोमबाई से हुआ था. अपना विवाह होने के बाद खेती-किसानी करके अपना जीवन चलाना चाहते थे. लेकिन जमींदारों और अधिकारियों द्वारा कर वसूल करने के लिए आदिवासी समुदाय के लोगों को डराया-धमकाया जाने लगा था. जमींदार और अधिकारी लोग जबरन आदिवासी समुदाय से कर वसूलने लगे थे. अपने लोगों का डर देखकर कोमराम भीम हैदराबाद के निज़ाम को प्रत्यक्ष जाकर मिले. मिलकर उनके सामने अपनी मांगे रखी. परंतु निजाम ने उनकी मांगों को स्वीकार नहीं किया.

अब कोमराम भीम ने अपने अधिकार प्राप्त करने का तरीका बदलने की सोची. आस-पड़ोस के जिलों में रहनेवाले गोंड समुदाय के लोगों को इकट्ठा करना शुरू किया. गोंड समुदाय के लोग अपने लिए अलग राज्य की मांग कर रहे थे. कोमराम भीम ने अपने समुदाय के लोगों को इकट्ठा कर एक गुरिल्ला सेना भी तैयार की. अपने आंदोलन को और तेज बनाने के लिए उन्होंने ''जल, जंगल, जमीन'' का नारा भी दिया. धीरे-धीरे यह नारा काफी लोकप्रिय हो गया. कोमराम भीम ने अपनी गुरिल्ला सेना को लेकर हैदराबाद के निज़ाम और अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ अपना विद्रोह तेज कर दिया. उन्हें देखकर लोगो में हिम्मत और नयी शक्ति का संचार होता था. लोग उन्हें अपना प्रेरणा स्त्रोत मानने लगे थे. लेकिन कोमराम भीम की यह लोकप्रियता निज़ाम और अंग्रेजों को रास नहीं आ रही थी.

निज़ाम और अंग्रेजों ने कोमराम भीम के खिलाफ गुप्तचर लगाए. ऐसे ही एक गुप्तचर ने कोमराम भीम की खबर निजाम और अंग्रेजी सेना को दी. खबर के आधार पर अंग्रेजी और निज़ामी सेना द्वारा षडयंत्र रचा गया और भीम का आत्मसमर्पण करवाने की कोशिश की गई. लेकिन कोमराम भीम ने साफ नकार दिया. तब अब्दुल सत्तार नामक व्यक्ति ने आग जलवाने का आदेश दिया. जोधेघाट पर कोमराम भीम के साथ उनके 15 से अधिक योद्धा थे लेकिन वे कुछ नहीं कर पाये. आग में ये सब लोग जल गये. उन्हें जलाया गया था. निज़ाम को यह आशंका थी कि भीम परंपरागत मंत्र जानता है. इसलिए वह दुबारा जिंदा होगा. इस डर से उन्होंने गोलियां दागी. भीम का शरीर देखने योग्य और पहचान के लायक नहीं रहा गया था.

अपने साथियों के साथ 'कोमराम भीम' जिस असिफाबाद जिले में शहीद हुए थे, उसी जिले का नाम बदलकर वर्ष 2016 में 'कोमराम भीम' रखा गया है. जोधेघाट को अब एक पर्यटन स्थान के रूप में विकसित किया जा रहा है. 'आज भी आंध्रप्रदेश ओर तेलंगाना के गोंड समुदाय के लोग उनके शहीद दिन को अस्वयुजा पूर्णिमा के रूप में मानते है और अपने लोक गीतों द्वारा उन्हें याद करते हैं तथा उन्हें यथोचित सम्मान देने का कार्य करते है.

के. संतोष कुमार
सरल
क्षे. का. हैदराबाद-सैफाबाद

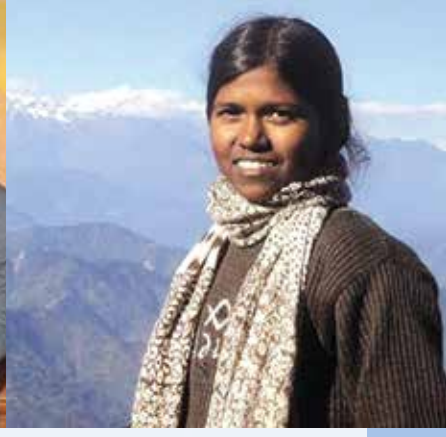

छोटे कदम ऊंचा सफर

कहते हैं, हौसलें में उड़ान हो, तो पंख की जरूरत नहीं होती हैं, तेलंगाना के निजामाबाद की पूर्णा मालवात ने 13 साल की उम्र में एवरेस्ट पर चढ़ कर यह साबित कर दिया है, पर्वतारोही पूर्णा मालवत सबसे कम उम्र में एवरेस्ट की सबसे ऊंची चोटी को छूने वाली देश की ही नहीं अपितु दुनिया की पहली लड़की बनी.

निजामाबाद के एक छोटे से गाँव 'पकल' से ताल्लुक रखने वाली पूर्णा के परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, वह जिस समाज से आई हैं, वहाँ पर लड़कियों की साक्षरता दर काफी कम है, ऐसे में पूर्णा ने ना केवल अपने लिए रास्ता बनाया, अपितु अपनी जैसी अनेक लड़कियों को सफलता का रास्ता भी दिखाया, पूर्णा की इस सफलता पर राहुल बोस के निर्देशन में 'पूर्णा : करेज हैज नो लिमिट' नाम से फिल्म भी बनी है, खेती का काम करने वाले उनके माता-पिता ने शायद ही कभी यह सोचा होगा कि उनकी बेटी यह कारनामा कर दिखाएगी और पूरी दुनिया उसके इस जज्बे को सलाम करेगी.

विश्व के सबसे ऊंचे शिखर तक पूर्णा की यात्रा : इस बहादुर लड़की का जन्म - 10 जून 2000 को निजामाबाद जिले के पकल गाँव में हुआ. पूर्णा जब 10 साल की थी तब उसके पिता देविदास मालवत ने उसे तेलंगाना सोशल वेल्फर रेसिडेंशियल एजूकेशन इन्स्टीट्यूशन सोसाइटी से शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया. वे चाहते थे कि पूर्णा को अच्छी शिक्षा प्राप्त हो, वहाँ पर पूर्णा को एवरेस्ट चढ़ाई की कार्यशाला हेतु चुना गया. उनके ट्रेनर सतीश बाबू जो एक पर्वतारोही थे, हमेशा पूर्णा को सहयोग करते रहे, कहते हैं, जीवन में अगर अच्छा गुरु मिले तो जीवन सफल हो जाएगा और अगर कुछ बड़ा करना है तो एक अच्छे गुरु की आवश्यकता और बढ़ जाती है. एक साक्षात्कार के दौरान पूर्णा ने कहा कि "मैंने कभी सोचा नहीं था कि गाँव से बाहर आने के बाद मुझे इतने मौके मिलेंगे, मेरे नए स्कूल में मैं स्वयं तो एक तितली की तरह महसूस कर रही हूँ जिसका अभी जन्म हुआ है,"

पूर्णा ने जब 2014 में एवरेस्ट की चढ़ाई की थी तब उसकी आयु केवल 13 वर्ष की थी, पूर्णा ने अपने अनुभव में कहा है कि हिमालय की बर्फ आपको सांस लेने नहीं देती है, मैंने वहाँ पर बहुत से कैंप (तम्बू) देखें, हड्डियों तक को कंपकंपाने वाली ठंड का सामना किया, एक भयावह मंजर था. वहाँ पर कई लाशें पड़ी हुई थी जो बर्फ से जमी हुई थी, पूर्णा ने महज 13 साल की उम्र में इन बातों का अनुभव किया तथा इन सभी को पार करते हुए उसने अपना मुकाम हासिल किया, किसी भी व्यक्ति की सफलता के पीछे किसी-न-किसी का हाथ होता है, इसी तरह पूर्णा की सफलता के पीछे तेलंगाना सोशल वेल्फर रेसिडेंशियल एडुकेशन इन्स्टीट्यूशन सोसाइटी के सचिव आर. एस प्रवीण कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं, प्रवीण भूतपूर्व पुलिस ऑफिसर थे, पढ़ाई के लिए नौकरी से अवकाश लेकर इन्होंने हावर्ड यूनिवर्सिटी से लोक प्रशासन विषय से स्नातकोत्तर की पढ़ाई की, वापस आकार इन्होंने तेलंगाना सोशल वेल्फर रेसिडेंशियल एडुकेशन इन्स्टीट्यूशन सोसाइटी में स्थानांतरण की अर्जी लगाई, उनका प्रभाव स्कूल में काफी प्रभावशाली रहा, जिससे प्रभावित होकर पूर्णा ने बड़े गर्व से कहा कि - "मैं बड़ी होकर आपीएस ऑफिसर प्रवीण सर की तरह बनाना चाहती हूँ, पूर्णा अपनी यह कहानी अधिक-से-अधिक लोगों को बताना चाहती हैं और कलाकार और निर्देशक राहुल बोस ने 'पूर्णा : करेज हैस नो लिमिट' जैसी फिल्म बनाकर उनका यह सपना पूरा किया,

विशाखापट्टनम में जब अपर्णा थोटा द्वारा लिखित उनकी जीवनी 'पूर्णा' का विमोचन हो रहा था तब 'श्री प्रकाश विद्या निकेतन, कपूलुप्पाड़ा के छात्रों के समक्ष पूर्णा का वक्तव्य था कि सफलता प्राप्त करने के लिए आप में यह विश्वास होना चाहिए कि आप किसी से कम नहीं, यह किताब पूर्णा के गाँव से लेकर उसके एवरेस्ट तक के सफर को दिखाती है, आज पूर्णा लगभग 21 साल की हो चुकी है और वह तेलंगाना सोशल वेल्फर रेसिडेंशियल एडुकेशन इन्स्टीट्यूशन सोसाइटी से स्नातक की पढ़ाई कर रही हैं,

पूर्णा ने इसके अलावा भी कई सारे मुक़ाम हासिल किए, जैसे 2014 में पूर्णा ने माउंट एवरेस्ट (एशिया) पर चढ़ाई की, 2016 में माउंट कीलिमांजारो (आफ्रिका) पर चढ़ाई की, 2017 में माउंट एलबर्स (यूरोप) पर चढ़ाई की, 2019 में माउंट एकोनकगुआ (दक्षिण अमेरिका) इसके अलावा और कई जगह पूर्णा ने फतह हासिल की, प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने उनकी इस कामयाबी पर उन्हें शुभकामनाएँ भी दी, इसके अलावा अमिताभ बच्चन जैसे दिग्गज कलाकारों ने समाचार चैनलों में उनके साथ बातचीत की है, कई सारे समाचार चैनलों ने उनका साक्षात्कार लिया है.

पूर्णा का यह सफर जारी है, आगे और भी बड़े-बड़े मुकाम उसे हासिल करना है क्यों 'अभी तो नापी है दो गज़ जमीन, पूरा आसमान अभी बाकी है.

एडविन लुविस
क्षे. का. निजामाबाद

तेलंगाना का ज़ायका

तेलंगाना क्षेत्र का मौसम ज्यादातर गरम और शुष्क होता है. यहाँ के लोग इस मौसम के अनुरूप पौष्टिक आहार का सेवन करते हैं. तेलंगाना के व्यंजनों में स्वास्थ्य और ज़ायका दोनों का मेल देखा जा सकता है. अधिकांश व्यंजन देहाती हैं, रोटी, सब्ज़ी, नमकीन और अचार से युक्त पारंपरिक थाली पूर्णता का एहसास देती है. तेलंगाना के व्यंजन में बाजरा, ज्वार आदि मिलेट्स का अधिक प्रयोग होता है. महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, पश्चिमोत्तर कर्नाटक और तेलंगाना के व्यंजनों में कुछ हद तक एकरूपता देखी जा सकती है.

जवार, बाजरा और सोरगम की रोटियों के साथ साथ गेहूँ की रोटियों का भी सेवन नियमित रूप से किया जाता है. सब्जियों में इमली, मिर्च, तिल और नारियल का भरपूर प्रयोग किया जाता है. स्थानीय मसालों का अधिक उपयोग होता है. शाकाहारी व्यंजनों में ताजी सब्जियों और दाल का प्रयोग होता है तो मांसाहारी व्यंजनों में मुर्गी और गोश्त का अधिक प्रयोग होता है. आईए एक नज़र डालें तेलंगाना के प्रमुख स्थानीय व्यंजनों पर -

यहाँ के मांसाहारी व्यंजनों की अपनी अलग पहचान है. **नाटु कोडि कूरा**-देशी मुर्गी की सब्ज़ी-मसालेदार मुर्गी की सब्जी बहुत लोकप्रिय है. **गोलिचिन माम्सं**-तले हुए गोश्त को स्थानीय मसालों से लदी गाढ़ी ग्रेवी में धीमी आंच पर कई घंटों तक पकाया जाता है. आम तौर पर इसे चपाती, चावल या दोसे के साथ खाया जाता है.

शाकाहारी व्यंजनों में **मुद्द वंकाया**-यानी भरवा बैंगन, **आकुकूर पप्पु**-यानी पालक या अन्य हरी सब्जियों के साथ बनी खट्टी मसालेदार दाल, **पप्पु चारु** यानी रस्सेदार दाल का दैनिक आधार पर सेवन किया जाता है. तेलंगाना के मसालेदार और मज़ेदार पकवानों के साथ-साथ सादे और आसानी से बनने वाले व्यंजन भी रोज़मर्रा के खाने में प्रयोग में लाए जाते हैं. ऐसा ही एक व्यंजन है **पच्चि पुलुसु** जिसका सीधा-सीधा अनुवाद है- कच्चा रस. यह तेलंगाना की पहचान है- ऐसा कहना अतिशयोक्ति न होगी. इसे बनाने में मेहनत बहुत कम लगती है और पकाने की ज़रूरत भी नहीं है. इमली का रस निकालकर इसमें बारीक कटा प्याज, नमक मिलाया जाता है और तड़का लगाया जाता है. इसका सेवन गरम चावल और सादी दाल के साथ किया जाता है. गर्मियों में इसका अधिक सेवन किया जाता है.

दक्षिण भारत के अन्य प्रदेशों के समान यहाँ भी दैनिक आधार पर नाश्ते में इडली, डोसा आदि का सेवन होता है. तथापि **सरवा पिंडि** तेलंगाना का विशिष्ट नाश्ता है. इसे स्थानीय भाषा में **गिन्ने अप्पम** भी कहा जाता है. चावल के आटे में प्याज, मिर्च, धनिया के साथ-साथ मूंगफली, चना दाल और मसाले मिलाकर आटा गूंथा जाता है. इसे कड़ाही या तवे पर फैलाकर रोटी के समान धीमी आंच पर सेंका जाता है. डिब्बे में बंद कर रखने पर इसे दो-तीन दिनों तक रखा जा सकता है, जिसके कारण यह यात्रा के लिए बहुत उपयुक्त है. इस कुरकुरी मसालेदार रोटी को नाश्ते में या चाय के साथ खाया जा सकता है. **मोक्क गारेलु** यानी मकई के दानों से बने पकौडे, **चुक्कुडुकाय / अलसंदल आविरि कुडुमुलु** एक प्रकार के सेम के बीजों से बना नाश्ता है जिसमें अलसंद (एक प्रकार का सेम) के बीजों को मिरची, नमक और मसालों के साथ पीसकर इन्हें भाप पर पकाया जाता है.

सकिनालु तेलंगाना का विशेष नमकीन है. आकार में यह चकली के समान है, लेकिन इसकी तैयारी की विधि अलग है. चावल का आटा, तिल के दाने और नमक के गाढ़े घोल को गरम तेल में गोलाकार में डालते हुए तला जाता है. **अप्पालु** एक अन्य नमकीन है. चावल के आटे में नमक मिर्च और अन्य मसाले डालकर इसे पतली पापक के आकार में फैलाया जाता है और गरम तेल में तला जाता है. इन्हें मकर संक्राति त्यौहार के समय और शादियों में बनाया जाता है.

गरजलु या कर्जिकायलु - यह मैदे की पुड़ियों में मीठे मिश्रण को भरकर तली गई मिठाई है. यह देखने में करंजी के समान दिखता है. **मलिद** एक अन्य प्रसिद्ध मिठाई है. चपाती और गुड के मिश्रण को लड्डु के आकार में बनाया जाता है.

राजधानी हैदराबाद का अपना अनोखा ज़ायका है. इसमें हैदराबादी मुसलमानों के पकवान और पकाने की शैली का असर देखा जा सकता है. स्थानीय व्यंजनों के साथ मुसलमानों के खान-पान शैली के विशिष्ट मिश्रण से उत्पन्न अनोखा ज़ायका बहमनी सल्तनत और कुतुब शाही वंशजों की सरपरस्ती में विकसित हुआ और इसकी अलग पहचान स्थापित हुई.

हैदराबादी व्यंजनों में मुग़ल, तुर्की, अरबी जायकों के साथ स्थानीय तेलुगु और मराठवाडा व्यंजनों का भी प्रभाव देखा जा सकता है. हैदराबादी व्यंजनों में चावल, गेहूँ और मांसाहारी पकवानों की भरमार है, जिसमें विभिन्न मसालों का दक्षतापूर्ण प्रयोग किया जाता है. 400 सालों से अधिक विरासत की कुतुबशाही और निज़ामों की शाही रसोई में बनी **बिरयानी, हलीम, दालचा, मुर्ग का कुरमा, खुबानी का मीठा** आदि कई अन्य व्यंजनों को चखने की लालसा में दूर-दूर से लोग खींचे चले आते हैं. **हैदराबादी दम बिरयानी** बनाने के लिए मैरिनेट किए गए गोश्त को एक बड़ी हंडी में चावल के परतों के बीच रखते हुए हंडी पर ढक्कन लगाया जाता है और ढक्कन को गूंथे हुए आटे से सील कर दिया जाता है ताकि बिरयानी चावल और गोश्त के रस्से में पक जाए. मसालों से भरपूर हैदराबादी बिरयानी के अनोखे ज़ायके के कई प्रेमी है.

'खुबानी का मीठा' हैदराबाद की अनोखी मिठाई है. खुबानी, चीनी, ज़ाफ्रान, बदाम से बनी इस पारंपरिक मिठाई का जन्म शहर की शाही रसोई में हुआ. आईसक्रीम के साथ इस मिठाई को लगभग हर शादी में परोसा जाता है. डबल का मीठा या शाही टुकड़ा - डबल रोटी को घी में तलकर मावा युक्त गाढ़े दूध में ज़ाफ्रान और इलाईची मिलाकर बनाया जाता है. यह हैदराबाद की एक और ख़ास मिठाई है.

हालांकि इनमें से कई व्यंजन देश भर में भी मिलते है. लेकिन तेलंगाना / हैदराबादी मूल के पारंपरिक व्यंजनों का सही स्वाद चखना हो तो आपको हैदराबाद ज़रूर आना होगा.

के शिल्पा
क्षे.का., सिकंदराबाद

क्षे.म.प्र.का., हैदराबाद

रामोजी समूह

रामोजी समूह का नेतृत्व श्री चेरूकुरी रामोजी राव करते हैं और इसका मुख्यालय हैदराबाद में स्थित है. इसके कारोबार में टेलीविजन और समाचार पत्र मीडिया, फिल्म निर्माण, वित्तीय सेवाएं, खुदरा व्यापार, शिक्षा और आतिथ्य शामिल हैं.

समूह ने तेलुगू समाचार पत्र 'ईनाडु' को 1974 में प्रारंभ किया. आज 'ईनाडु' सर्वाधिक मुद्रित क्षेत्रीय भाषा का समाचार पत्र हो गया है. समूह ने 'ई टीवी' के माध्यम से टेलिविजन प्रसारण के क्षेत्र में शुरुआत की. वर्तमान में देश के कोने-कोने में समूह के चैनल देश की विविध भाषाओं में प्रसारित हो रहे हैं. उषाकिरण टेलिविजन और उषाकिरण मूविज़ क्रमश: टेलिविजन कार्यक्रम और फिल्मों का निर्माण करते हैं.

इस समूह के प्रमुख व्यवसायों में से एक है हैदराबाद का सबसे अनोखा दर्शनीय स्थल रामोजी फिल्म सिटी जो भारत का एकमात्र सिने-मैजिक सहित थीम आधारित पर्यटन स्थान है. 2000 एकड़ विस्तार में निर्मित इस फिल्म सिटी को 1996 में गिनिज वर्ल्ड रिकार्ड्स में 'दुनिया का सबसे बड़ा फिल्म स्टूडियो कॉम्प्लेक्स' के रूप में मान्यता दी गयी. यह थीम पार्क अपनी विस्मयकारी बनावट से पर्यटकों के मन और मस्तिष्क को आल्हादित कर देता है.

इस समूह ने 1973 से हमारे बैंक के साथ बैंकिंग संबंध स्थापित किया हुआ है. इस अबाधित लंबे रिश्ते की डोर समय के साथ निरंतर मजबूत हुई है. इस समूह की कंपनियां हमारे बैंक से विविध ऋण और जमा उत्पादों की सेवा प्राप्त कर रहीं हैं. साथ ही, हजारों की संख्या में समूह के कर्मचारी और समूह के साथ व्यवहार करनेवाले सौ से अधिक संविदाकर्ता और आपूर्तिकर्ताओं के खाते भी हमारे बैंक से परिचालित हैं. समूह के खातों के परिचालन में उत्कृष्ट अनुशासन और बैंक के साथ समूह के दीर्घ संबंधों के मद्देनजर समूह को बैंक द्वारा विशेष रियायतें दी गयी हैं.

यूनियन सृजन के साथ बातचीत करते हुए समूह के मुख्य वित्तीय अधिकारी श्री जी. श्रीनिवास ने बैंक द्वारा समूह को दशकों से दी जा रही सेवा की सराहना की. उन्होंने कहा कि समूह को समय पर आर्थिक सहायता देकर बैंक ने समूह के विकास में बहुत बड़ी भूमिका का निर्वहन किया है. उन्होंने बैंक के हैदराबाद अंचल के कोटी क्षेत्र के तहत दिलसुखनगर शाखा, सैफाबाद शाखा और फिल्म सिटी विस्तार पटल के स्टाफ सदस्यों के सेवा भाव की प्रशंसा की.

देवकांत पवार, क्षे.म.प्र.का., हैदराबाद

क्षे. का., करीमनगर

श्री बुक्का बालनारायण - भवानी उद्योग समूह

श्री बुक्का बालनारायण मूल रूप से एक अशिक्षित व्यक्ति है, जिन्होंने अपने जीवन के 20 साल की शुरुआत में करीमनगर गंज इलाके की एक दुकान में काम करना शुरू किया. वह उस समय गंज इलाके में घंटी बजाने का काम भी करते थे जिससे ये पता चलता था कि बाजार का समय खत्म हो गया है. दस साल तक इस तरह काम करने के बाद उन्होंने कुछ अन्य लोगों के साथ मिलकर चावल उद्योग में प्रवेश किया. सन 1986 में वह अपने अन्य व्यवसायिक भागीदारों से दूर हो गए तथा स्वयं की भवानी इंडस्ट्रीज नामक चावल प्रसंस्करण इकाई की शुरुआत की. उन्होंने हमारे बैंक (तत्कालीन आंध्र बैंक) का करीमनगर बस अड्डा परिसर शाखा से 30 लाख रुपये की शुरुआती ऋण सुविधा का लाभ उठाया.

पिछले तीन दशकों में, उन्होंने दस से अधिक व्यावसायिक इकाइयाँ स्थापित की हैं, जिनमें लगभग 120 भागीदार हैं और जिन पर लगभग 500 परिवार सीधे तौर पर निर्भर हैं. उनकी कुछ फर्मों के नाम : भवानी इंडस्ट्रीज, पद्मजा इंडस्ट्रीज, रेवती इंडस्ट्रीज, आदित्य इंडस्ट्रीज, भास्कर इंडस्ट्रीज, श्री लक्ष्मी इंडस्ट्रीज, भवानी इंडस्ट्रीज (गुग्गिला), अपर्णा इंडस्ट्रीज, तुलसी इंडस्ट्रीज.

महज 30 लाख रुपये की शुरुआती ऋण सुविधा का लाभ उठाने के बाद आज इस उद्योग समूह ने हमारे बैंक की करीमनगर बस अड्डा परिसर शाखा से 50 करोड़ रुपये की ऋण सुविधा ले रखी हैं. उन्हें चावल प्रसंस्करण उद्योग में अच्छा ज्ञान और अनुभव है. वह जिला और राज्य स्तर पर चावल मिल संगठन के सक्रिय सदस्य हैं. उन्हें सभी व्यापारिक व्यक्तियों द्वारा 'अक्षरम रानी अंबानी' के रूप में नामित किया गया है. वह अपने सभी व्यवसायिक भागीदारों के व्यापारिक और निजी जीवन में भी मुख्य स्थान रखते हैं. वह हमेशा अपने उन सभी सहयोगियों और कर्मचारियों के साथ खड़े रहे जो अच्छे और बुरे समय में उन पर निर्भर रहे हैं. उपरोक्त के अलावा वह कॉर्पोरेट की सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) गतिविधियों में भी शामिल रहे हैं और अपनी कमाई का कुछ हिस्सा दान में देते हैं. जिन्हें नकदी या किसी भी तरह की मदद की जरूरत है. उन्हें व अपने पूरे व्यापारिक साम्राज्य में पहले स्थान पर रखने हैं, यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि उनका जीवन 'जमीन से आसमान तक' की कहावत को चरितार्थ करता है. सभी के लिए वे वास्तव में एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व है जो एक बहुत बड़ा व्यापारिक साम्राज्य चलाता है. अपने जीवन के व्यवसायिक एवं व्यक्तिगत दोनों ही रूप में उनके मील के पत्थर पार करने के बावजूद भी वे हमेशा सामान्य व्यक्ति की तरह रहते है. उनकी पत्नी श्रीमती बुक्का भारती गृहिणी हैं और उनके पुत्र श्री बुक्का श्रीनिवास उनके व्यवसाय में उनकी सहायता कर रहे हैं.

के. नरसिंग राव, बस स्टेशन कॉम्प्लेक्स शाखा, क्षे.का., करीमनगर

क्षे.का. हैदराबाद सैफाबाद

स्वयं सहायता समूह

श्री अम्बिका पोदुपु संघम

यह समूह दि. 09.02.2010 से अस्तित्व में है. वे अपने पुनर्भुगतान में बहुत नियमित हैं. दि. 23.09.2021 को 10 लाख रूपये का ऋण दिया गया. समूह के सदस्य सिलाई, बुटिक, फैन्सी दुकाने, कपड़े, किराना दुकान चला रहे हैं.

श्री सरस्वती पोदुपु संघम

यह समूह दि. 14.10.2012 से अस्तित्व में है. दि. 16.09.2021 को 10 लाख रूपये का ऋण दिया गया.

कासि विसालाक्षी पोदुपु संघम

यह समूह दि. 02.02.2017 से अस्तित्व में है. दि. 30.06.2021 को 05 लाख रूपये का ऋण दिया गया.

दिव्य पोदुपु संघम

यह संघ दि. 06.06.2013 से अस्तित्व में है. दि. 30.09.2021 को 10 लाख रूपये का ऋण दिया गया.

सी एच रास सुब्रमण्यम, तर्कुयामजल शाखा

सिनर्जी ग्रुप ऑफ कंपनी

सिनर्जी ग्रुप ऑफ कंपनी ने अपना बायो-ऑर्गेनिक डिवीजन सिनर्जी क्रॉप प्रोटेक्शन प्राइवेट लिमिटेड और एग्रोकेमिकल्स के रूप में सिनर्जी एग्रोकेमिकल्स हाइड प्राइवेट लिमिटेड के नाम से 2009 में शुरू किया था. श्री एस वीरा भास्कर, सिनर्जी ग्रुप के प्रबंध निदेशक भी एक प्रबंधन व्यवसाय प्रशासक हैं और कृषि क्षेत्र में अच्छा ज्ञान रखते हैं.

एस वीरा भास्कर
प्रबंध निदेशक

वे 13 वर्षों से कृषक समुदाय की सेवा कर रहे हैं ताकि उन्हें तकनीकी सहायता, सेमिनार और प्रशिक्षण के साथ एक लाभदायक कृषि में लाया जा सके. वे भारत को एक लाभकारी कृषि देश बनाने के लिए समर्पित हैं और ईमानदारी से आगे बढ़ रहे हैं. उनके पास 200 सदस्यों की एक मजबूत अनुभवी मार्केटिंग टीम है जो नियमित रूप से फील्ड और मार्केटिंग गतिविधियों की निगरानी कर रही है और योग्य उत्पादन टीम के 150 सदस्य कृषक समुदाय के लिए गुणात्मक उत्पाद लाने में मदद करते हैं.

वे अपनी स्थापना के समय से सिर्फ ही हमारे साथ बैंकिंग कर रहें हैं और हमारे पास इनकी विभिन्न ऋण सुविधाएं हैं. श्री एस वीरा भास्कर, प्रबंध निदेशक, हमारे बैंक की उत्कृष्ट सेवाओं की सराहना करते हैं और वह भविष्य में भी हमारे साथ बढ़ते रहेंगे.

वी. वंशीधर रेड्डी, एल.बी.नगर शाखा, हैदराबाद सैफाबाद

क्षे. का. निज़ामबाद

धनलक्ष्मी स्वयं सहायता समूह

मालेगांव जो भैंसा मण्डल तथा निर्मल जिले में स्थित एक छोटा सा गाँव है. वहाँ के 10 सदस्यों ने अपना एक स्वयं सहायता समूह बनाया जिसे नाम दिया धनलक्ष्मी समूह. लगभग दस साल पहले से यह समूह मिलजुल कर बैंक की सहायता से अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बना रहा है. इस समूह के सदस्य विविध व्यवसाय से जुड़े हुए हैं. समूह के कुछ सदस्य किराना दुकान चलाते हैं, कुछ सदस्य खेती के लिए बैल तथा अन्य औज़ारों की खरीददारी करके अपने खेती के व्यवसाय को मजबूती प्रदान करते हैं. इस तरह इन सदस्यों ने अपने जीवन-यापन को अधिक सरल बनाया है.

इस समूह के सदस्य अपने अनुभव को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि "भैंसा शाखा में हमारे समूह का खाता लगभग 2010 से हैं. शुरुआत हमने 50000 के ऋण से की थी जिसे हमारे समूह के दस सदस्यों में विभाजित किया गया और उस समय पाँच हज़ार रुपयों से समूह के प्रत्येक सदस्य ने अपना व्यवसाय तथा व्यवसाय के लिए जरूरी सामानों की खरीदी की. उसके बाद बैंक ने हमारे ऋण की राशि को बढ़ा कर 50000 (पचास हज़ार) से 200000 (दो लाख) कर दिया और अब हम 200000 (दो लाख) से 1000000 (दस लाख) तक पहुँच गए हैं. जिससे कई सदस्यों को रोजगार की चिंता समाप्त हुई.

बैंक की सहायता से हम आर्थिक रूप से विकसित हो पाए हैं और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ा पा रहे हैं. बैंक के स्टाफ सदस्यों ने हमेशा हमारी मदद की. हम यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, भैंसा शाखा का हमें सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए धन्यवाद करते हैं."

प्रशांत कुमार, भैंसा शाखा, क्षे. का. निज़ामबाद

क्षे.का. सिकंदराबाद

आइडियल समूह

श्री पी सदानंद रेड्डी
अध्यक्ष,
आइडियल समूह

मेसर्स आइडियल इंडस्ट्रियल एक्सप्लोसिव्स लिमिटेड (आई आई ई एल) और सहयोगी संस्था मेसर्स आइडियल डिटोनेटर्स प्राइवेट लिमिटेड (आई डी पी एल) की स्थापना 20 साल से पहले की गई थी. इन दोनों कंपनियों का पंजीकृत कार्यालय सिकंदराबाद में है. मेसर्स आईआईईएल और मेसर्स आईडीपीएल दोनों की कुल मिलाकर पाँच फैक्टरियां हैं, जो चिट्याल, वैधान, कोरबा, चंद्रपुर और नारकेटपल्ली (नलगोंडा) में है. वे औद्योगिक विस्फोटकों का उत्पादन करते हैं. इनके प्रमुख ग्राहक मेसर्स कोल इंडिया लिमिटेड और मेसर्स सिंगरेणी कॉलेरी लिमिटेड हैं. इन दोनों कंपनियों का निर्वहन प्रवर्तकों और उनके सहयोगियों द्वारा किया जाता है और अध्यक्ष श्री पी सदानंद रेड्डी द्वारा व्यावसायिक रूप से प्रबंधन किया जा रहा है. श्री पी सदानंद रेड्डी ने उसमानिया विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक के साथ स्नातकोत्तर किया है और आपको इस गतिविधि में 36 साल का अनुभव है.

यह समूह भारत में विस्फोटकों के उत्पादन में नवोन्मेषक है और सुरक्षित तथा किफायती वाणिज्यिक विस्फोटक, डिटोनेटर और सहायक उत्पाद तैयार करता है. इन्होंने निर्माण तथा खनन परिचालन के क्षेत्र में विशेषीकृत वाणिज्यिक विस्फोटक उत्पादों की आवश्यकता की पहचान की है और ऐसे उत्पादों के विकास और निर्माण की चुनौती में सफलता हासिल की है. यह सफलता ग्राहकों की टिप्पणियों पर ध्यान देने और उनकी माँग के अनुकूल उत्पाद और समाधान उपलब्ध करवाने से संभव हो पाया है.

ग्राहकों को लागत, गुणवत्ता और तकनीकी कार्यनिष्पादन के मायनों में अधिकतम मूल्य प्रदान करना इस समूह का लक्ष्य है. इनके उत्पाद और सेवाएं आधुनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करते हैं. गुणवत्ता और सुरक्षा इनकी ख्याति के मूल आधार हैं. इनके उत्पाद अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के अनुरूप हैं और देश भर में फैले कंपनियों में यथा - सिंगरेणी कॉलेरीस कंपनी लिमिटेड, कोल इंडिया लिमिटेड, नेयवेली लिगनाईट कार्पोरेशन, विशाखापट्टणम स्टील प्लांट एंड सीमेंट कंपनी - में प्रचलित हैं. इन कंपनियों का देश भर में व्यापक डीलर नेटवर्क है.

यह समूह सुदृढ़ व्यापार मूल्यों पर आधारित है. सुरक्षित एवं प्रभावशाली विस्फोटन तकनीक और अन्य अनोखे ड्रिल्लिंग तथा विस्फोटन सामग्री व औज़ारों के विकास तथा बिक्री के प्रवर्तन के प्रति प्रतिबद्ध है. दोनों कंपनियों का सुनियोजित कार्यप्रणाली और मानकीकृत प्रक्रियाओं के साथ व्यावसायिक प्रबंधन किया जाता है. रिकॉर्ड का रख-रखाव और लेखांकन कार्य कंप्यूटरीकृत है.

कंपनी ने अफ्रीका में माँग की पूर्ति के लिए आईआईईएल के स्वामित्व में 'आइडीयल मैनिंग सर्विसेस लिमिटेड इन ज़ाम्बिया' की स्थापना की है. यह कंपनी तानज़ेनिया, कीन्या, ओमान, श्रीलंका, उगांडा, कैमरून, गिनी और इथियोपिया जैसे देशों को अपने उत्पादों का निर्यात करती है. इस समूह को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, आर पी रोड शाखा, सिकंदराबाद से कार्यशील पूंजी आदि के रूप में पिछले 20 वर्षों से वित्तपोषण और समर्थन प्राप्त है.

के. ललिता देवी, आर पी रोड़ शाखा, क्षे.का. सिकंदराबाद

क्षे. का. पंजागुट्टा हैदराबाद

जी आर पावर्स स्विचगियर लिमिटेड

जी आर स्विचगियर लिमिटेड को वर्ष 1984 में श्री सी गोपाला रेड्डी द्वारा स्थापित किया गया था जो इंडियन इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग इंडस्ट्री में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में पहचाने जाते है. यह कंपनी पिछले ढाई दशक से ज्यादा इस क्षेत्र में अपनी पहचान बनाए हुए हैं. यह कंपनी अपने शुरुआत के वर्षों से आंध्रा बैंक से जुड़ी हुई है, हैदराबाद पंजागुट्टा क्षेत्र के अधीन सोमजीगुड़ा शाखा(समामेलन के पश्चात) के साथ इनका संबंध पुराना है. इस कंपनी ने अपना कारोबार मात्र रुपये 2.00 करोड़ के साथ शुरू किया था जो आज बढ़कर 22 करोड़ तक पहुँच गया है. यह इनका हमारे बैंक पर विश्वास ही है जो यह हमारे साथ इतने वर्षों से जुड़े हुए है और इनके कामयाबी के सफर को भी हमने करीब से देखा है. हैदराबाद शहर में इस कंपनी के तीन यूनिट कार्यरत हैं.

जीआरपीएसएल हाइ वोल्टेज आइसोलेटर जो 11 केवी से 420 केवी जिसमें करंट रेटिंग 4000 एएमपीएस तक होता है की डिजाइनिंग, उत्पादन, टेस्टिंग व सप्लाई का काम देखती है. इन सब स्विचगियर की जरूरत पावर सेक्टर को विभिन्न स्टेट इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड को अपने विभिन्न उत्पादों में जेनेरेशन, ट्रांसमिशन और पावर डिस्ट्रिब्यूशन के लिए किया जाता है. वर्ष 2000 में जीआरपीएसएल ने 11 केवी का आउटडोर पोरक्लेन क्लेड वेक्क्युम सर्किट ब्रेकर बनाया जिसको उनके द्वारा विभिन्न राज्य के इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड और पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनियों को सप्लाई किया गया. जीआरपीएसएल के उत्पादों को आईएस/आईईसी मानक पर परखा गया है और सही पाया गया है. जीआरपीएसएल के क्वालिटी सिस्टम को एमएस टीयूवी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड और आईएसओ 90001:2000 सर्टिफिकेट से प्रमाणित किया गया है. जीआरपीएसएल विंड एनर्जी के क्षेत्र मे भी अपना विस्तार कर चुकी है. वर्ष 1995 में इस कंपनी द्वारा कोयंबटूर तमिलनाडू में वारापट्टी गाँव में पल्लदम तालुका में 2 विंड एनर्जी जेनेरेटर (प्रत्येक 250केवी) लगाया जा चुका है जो तमिलनाडू इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड को एनर्जी सप्लाई कर रहा है. दूसरा विंड जेनेरेटर 24/03/2007 को तिरुनेलवेली, जिला तमिलनाडू में लगाया है जिसकी क्षमता 600केवी है.

प्राप्त पुरस्कार : 1993- इंडस्ट्रियल प्रोमोशन अवार्ड- प्रणव मुखर्जी के हाथों से प्राप्त हुआ, 1994 इंडस्ट्रियल प्रोमोशन अवार्ड - वित्त मंत्री श्री मनमोहन सिंह के हाथों से प्राप्त, 1996- राष्ट्रीय अवार्ड - श्री शंकर दयाल शर्मा के हाथों से देश को पावर सेक्टर में योगदान के लिए प्राप्त, 2000- सहस्त्राब्दी गौरव उद्योग विभूषण अवार्ड - आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री के हाथों से प्राप्त.

जे जुम्मीलाल, सोमजीगुड़ा शाखा, क्षे. का. पंजागुट्टा हैदराबाद

क्षे.का. खम्मम

स्वयं सहायता समूह - 'दिव्य चंदन', सफलता का प्रसंग

कोविड महामारी के दौरान भारत में स्वयं सहायता समूहों द्वारा बड़ा ही सराहनीय कार्य किया गया. रोजगार से जुड़े इन समूहों ने कोविड के दौरान बड़ी भूमिका निभाई. जहां शहरों से लाखों की संख्या में पलायन हुआ, लोग बेरोजगार हुए, वहीं स्वयं सहायता समूह ने आपदा में अवसर की पहचान कर कोरोना से लड़ने हेतु मास्क बनाना, सेनेटाइजर वितरण जैसे तमाम कार्यों में भाग लेकर एक ओर जहां देश सेवा की, वहीं दूसरी ओर अपनी आजीवका को आगे बढ़ाया. विश्व की विभिन्न संस्थाओं ने भी भारत की स्वयं सहायता समूहों के योगदान की सराहना की है.

आज हम ऐसे ही एक स्वयं सहायता समूह ही बात कर रहे हैं. जिसका नाम है दिव्य चंदन स्वयं सहायता समूह. दिव्य चंदन स्वंय सहायता समूह की स्थापना दि. 20.10.2014 में सत्तुपल्ली के कुछ गृहणियों द्वारा की गई थी. समूह की सभी गृहणियां आर्थिक संकट से जूझ रही थी. उन्होंने यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, शाखा सत्तुपल्ली से प्रथम ऋण सहबद्धता के रूप में रु. 50000/- प्राप्त किये थे. बैंक से प्राप्त ऋण के माध्यम से उन्होंने अपना स्वयं का कारोबार आरंभ किया, घर की चारदीवारी से बाहर निकले और अपनी सूझ-बूझ और कठोर परिश्रम एवं लगन से अपने कारोबार को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया. दिव्य चंदन स्वंय सहायता समूह ने बैंक के ऋण चुकौती को समय पर पूरा किया. इस प्रकार हमारे बैंक ने भी स्वंय सहायता समूह की ऋण सीमा समय-समय पर आवश्यकतानुसार बढ़ाई. वर्तमान में समूह को हमारे बैंक द्वारा रु. 7 लाख की ऋण सीमा प्राप्त है. समूह आज अनेक गतिविधियों जैसे - टेलरिंग, फल की दुकान, आटा चक्की, फैन्सी शॉप, कृषि से संबंधित गतिविधि सफलतापूर्वक चला रहे है और सदस्यगण न केवल अपने घर को बेहतर ढ़ंग से संचालित कर रहे हैं बल्कि अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा भी दिला रहे हैं.

समूह की नेत्री श्रीमती शेख मलकाबी एवं श्रीमती बी रमना एसएचजी ऋण प्रदान करने हेतु यूनियन बैंक ऑफ इंडिया का आभार व्यक्त करती हैं, जिसके कारण समाज में महिलाओं का सशक्तिकरण हो रहा है. हमारा बैंक भी समूह को हर संभव सहायता कर रहा है.

नवीन नायक दरावत, सत्तुपल्ली 1 शाखा, क्षे.का. खम्मम

सुधाकर ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज

सुधाकर ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज की स्थापना वर्ष 1971 में स्वर्गीय मेला सत्यनारायण द्वारा सूर्यापेट, तेलंगाना में की गई थी, इनका पीवीसी और एचडीपीई पाइप निर्माण क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है. मेला सत्यनारायण जी, एक स्वतंत्रता सेनानी और शिक्षक थे बाद में एक सफल व्यवसायी और उद्योगपति बने. दक्षिण भारत में प्लास्टिक उद्योग में उनके योगदान को कई संगठनों द्वारा सराहा गया है. वह संयुक्त आंध्र प्रदेश में पीवीसी पाइप निर्माण इकाई शुरू करने वाले पहले उद्यमी थे. वर्ष 1984 में वे आन्ध्र प्रदेश प्लास्टिक मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष बने तथा 1985 में ऑल इंडिया पीवीसी पाइप्स मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन, नई दिल्ली के संयुक्त सचिव रहे. इसके अलावा वर्ष 1989 से 1992 तक सूर्यापेट नगरपालिका के अध्यक्ष भी रहे. उन्हें भारत रत्न मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया मेमोरियल लघु उद्यमी पुरस्कार, विजयरत्न, एचएमए लघु उद्यमी पुरस्कार तथा आन्ध्र प्रदेश का सर्वश्रेष्ठ उद्योगपति पुरस्कार जैसे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है.

पिछले कुछ वर्षों में सुधाकर समूह पीवीसी पाइप और फिटिंग तथा एचडीपीई पाइप निर्माण एवं बिक्री में अग्रणी बन कर उभरा है. सुधाकर समूह 3000 से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है. समूह का प्रयास बाजार में अधिक-से-अधिक उत्पाद शृंखलाओं के साथ अपने मूल्यवान ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा प्रदान करना है. इसके लिए समूह बिजली के तार एवं केबल के साथ-साथ पीवीसी खिड़कियों और दरवाजे का भी निर्माण कर रही है. दूरदर्शी उद्यमी द्वारा संचालित यह समूह पीवीसी और एचडीपीई पाइपिंग उत्पाद क्षेत्र में अग्रणी है. सुधाकर समूह को उत्पाद की गुणवत्ता और विश्वसनीय ग्राहक संतुष्टि के लिए जाना जाता है. नवोन्मेषी और गुणवत्ता के प्रति सचेत रहने तथा सर्वोत्म ग्राहक सेवा प्रदान करने के कारण सुधाकर समूह ने अन्य संगठनों में अपनी एक अलग पहचान बनाई है. सुधाकर समूह पीने योग्य पानी की आपूर्ति के लिए उच्च गुणवत्ता वाले पीवीसी पाइप और फिटिंग, भूमिगत जल निकासी हेतु पीवीसी पाइपिंग सिस्टम, एएसटीएम मानकों के अनुसार लीड-मुक्त यूपीवीसी नलसाजी, सीपीवीसी पाइपिंग सिस्टम, लघु सिंचाई प्रणाली और जल भंडारण टैंक आदि के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है. सुधाकर समूह के उत्पाद केवल पाइपलाइन तक ही सीमित नहीं है अपितु इसका ध्येय नवाचार और विश्व स्तरीय उत्पादों के माध्यम से स्थायी और लाभदायक विकास प्राप्त करने के मिशन के साथ लोगों की जीवन रेखा बनना है.

सुधाकर समूह के साथ यूनियन बैंक ऑफ इंडिया (पूर्व-आन्ध्रा बैंक) का संबंध कंपनी की स्थापना यानी सन् 1971 से ही है. कंपनी की विकास यात्रा में हमारे बैंक का साथ और प्रोत्साहन सदैव मिला है. कंपनी ने हमारे बैंक के साथ अनेक मील के पत्थर को पार किया है. हाल में कंपनी ने अपनी गौरवपूर्ण स्वर्ण जयंती मनाई है. वर्तमान में कंपनी का कुल कारोबार रु.1100 करोड़ को पार कर गया है, साथ ही कंपनी के साथ हमारे बैंक के एक्सपोजर में भी लगभग रु.120 करोड़ तक की बढ़ोत्तरी हुई है.

अमित ठाकरे, सूर्यापेट 2 शाखा, क्षे.का.खम्मम

क्षे.का. वरंगल

कुसुमा स्वयं सेवा समूह

कुसुमा स्वयं सेवा समूह की स्थापना सन 2013 में की गई थी. यह संगठन हमारे वरंगल मुख्य शाखा से संबंध रखता है. हमारे वरंगल मुख्य शाखा में लगभग 200 स्वयं सेवा समूहों का व्यापार है. परंतु, यह एक ऐसा समूह है जिसमें सभी सदस्यों के पास एक अलग व्यापार है. इस समूह में कुल 10 सदस्य हैं. यह समूह ग्राम शिवानगर, वरंगल में स्थित है. इस समूह के सदस्य पापड, अगरबत्ती, सिलाई, कढाई, बुनाई, पायदान, साडी, इत्यादि का व्यापार कर रहे हैं और एक आदर्श समूह के रूप में उभर कर आए हैं. यह समूह है जहाँ सभी सदस्य एक-दूसरे से महीने में एक बार मिलते हैं और एक मेल जोल बनाकर, सभी अपनी-अपनी मासिक किस्त भरते हैं. यह एक ऐसा समूह है जहाँ यदि कोई सदस्य अपनी किस्त भरने में असमर्थ है तो अन्य सदस्य बढ-चढ कर अपनी क्षमता अनुसार किस्त को पूरा करने का प्रयास करते है, जो एक अच्छे समूह (संगम) का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं. किसी भी समूह को चलाने के लिए उसमें एक साहसी और समझदार सदस्य का होना आवश्यक है जो सभी का नेतृत्व कर सके. ठीक इसी तरह कुसुमा संगम को चलाने का दायित्व श्रीमती सुकन्या नामक सदस्य उठाती हैं. इन्हें श्रीमती मेंनम्मा नामक एक और सदस्य का भरपूर साथ मिलता है. स्वयं सेवा समूह का एक प्रमुख उद्देश्य महिलाओं का उत्थान करना है. श्रीमती सुकन्या जी अपने काम-काज से समय निकाल कर प्रत्येक सदस्य के बच्चों को पढाने का बीडा भी उठाती हैं. नए व्यापार स्थापित करने में भी यह समूह अन्य समूहों को या कोई नई समूह बनने में सहायता करता है. बैंक द्वारा उपलब्ध स्वयं सेवा संगम के लिए ऋण प्रावधान के बारे में भी यह समूह सूचना व प्रचार प्रसार करता है. इस समूह से लोगों को आर्थिक लाभ के अलावा अन्य लाभ भी प्राप्त होते हैं. आशा करते हैं कि यह सेवा समूह और भी तरक्की और उन्नति करे एवं दूसरे समूह इससे प्रेरणा लें.

श्रीमती सुकन्या के शब्दों में : 'यूनियन बैंक ऑफ इंडिया का मैं आभार व्यक्त करती हूँ, चूंकि, बैंक ने हम पर विश्वास व्यक्त कर, हमें ऋण दिया है. बैंक द्वारा दिए गए ऋण का सदुपयोग करते हुए, हमने हमेशा समय पर किस्तों की भुगतान किया है. कभी भी हमारा समूह पी.एन.पी.ए. या एन.पी.ए. का सूची में नहीं आए और मैं अपने समूह की ओर से यह आश्वासन देती हूँ कि हम सभी समूहों के लिए एक आदर्श सिद्ध होंगे. समूह के सभी सदस्यों का भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ कि समय से पहले ही अपनी अपनी किस्त देने में कभी भी विलंब नहीं करती है और अपने अपने व्यापार में नित नए उपाय करते हुए आर्थिक रूप से आगे बढ रहे हैं.

अरुण गोपाल सिंह, क्षे.का. वरंगल

क्षे.का. हैदराबाद कोटी

गोलकोंडा हैंडीक्राफ्ट एम्पोरियम

गोलकोंडा हैंडीक्राफ्ट एम्पोरियम एक ऐसी संस्था है, जहां हस्तकला एवं शिल्प कला का प्रचार-प्रसार और विकास किया जाता है. जहां एक लाख से अधिक हस्त कलाकार/शिल्पी को रोजगार मिलता है, जो अलग-अलग शिल्प-उत्पाद बनाते हैं जैसे कलात्मक मूर्ति, कपड़ों पर डिजाइन, कलात्मक खिलौने, कलात्मक फ़र्नीचर, कलात्मक बर्तन इत्यादि. इनकी हस्तकला के उत्पाद आज पूरे भारत में फैले हुए हैं. जो तेलंगाना स्टेट हैंडीक्राफ्ट कार्पोरेशन लिमिटेड के तहत आती है. यह हैदरगुड़ा, (क्षे.का. -हैदराबाद, कोटी) शाखा का एक महत्वपूर्ण खाता है और यहीं इसका अधिकतर आर्थिक लेनदेन होता है.

इनके उत्पाद पूरी तरह से प्राकृतिक होते हैं, इनके कार्य करने का तरीका इस प्रकार से है कि तेलंगाना के किसी भी क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण स्थल है, कुछ महत्वपूर्ण परंपरा है तो उस क्षेत्र के इच्छुक कलाकारों को यह ज़िम्मेदारी दी जाती है कि वे अपनी कला के माध्यम से उस विशिष्टता को सामने लाएं.

तेलंगाना की कला और संस्कृति को हस्तकला के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है. कला के माध्यम से तेलंगाना की उपलब्धि तथा विकास को पहचान देने का यह एक प्रयत्न है. पूरे भारत में इसकी कुल दस शाखाएँ है और कुछ नई शाखाओं को खोलने की योजना भी चल रही हैं.

आर. श्रवन्ती, हैदरगुड़ा शाखा

विवेकनंदा स्वयं सहायता समूह : एक कदम सपनों की ओर

क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद कोटी के मेमिंनपेट शाखा से विवेकनंदा एसएचजी ग्रुप द्वारा ऋण लिया गया और उसी राशि से सभी सदस्यों ने अपना-अपना व्यवसाय शुरू किया. इस समूह में कुल 10 सदस्य है. हर किसी के अपने अलग-अलग व्यवसाय हैं, जिसमें एक सदस्य है, श्रीमती टी.कविता जो रामनाथ गुडुपल्ली गाँव विकाराबाद तेलंगाना से ताल्लुक रखती हैं. अपने परिवार के विकास और बेहतर ज़िंदगी के लिए कविता ने स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) में सदस्यता ली. इससे लोन में मिली राशि की सहायता से एक किराना दुकान खोल ली और वह अपने स्वयं के व्यवसाय से जुड़ गई है. जिससे 600 रुपये से अधिक की प्रतिदिन की कमाई होती है और यह निरंतर बढ़ रही है. बैंक की सहायता से उनके छोटे कदम बड़ी मंजिल की ओर बढ़ रहे हैं. इसी प्रकार समूह के कई सदस्यों ने ऋण की राशि से अपना व्यवसाय शुरू किया. कविता का मानना है कि ये योजना अगर उस जैसी लाखों-करोड़ों महिलाओं तक पहुंचेगी तो देश और महिलाओं की उन्नति में काफी बढ़ोत्तरी होगी और नारी सशक्तिकरण में यह महत्वपूर्ण भूमिका होगी. महिलाओं के लिए जरूरी है कि वह आर्थिक रूप से भी आत्मनिर्भर बने. इस प्रक्रिया में बैंक, महिलाओं की सहायता हेतु आगे आ रहे हैं और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की पहल में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं.

रंजीत कुमार, मोमिनपेट शाखा

कालेश्वरम उद्वहन (लिफ्ट) सिंचाई परियोजना

तेलंगाना सरकार ने 2016 में एक सिंचाई परियोजना की शुरुआत की है. इस योजना का नाम कालेश्वरम है. इस विशालकाय प्रोजेक्ट के जरिये गोदावरी नदी पर समुद्र तल से 600 मीटर ऊपर भीमकाय पंपिंग मशीन स्थापित की गयी है. राज्य सरकार का दावा है कि यह दुनिया की सबसे बड़ी लिफ्ट सिंचाई परियोजना है. लिफ्ट सिंचाई का मतलब है इसमें पानी प्राकृतिक तरीके की बजाय पंपों और तालाबों के जरिये खेतों तक पहुंचाया जाता है. तेलंगाना में मुख्यत: दो नदियाँ हैं - गोदावरी और प्रणहिता. दोनों नदियां कालेश्वरम के समीप मिलती हैं जो एक आस्था केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है. तेलंगाना में सभी जगह सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध नहीं है. कालेश्वरम जिस जगह पर स्थित है वो थोड़ी ऊंचाई पर स्थित है और सभी सिंचाई की जाने वाली भूमि निचले एरिया में स्थित है जिससे पानी सभी भूमि तक सही तरीके से पहुँच नहीं पाता है इसलिए इस तरीके को इतने बड़े स्तर पर प्रयोग में लाया जा रहा है.

नहर से खेतों में पानी पहुंचाना परंपरागत सिंचाई का साधन है, जबकि लिफ्ट इरिगेशन मे पंपों या दूसरे उपायों के जरिये पानी पहुंचाया जाता है. इसमें पानी को पंपों और अन्य उपकरणों की मदद से निचले स्तर से उच्च स्तर तक उठाया जाता है. बांधों और नहरों के निर्माण ने बांध के स्तर से निचले स्तर पर पड़े सिंचित क्षेत्र को बढ़ाने में काफी मदद की, लेकिन उच्च स्तर के क्षेत्रों के लिए पानी की कमी समस्या बनी रही. इसलिए उच्च स्तरीय क्षेत्र को सिंचाई के तहत लाने के लिए लिफ्ट इरिगेशन को उपयोग में लिया जाता है. इसमें भूमि अधिग्रहण की समस्या भी कम होती है, पानी का नुकसान कम होता है, कम जन-बल के साथ काम पूरा किया जा सकता है. यह परियोजना कई चरणों में पूरी हुई है. इसका उद्देश्य राज्य की खेती, पीने और औद्योगिक पानी की दो तिहाई से अधिक जरूरतों को पूरा करना है.

कालेश्वरम परियोजना गोदावरी नदी पर बनी है. इसकी लागत 11 बिलयन डॉलर से भी ज्यादा आँकी गयी है. मई 2016 में कालेश्वरम परियोजना की आधारशिला रखी गयी थी. इससे पहले इसी से मिलती-जुलती सिंचाई परियोजनाएं अमेरिका में कोलाराडो और लीबिया में ग्रेट मैन मेड रिवर योजना को पूरा होने में दशकों लगे थे. विश्व के सबसे बड़े लिफ्ट इरिगेशन प्रोजेक्ट कालेश्वरम प्रोजेक्ट का निर्माण भारतीय कंपनी मेघा इंजीनियरिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चरल लिमिटेड ने लिया है. एमईआईएल के निदेशक बी श्रीनिवास रेड्डी ने कहा था हम भारत में दुनिया की सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना को सफलतापूर्वक लॉंच कर चुके हैं और इसे पूर्ण भी कर के दिखाएंगे. तेलंगाना इस परियोजना को कुल तीन से चार वर्षों में पूरा करने के लिए प्रयासरत है. वर्ष 2022 में इस परियोजना को पूर्ण किए जाने का विश्वास है. इस परियोजना के प्रमुख हिस्सों को तीन वर्षों में पूरा किया गया है इसमें मेदिगुड्डा, अन्नाराम और सुंदिला में बैराज और पंप हाउस का निर्माण शामिल है. इस प्रोजेक्ट का उदघाटन तीन मुख्यमंत्रियों - तेलंगाना के, के. चन्द्रशेखर राव, महाराष्ट्र के देवेंद्र फडणवीस और आंध्रा प्रदेश के वाई एस एन जगन मोहन रेड्डी द्वारा किया गया था.

इस प्रोजेक्ट से लगभग 45 लाख एकड़ क्षेत्र को सिंचित किया जा रहा है. इस परियोजना में 145 टीएमसीसी की कुल क्षमता वाले तीन बैराज, 20 लिफ्ट, 19 पंप हाउस, 19 जलाशय शामिल है. इसमें 40 मेगावाट की क्षमता वाली 43 मशीनें 203 किलोमीटर सुरंगों और 1531 किलोमीटर लंबी नहरों के जरिये पानी पहुंचाया जा रहा है. एल एंड टी कंस्ट्रक्शन ने 1.6 किमी लंबे मेदिगुड्डा बैराज का निर्माण किया है. इसमें गोदावरी नदी से श्रीपदा येलमपल्ली परियोजना के लिए प्रति वर्ष 180 टीएमसी पानी पहुंचाया जाता है. पहले चरण में 3 टीएमसी पानी पंप करने के लिए कालेश्वरम परियोजना में 7152 मेगावाट बिजली की खपत होती है. दूसरे चरण में 2 टीएमसी के पंप के लिए 4992 मेगावाट बिजली की खपत होती है. 40 मेगा वाट की क्षमता वाले कुल 43 मशीनों को मेदिगुड्डा, अन्नाराम और सुंदिला पंप हाउस में लगाया गया है, जिससे पानी उठाने के लिए 1720 मेगावाट बिजली की खपत हुई है.

पंपों के जरिये नदी के पानी का इस्तेमाल करने का ऐसा नजारा दुनिया में कहीं और देखने को नहीं मिलेगा. कालेश्वरम प्रोजेक्ट की भव्यता और तकनीक से प्रभावित होकर नामचीन डॉक्यूमेंटरी मेकर कोंडापल्ली राजेंद्र श्रीवत्सा ने इस विषय पर फिल्म बनाने का निर्णय लिया है. 'लिफ्टिंग अ रिवर' नाम की इस फिल्म को बनाने में करीब 3 साल का समय लगा. इस फिल्म में कालेश्वरम प्रोजेक्ट के हर चरण को फिल्माया गया है. इस डॉक्यूमेंटरी को डिस्कवरी चैनल पर 25 जून 2021 को टेलीकास्ट भी किया गया है. इस लेख में बताई गयी बातों को अपनी आँखों से देखने के लिए आप इस डॉक्यूमेंटरी को अवश्य देखें और इस लिफ्ट इरिगेशन की सभी बातों को बारीकी से समझें.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की भूमिका : जी हाँ. इतने बड़े प्रोजेक्ट से जुड़ना अपने आप में एक अद्भुत अनुभूति है. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के आईएफ़बी (औद्योगिक वित्त शाखा) हैदराबाद से यह खाता जुड़ा है. इस प्रोजेक्ट का जो लिंक 1 प्रोजेक्ट है उसको यूनियन बैंक ऑफ इंडिया कन्सोर्शियम की तरफ से वित्त पोषित किया गया है. इसमें हमारी भागीदारी रु. 3150 करोड़ की है. इस प्रोजेक्ट के पीछे तेलंगाना सरकार चरणबद्ध तरीके से तेलंगाना के 7 जिलों को सिंचाई की बेहतर स्थिति प्रदान करना चाहती है साथ ही हैदराबाद-सिकंदराबाद के जुड़वा शहरों, आसपास के गाँवों को पीने के पानी की सुविधा और पास की इंडस्ट्रीज के लिए पानी भी उपलब्ध करवाना चाहती है. मार्च 2017 से हम इस परियोजना से जुड़े हुए है जो स्वयं में गर्व की बात है. लिंक 1 प्रोजेक्ट में हमारे बैंक का प्रतिशत 35.81% है.

सी वी एन भास्कर राव
क्षे. का. पंजागुट्टा हैदराबाद

तेलुगू सिनेमा : विविध आयाम

सिनेमा एक ऐसी विधा है जो कम समय में लाखों लोगों तक पहुँचती है और एक अविश्वसनीय प्रभाव छोड़ती है. फिल्में किसी संस्कृति का प्रचार-प्रसार करती है या एक अंशकालीन संस्कृति भी बनाती है जिसे फैशन भी कहते है. हमारी बौद्धिक सम्पदा को सुरक्षित रखने का कार्य फिल्मों द्वारा होता है तथा फिल्म उद्योग हमारी अर्थ-व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. भारत में बॉलीवुड, टॉलीवुड, मॉलिवुड इत्यादि कई फिल्म इंडस्ट्रीज हैं. तेलुगू फिल्मों के निर्माण और उसे विकसित करने में रघुपति वेंकया का महात्वपूर्ण योगदान है. 1921 में उन्होंने मूक फिल्म 'भीष्म पितामह' का निर्माण किया. उन्हें तेलुगू फिल्म इंडस्ट्रीज के जनक के रूप में भी जाना जाता है. 1933 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने पहली तेलुगू फिल्म 'सावित्री' का निर्माण किया. 'पाताल भैरवी' (1951) भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में प्रदर्शित एकमात्र दक्षिण भारतीय फिल्म थी. उसके पश्चात मेल्लेश्वरी (1951), देवदासू (1953), मा भूमि (1979) ऐसी उत्कृष्ठ फिल्में बनी, जिसे सीएनएन-आईबीएन द्वारा 100 प्रदर्शित फिल्मों में शामिल किया गया था.

तेलुगू फिल्मों का दायरा वर्तमान दौर में केवल तेलुगू भाषी राज्य(आंध्र प्रदेश - तेलंगाना) तक सीमित ना रहकर पूरे देश और विश्व में विस्तृत हो गया है. तेलुगू फिल्मों का बजट अन्य किसी भी भारतीय भाषा के फिल्मों के मुक़ाबले काफी अधिक होता है. यदाकदा किसी फिल्म का बजट हिन्दी फिल्मों से भी अधिक होता है. 'बाहुबली' जैसी फिल्म का बजट 500 करोड़ से भी अधिक है. वर्तमान समय में प्रति वर्ष 50 से 100 तक प्रमुख फिल्में बनती हैं. जिनका कारोंबार 1000 करोड़ से भी अधिक होता है. कुछ विशेषताएँ हैं तेलुगू फिल्म जगत की जो उसकी पहचान हैं, वे इस प्रकार हैं:

नायक की अवधारणा में बदलाव : तेलुगू फिल्मों ने नायक की संकल्पना बदल दी है. एक मिथ को इन फिल्मों ने तोड़ा है, जो कहता है कि गोरा रंग और अच्छी शारीरिक संरचना ही नायक-नायिका का आधार होता. हाल ही में आई फिल्म 'पुष्पा' इसका जीता जागता उदाहरण है. ऐसे कई फिल्में बनी है, जिन फिल्मों ने नायक-नायिकाओं के शारीरिक रंग की तथाकथित धारणा को तोड़ा है. फिल्म देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि यह नायक या अभिनेता हम में से ही कोई हैं इससे दर्शकों के साथ फिल्म का तादात्म्य स्थापित हो जाता है.

डबिंग के माध्यम से दक्षिण से उत्तर का सफर : वर्तमान समय डबिंग के माध्यम से तेलुगू फिल्में दक्षिण भारत से उत्तर भारत का सफर कर रही हैं. सिनेमा चैनलों में प्राय: तेलुगू से हिन्दी में डब फिल्में अधिक चलाई जा रही हैं. इससे तेलुगू नायक - नायिकाओं की फैन फॉलोइंग पूरे भारत में बढ़ रही है तथा उसे एक बड़ा दर्शक वर्ग मिल रहा है और व्यवसाय की दृष्टि से भी यह फिल्में सफल साबित हो रही हैं.

पिछले कुछ सालों में मागधीरा, बाहुबली, साहू, 'पुष्पा' आगामी फिल्म आर.आर.आर. आदि फिल्में ना केवल हिन्दी में अपितु तमिल, मलयालम, कन्नड ऐसी अनेक भाषाओं में रिलीज हो रही हैं.

अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग : तेलुगू फिल्मों में अत्याधुनिक तकनीकी जिसमें बेहतर ग्राफिक्स तथा वी.एफ.एक्स. का प्रयोग किया जा रहा है.

विषयवस्तु की विविधता : तेलुगू फिल्मों के विषयवस्तु की भूमि विविध है, सामाजिक, राजनीतिक फिल्म 'लीडर' इसका बेहतरीन उदाहरण है. 2019 में बनी 'सैरा नरसिम्हा' एक ऐतिहासिक फिल्म है इसके साथ-साथ धार्मिक, काल्पनिक, प्रेम कहानी, एक्शन पर आधारित फिल्में भी अत्यधिक संख्या में बनती हैं.

तेलुगू फिल्म इंडस्ट्री ने कई ऐसी बड़ी फिल्में भारतीय फिल्म इंडस्ट्री को दी है, जिससे भारतीय सिनेमा का दर्जा विश्व में और ऊंचा हो गया है.

मागधीरा- 2009 : 2009 में एस.एस राजमौली के निर्देशन में बनी इस फिल्म, रामचरम और काजल अग्रवाल मुख्य भूमिका थे. इसी फिल्म से तेलुगू में अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग शुरू हो गया था.

बाहुबली- 2015 / 2017 : एस.एस. राजमौली के निर्देशन में बनी इस फिल्म ने वैश्विक फिल्म जगत के समक्ष भारतीय फिल्म का एक अलग चेहरा प्रस्तुत किया. केवल भारतीय ही नहीं अपितु विश्व की अनेक भाषाओं में यह फिल्म प्रदर्शित हुई थी. इस फिल्म की कहानी और दृश्य बेजोड़ है. यह भारत की दूसरी सबसे अधिक कमाई करने वाली भारतीय फिल्म है.

रुद्रम्मादेवि- 2015 : 2015 में गुणशेखरा के निर्देशन में बनी यह ऐतिहासिक फिल्म काफी चर्चित रही. जिसमें अनुष्का शेट्टी तथा अल्लु अर्जुन मुख्य भूमिका में हैं. यह फिल्म काफी चर्चित रही थी.

पुष्पा - 2021 : सुकुमार के निर्देशन में बनी यह फिल्म अलग विषय को लेकर चलती है. फिल्म के डायलॉग तथा दृश्य रोमांच पैदा करते हैं. भारत के कई भाषाओं में यह फिल्म रिलीज हुई. अल्लु अर्जुन और राश्मिका मंधाना की अदाकारी फिल्म में चार चाँद लगा देती है. 300 करोड़ से कई अधिक का कारोबार यह फिल्म कर चुकी है.

तेलुगू फिल्म भारतीय सिनेमा का एक प्रमुख चेहरा बनता जा रहा है. इन फिल्मों के माध्यम से तेलुगू संस्कृति, परिवेश, रहन सहन का प्रचार एवं प्रसार हो रहा है. ना केवल व्यवसाय के दृष्टिकोण से अपितु नित नए प्रयोग और रोचक कहानियों के जरिये तेलुगू सिनेमा भारतीय दर्शकों की पसंद बन रहा है. तेलुगू फिल्म के प्रशंसक पूरे विश्व में बसे हुए हैं वे यह मांग करते हैं कि उनको कहीं पर भी वह फिल्म उपलब्ध करा दी जाये और निर्माताओं द्वरा यह किया भी जाता है अत: तेलुगू फिल्म की सफलता की कड़ी में प्रशंसक भी जुड़ जाता है.

कांबले साहेबराव
क्षे.का. हैदराबाद कोटी

तेलंगाना - कृषि एवं वित्तीय समावेशन

तेलंगाना भारत का 29वां राज्य है. इसका क्षेत्रफल 276.96 लाख एकड़ है. 2011 की जनगणना के अनुसार इस राज्य की जनसंख्या 350.04 लाख है. क्षेत्रफल के दृष्टि से यह देश का 11वां एवं जनसंख्या के दृष्टि से 12वां सबसे बड़ा राज्य है. राज्य में अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जिनकी आजीविका मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर है.

तेलंगाना राज्य की कृषि न केवल अपने राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है बल्कि देश के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में भी प्रमुख योगदान देती है. यह राज्य के आधे से अधिक कामगारों (लगभग 60%) को आजीविका प्रदान करती है.

साधारणत: किसानों की आय फसल की पैदावार और बाजार तक पहुंच पर निर्भर करती है. फसल की पैदावार विभिन्न कृषि निवेश जैसे कि पानी, बिजली, उर्वरक, बीज, श्रम और उन्नत मशीनों आदि पर निर्भर होती है. कालेश्वरम परियोजना और मिशन काकतीय के माध्यम से सिंचाई में सुधार, किसानों को 24X7 मुफ्त बिजली आपूर्ति, रायतु बंधु योजना के माध्यम से किसानों को निवेश में सहायता, रायतु बीमा के अंतर्गत किसानों को जीवन बीमा प्रदान करना तथा निवेश, बाजार और ऋण तक पहुंच में सक्षम बनाना जैसी योजनाओं के माध्यम से राज्य सरकार ने कृषि क्षेत्र के विकास के साथ-साथ किसानों के उत्थान को प्राथमिकता दी है.

कृषि के विभिन्न घटक : चूंकि तेलंगाना अर्ध-शुष्क क्षेत्र में स्थित है, इसलिए वर्षा-जल, अच्छी कृषि उत्पादन का प्रमुख घटक है. राज्य की फसल पैदावार दक्षिण-पश्चिम मानसून पर निर्भर करती है. तेलंगाना में एक वर्ष में सामान्यत: 905.4 मि.मी. वर्षा होती है. राज्य में उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी से लेकर कम उपजाऊ बलुआ मिट्टी भी है. इसमें सबसे प्रमुख 48 प्रतिशत लाल मिट्टी है.

कल्याण-कालेश्वरम परियोजना और मिशन काकतीय जैसी सिंचाई परियोजनाओं के माध्यम से वर्ष 2019-20 के दौरान राज्य में कुल 77.37 लाख एकड़ भूमि पर सिंचाई की व्यवस्था की गई है. कृषि उत्पादन खेती की इकाई के आकार पर निर्भर करता है. राज्य में प्रति किसान भूमि का औसत आकार 1.00 हेक्टेयर है और अंतर-पीढ़ी विखंडन के कारण भूमि का औसत आकार निरंतर घटता जा रही है.

तेलंगाना राज्य में, वनकलम (वर्षा) और यासंगी (गर्मी) दोनों मौसम में फसलें उगाई जाती हैं. वनकलम की प्रमुख फसलें कपास, धान, मक्का, सोयाबीन और दलहन हैं तथा यासंगी की प्रमुख फसलें धान, मूंगफली, बंगाल चना हैं. तेलंगाना सरकार द्वारा प्रदेश में बीज परीक्षण प्रयोगशालाएं, उर्वरक परीक्षण प्रयोगशालाएं, कीटनाशक परीक्षण प्रयोगशालाएं संचालित की जा रही है. तेलंगाना के छोटे/सीमांत किसान अब भी परांपरागत खेती पर ही निर्भर हैं. कृषि यंत्रीकरण को बढ़ावा देने की प्रबल आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने छोटे/सीमांत किसानों को कृषि कार्य से संबंधित मशीनों को किराये पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की है.

तेलंगाना में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलें : चावल, मक्का, लाल चना, हरा चना, ज्वार, तिल, अरंडी, कपास, मूंगफली, सोयाबीन, काला चना हैं.

तेलंगाना को दक्षिण भारत के चावल का कटोरा कहा जाता है. राज्य में लगभग 44 लाख एकड़ में धान की खेती की जाती है. वर्तमान मे धान की खेती वाले क्षेत्र में कमी आई है. तेलंगाना राज्य में मक्का (मकई) दूसरी प्रमुख फसल है, लगभग 14 लाख एकड़ भूमि में सालाना 16 लाख टन उत्पादन होता है. इसका उपयोग मानव भोजन और पशु चारा के लिए किया जाता है; ज्वार एक महत्वपूर्ण रबी मौसम की फसल है जो राज्य भर में लगभग 1.20 लाख एकड़ भूमि में उगाई जाती है. इसका उपयोग मानव उपभोग, पशु चारा तथा स्टार्च, गोंद, कागज आदि के उत्पादन के लिए किया जाता है.

भारत में, तेलंगाना कपास उत्पादन में तीसरे स्थान पर है. प्रत्येक वर्ष कपास की खेती लगभग 12.5 लाख हेक्टेयर में की जाती है जिसमें 48 लाख गांठ का उत्पादन होता है. अरंडी रेंड़ी तेलंगाना की प्रमुख तिलहन फसलों में से एक है. लगभग 80000-85000 हेक्टेयर भूमि पर अरंडी की खेती की जाती है, इसकी खेती तेलंगाना के महबूबनगर, नलगोंडा, रंगा रेड्डी, मेदक और करीमनगर जिलों में की जाती है. मूंगफली की खेती पूरे तेलंगाना क्षेत्र के 2.0 लाख हेक्टेयर में की जाती है, जो इस राज्य की प्रमुख फसलों में से एक है. यह महबूबनगर, वारंगल, नलगोंडा और करीमनगर जिलों में व्यापक रूप से उगाया जाता है. तिलहन और सब्जी के रूप में सोयाबीन दुनिया में सबसे व्यापक रूप से उगाई जाने वाली फसलों में से एक है. तेलंगाना में सोयाबीन की व्यापक रूप से खेती की जाती है .

अरहर को लोकप्रिय रूप से लाल चना कहा जाता है. तेलंगाना राज्य में 2.75 लाख हेक्टेयर में इसकी खेती की जाती है. यह महबूबनगर, आदिलाबाद, रंगा रेड्डी, मेदक, नलगोंडा, वारंगल और खम्मम जिलों की प्रमुख फसल है. मूंग दाल को तेलंगाना में लोकप्रिय रूप से हरा चना के रूप में जाना जाता है और पूरे तेलंगाना में लगभग 1.5 लाख हेक्टेयर में इसकी खेती की जाती है. यह फसल राज्य के नलगोंडा, मेदक, वारंगल, महबूबनगर और खम्मम जिलों में व्यापक रूप से उगाई जाती है. उड़द की दाल को तेलंगाना में 'काला चना' के नाम से जाना जाता है. यह तेलंगाना में निजामाबाद, मेदक और आदिलाबाद में लगभग 55,000 हेक्टेयर भूमि में उगाया जाता है. तिल सबसे पुरानी तिलहन फसलों में से एक है और इसे जिंजेली के नाम से जाना जाता है. इस फसल की खेती राज्य भर में 25,000 से 30,000 एकड़ में ग्रीष्म, खरीफ और अर्ध-रबी फसलों के रूप में की जाती है.

तेलंगाना में कृषि को बढ़ावा देने हेतु निम्नलिखित महत्वपूर्ण योजनाएं हैं -

1. फसल ऋण माफी योजना - किसानों के 1 लाख रुपये तक के सभी कृषि ऋणों को माफ करने के प्रस्ताव का दिशानिर्देश दिया गया है.
2. रायतु बंधु/ कृषि निवेश सहायता योजना - रायतु बंधु योजना के अंतर्गत तेलंगाना सरकार प्रत्येक लाभार्थी किसान को हर फसल के मौसम से पहले प्रति एकड़ 4,000 रुपए की निवेश सहायता प्रदान करती है. इसका उद्देश्य किसानों को बीज, उर्वरक, कीटनाशकों और खेत की तैयारी पर आने वाली लागत संबंधी खर्चों में सहायता प्रदान करना है.
3. रायतु बीमा/ किसान समूह जीवन बीमा - तेलंगाना सरकार ने किसानों हेतु समूह जीवन बीमा योजना शुरू की है. 18-59 आयु वर्ग के सभी किसान इस योजना के अंतर्गत पात्र हैं और किसी भी कारण से मृत्यु होने पर नामिती को रु 5.00 लाख का भुगतान

किया जाता है.

4. रायतु वेदिका - तेलंगाना सरकार ने प्रत्येक कृषि विस्तार अधिकारी क्लस्टर में कुल 2601 रायतु वेदिका वर्क शेड निर्माण करने का निर्णय लिया है जो कि राज्य के किसानों के लिए एक मंच होगा. यह योजना किसानों को पारिश्रमिक मूल्य, बेहतर विपणन सुविधा और उच्च उत्पादकता प्रदान करने में मदद करेगी.
5. फसल बीमा - तेलंगाना राज्य में 1. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) 2. पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना (आरडब्ल्यूबीसीआईएस) लागू है.
6. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन - अगस्त 2007 में केन्द्र सरकार प्रायोजित राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना का शुभारंभ किया गया. इस योजना का मुख्य लक्ष्य गेहूँ, चावल व दलहन की उत्पादकता में वृद्धि लाना है.
7. राज्य कृषि प्रबंधन एवं विस्तार प्रशिक्षण संस्थान (SAMETI) - तेलंगाना राज्य के गठन के पश्चात दि. 06-06-2014 को पुनर्गठन अधिनियम 2014 के अनुसार राज्य कृषि प्रबंधन एवं विस्तार प्रशिक्षण संस्थान - तेलंगाना का गठन किया गया था. इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य 1. कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए कृषि संबद्ध विभागों, राज्य विश्वविद्यालयों तथा क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय संस्थानों के बीच व्यवस्थित संबंध विकसित करना. 2. सभी स्तरों पर परिचालन संबंधी समस्याओं और बाधाओं के साथ-साथ कृषि विस्तार प्रबंधन प्रणालियों और नीतियों का अध्ययन करना. 3. कार्मिक प्रबंधन, संसाधन प्रबंधन और उत्पादक सामग्री प्रबंधन के तंत्र के माध्यम से कृषि विस्तार सेवाओं में सुधार के लिए प्रबंधन उपकरणों के उपयोग को प्रोत्साहित करना और विकसित करना. 4. निष्पादन विस्तार कार्यक्रमों में कौशल विकसित करने के लिए वरिष्ठ, मध्यम और जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं को आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण प्रदान करना.

तथापि राज्य में कृषि क्षेत्र अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है जैसे - पानी की बढ़ती कमी, भूमि जैसे प्राकृतिक संसाधनों का अह्रासन और प्रति व्यक्ति भूमि और जल संसाधन उपलब्धता में कमी. किसानों को अभी भी बाजारों तक पहुंचने और अपने फसल को सीधे बिक्रय कर नकदी हासिल करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है. इसके अलावा वर्षा पर निर्भर कृषि प्रकृति आपदा की दृष्टि से बेहद असुरक्षित है.

वित्तीय समावेशन : हमारे देश की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा वर्ग, विशेषकर महिलाएं, समाज के कमजोर एवं निम्न आय वर्ग के लोग अभी भी वित्तीय क्षेत्र द्वारा दी जाने वाले अति प्राथमिक अवसरों और सेवाओं के दायरे से बाहर हैं. किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में विकास एवं उन्नति तभी संभव है जब देश के आम-जन की भागीदारी समान रूप से हो.

निम्नलिखित वर्ग को वित्तीय समावेशन की सबसे अधिक आवश्यकता है.

गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करने वाले उपेक्षित वर्ग - नि:शक्तजन, विधवा, अनुसूचित जाति एवं जनजाति. कृषि - छोटे एवं सीमांत, काश्तकार, भूमिहीन कृषि श्रमिक. असंगठित औद्योगिक क्षेत्र, वृद्धजन, बेरोजगार, मलिन बस्ती में रहने वाले लोग.

वित्तीय समावेशन हेतु सरकार द्वारा अब तक की गई पहल

- बैंकों का राष्ट्रीयकरण - वित्तीय समावेशन को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 1969 में 19 बैंकों का तथा वर्ष 1980 में 6 बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया.
- अग्रणी बैंक योजना वर्ष 1970 में लाई गई थी जिसमें देश के समस्त जिले विभिन्न बैंकों को आबंटित किए गए. यह आबंटित जिलों में प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र में शामिल कृषि, लघु उद्योग और अन्य आर्थिक गतिविधियों, ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में ऋण प्रवाह में वृद्धि के लिए समस्त ऋण संस्थाओं द्वारा किए जा रहे प्रयासों के समन्वय हेतु नेतृत्व प्रदान करता है.
- क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की स्थापना वर्ष 1975 में की गई थी इसका उद्देश्य ग्रामीण शाखा में विस्तार करना तथा वित्तीय समावेशन के द्वारा ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करना है.
- सूक्ष्म वित्तीय संस्थानों की स्थापना वर्ष 1990 में हुई थी. यह संस्थान उन लोगों को छोटे ऋण प्रदान करता है जो समाज के वंचित और कमजोर वर्ग से हैं तथा जिनके पास बैंकिंग सुविधाओं तक पहुँच उपलब्ध नहीं है.
- स्वयं सहायता समूह - 1992 में बैंक लिंकेज कार्यक्रम की शुरुआत गरीबों के बीच नेतृत्व क्षमता का विकास करना, स्कूली शिक्षा में योगदान करना, पोषण में सुधार करना और जन्म दर में नियंत्रण करना है.
- किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) की शुरूआत वर्ष 2001 में किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु की गई थी.
- प्रधानमंत्री जनधन योजना वर्ष 2013 में प्रारंभ की गई थी. यह राष्ट्रीय वित्तीय समावेशन मिशन है जो वहनीय तरीके से वित्तीय सेवाओं जैसे बैंकिंग/बचत तथा जमा खाते, विप्रेषण, ऋण, बीमा, पेंशन तक पहुंच सुनिश्चित करता है.
- मुद्रा बैंक की स्थापना वर्ष 2015 में हुई थी, यह बैंक मुख्य रूप से सूक्ष्म तथा लघु उद्योगों को वित्तपोषण करता है. इसका मुख्य उद्देश्य युवा, शिक्षित और प्रशिक्षित उद्यमियों को सहायता देकर मुख्य धारा में लाना है.
- वित्तीय साक्षरता बढ़ाना - इस परियोजना का उद्देश्य केंद्रीय बैंक और सामान्य बैंकिंग अवधारणाओं के बारे में विभिन्न लक्षित समूहों जिनमें स्कूल और कॉलेज जाने वाले छात्र, महिलाएँ, ग्रामीण और शहरी गरीब, और वरिष्ठ नागरिक शामिल हैं, इसको वित्तीय जानकारी उपलब्ध कराना है.

तेलंगाना सरकार द्वारा की गई पहल -

स्त्रीनिधि क्रेडिट सहकारी परिसंघ के माध्यम से राज्य सरकार बैंकिंग क्षेत्र से आवश्यक ऋण प्रवाह को प्रोत्साहित करती है. एसएचजी अपने मोबाइल का उपयोग कर स्त्रीनिधि से बिना किसी कठिनाई के ऋण प्राप्त कर सकते हैं. स्त्रीनिधि स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य आय सृजन की जरूरतों यथा कृषि, डेयरी और अन्य गतिविधियों के लिए ऋण जरुरतों को पूरा करने के लिए राज्य के दूर-दराज के क्षेत्रों में भी एसएचजी को 48 घंटे में ऋण देने में सक्षम है.

तेलंगाना में वित्तीय समावेशन हेतु भारत सरकार द्वारा संचालित योजनाओं को सफलतापूर्वक लागू किया जा रहा है साथ-ही-साथ वित्तीय समावेशन में और अधिक गति लाने हेतु अपने स्तर पर भी प्रयास किया जा रहा है.

राजीव रंजन कुमार
क्षे.का.खम्मम

तेलंगाना के नृत्य और नाट्य कला

भारत के सबसे नए राज्यों में से एक- तेलंगाना राज्य अपनी जीवंत संस्कृति के लिए जाना जाता है और नृत्य उसी का एक अभिन्न अंग है. तेलंगाना क्षेत्र में सदियों से नृत्य, संगीत और कला के लिए अनुकूल वातावरण बना हुआ है. इस क्षेत्र में कई प्रकार की नृत्य और नाट्य कलाएं विकसित हुई हैं और लोकप्रिय बनी हैं. प्रत्येक कला की अपनी विशेषता है और अपना ही विशेष प्रेक्षक वर्ग भी है. तेलंगाना के सबसे लोकप्रिय लोक नृत्य और नाट्य कलाएं कुछ इस प्रकार हैं.

पेरिणी शिव तांडवम : दक्षिण के प्रत्येक राज्य में एक प्रमुख नृत्य विधा की प्रधानता है. यदि इस दृष्टि से देखा जाए तो पेरिणी शिवतांडव को तेलंगाना का मुख्य शास्त्रीय नृत्य कहा जा सकता है. यह नृत्य विधा काकतीय राजवंश के शासन समय में अपने शिखर पर पहुंची थी, उन्हीं के साथ इस नृत्य विधा का अस्तित्व भी लुप्त हो गया. पद्मश्री डॉ. नटराज रामकृष्ण के अथक प्रयासों से पेरिणी और कुछ अन्य प्राचीन आध्यात्मिक नृत्यों का पुनरुद्धार हुआ. जनवरी 26, 1974 को तत्कालीन आन्ध्र प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के तत्वावधान में पेरिणी का प्रथम प्रदर्शन किया गया.

पेरिणी शब्द का उद्गम 'प्रेरणा' से हुआ है. पेरिणी शिव थंडवम आमतौर पर पुरुषों द्वारा किया जाने वाला एक नृत्य रूप है. इसे 'योद्धाओं का नृत्य' कहा जाता है. युद्ध के मैदान में जाने से पहले योद्धा भगवान शिव की मूर्ति के सामने इस नृत्य को प्रदर्शित करते हैं. यह एक अत्यंत जोशीला नृत्य है. यह केवल पुरुषों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है. हाल में इस वीर रस और शौर्य भावना से पूर्ण नृत्य शैली में लास्य के पहलू को भी जोड़ते हुए इस नृत्य शैली को विकासित करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं.

पेरिणी नृत्य प्रदर्शन में 5 भाग होते हैं और यह नृत्य 25 तालों में किया जाता है. तेलुगू के कुछ छंद, रावण कृत शिव स्तोत्र, और त्रिपुर सम्हार स्तोत्र का पाठ किया जाता है. पंचभूत लिंगों को कैवरम अर्पित किया जाता है और अंत में शुक्राचार्य के वीरभद्र कवचम से एक कैवरम का पाठ किया जाता है और उसके बाद तीरमानम का पाठ किया जाता है.

लम्बाडी नृत्य : लम्बाडी नृत्य तेलंगाना (और आंध्र प्रदेश) का एक प्राचीन लोक नृत्य है. माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति राजस्थान की जनजातियों में हुई. इन्हें लम्बाडी, बंजारा या सेंगली के नाम से जाना जाता है. यह नृत्य जनजातीय संस्कृति को प्रदर्शित करता है, जो उनके सामाजिक संबंधों, जीवन शैली और धर्म पर प्रकाश डालता है. इस नृत्य के माध्यम से किसानों का दैनिक जीवन परिलक्षित होता है और इसे अच्छी फसल के लिए भगवान का आशीर्वाद लेने के लिए किया जाता है. महिलाओं द्वारा प्रस्तुत इस नृत्य में कभी-कभी पुरुषों की भागीदारी देखी जा सकती है.

यह नृत्य रात में सर्दियों से बचने के लिए जलाए गए आग के इर्द-गिर्द गोलाकार में घूमते हुए किया जाता है. इस नृत्य में खेती में शामिल गतिविधियों के समान हाथ की हरकतें की जाती है. गाने विभिन्न भाषाओं जैसे राजस्थानी, गुजराती, मराठी और तेलुगू में गाए जाते हैं. लम्बाडी महिलाएं शीशे जड़े हुए आकर्षक पोशाक और चमकदार गहने पहने नृत्य करती हैं. यह दृश्य काफी मनमोहक होता है. यह नृत्य दिवाली और होली जैसे कई त्योहारों पर भी किया जाता है.

ओग्गू कथा : ओग्गू कथा तेलंगाना का एक प्राचीन लोक रंगमंच कला रूप है. इसका नाम ओग्गू से लिया गया है - भगवान शिव से जुड़ा एक छोटा सा तालवाद्य है. इसकी उत्पत्ति यादव और कुरुमा गोल्ल समुदाय में हुई थी, जो एक स्थान से दूसरे स्थान जाते हुए देवताओं की कहानियां सुनाते थे. दो सह-कथाकारों की सहायता से मुख्य कथाकार कथा को नाटकीय तरीके से प्रदर्शित करते हैं. ओग्गू कथा को तेलंगाना में गाथागीत परंपरा में प्रमुख स्थान प्राप्त है.

तेलंगाना के इस पारंपरिक नृत्य रूप में हिंदू पौराणिक कथाओं और हिंदू देवताओं की स्तुति के साथ-साथ सामाजिक मुद्दों को भी नृत्य विषयों के रूप में लेकर प्रदर्शित किया जाता है. आज, 100 से अधिक ओग्गू कथा समूह मौजूद हैं, जिनमें से प्रत्येक में 4-6 कलाकार शामिल हैं. इस नृत्य के प्रशिक्षण और प्रदर्शन में दस गायन

शैलियां, रूपसज्जा, पोशाक, नृत्य और वाद्यगोष्ठी का अनूठा उपयोग शामिल है. इस कला के अन्य प्रमुख तत्वों में कल्पना और आशुरचना शामिल है.

चिंदु भागवतम : तेलंगाना का एक और प्रसिद्ध लोक नृत्य, चिंदु भागवतम नृत्य के माध्यम से महाकाव्य में बताई गई कहानियों को प्रदर्शित किया जाता है. 'चिंदू' शब्द का अर्थ है कूदना. इस नृत्य विधा के प्रदर्शन में उछल-कूद की मात्रा अधिक है, जिसके कारण इसने चिंदू का नाम प्राप्त किया. इस नृत्य में वर्णित अधिकांश कहानियाँ 'भागवतम' - भागवत पुराण से हैं इसलिए 'भागवतम' शब्द इससे जुड़ा है.

इस नृत्य शैली के साथ नृत्य, संगीत, संवाद, पोशाक, श्रृंगार और मंच तकनीक को जोड़ा जाता है. माना जाता है कि इस नृत्य शैली का उद्भव दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ. युद्ध, शिकार और अन्य शौर्यपूर्ण कृत्यों को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से इस नृत्य का उद्भव हुआ. यह कर्नाटक के पारंपरिक नाट्य रूप-यक्षगानम के समान है. भागवतम के विपरीत जहां पुरुष महिलाओं की भूमिकाएँ निभाते थे, चिंदु भागवतम में देवी पार्वती के अवतार के रूप में माने जाने वाली ठयेल्लम्माठ का चरित्र केवल महिलाओं द्वारा निभाया जाता था. कलाकारों को यक्षुलु, नगसुलु, कुर्मापुलु, सानुलु, भोगालु, जक्कुलु आदि कहा जाता था.

गुस्साडी नृत्य : गुस्साडी तेलंगाना का एक लोक नृत्य है जो अदिलाबाद जिले में राज गोंड या गोंडुलु जनजातियों द्वारा किया जाता है. गुस्साडी नृत्य प्रतिपादक - कनक राजू को पद्मश्री सम्मान 2021 प्रदान किया गया. गोंडों के लिए दीपावली सबसे बड़ा त्योहार है जब गुस्साडी नृत्य किया जाता है. यह नृत्य पूर्णिमा के दिन शुरू होता है और दीपावली के पखवाड़े के अंतिम दिन तक चलता है.

नृत्य का प्रत्येक कलाकार हिरण के सींगों के साथ-साथ मोर के पंखों वाली पगड़ी पहनता है. वे कृत्रिम दाढ़ी और मूंछों के साथ-साथ अपने शरीर पर बकरियों की खाल भी पहनते हैं. सभी कलाकार आडंबरपूर्ण गहनों में सुसज्जित होते हैं और गांव में मंडली के रूप में घूमते हैं. इन गायन और नृत्य मंडलियों को डंडारी नृत्य मंडली के रूप में जाना जाता है. यह नृत्य रूप डंडारी का एक हिस्सा है और प्रत्येक मंडली में दो से पांच सदस्य होते हैं. डप्पू, तुडुमू, पिप्री और कालीकॉम वाद्ययों का प्रयोग होता है. डंडारी मंडली गोलाकार में नृत्य करती है और गुम्मेला की थाप के सहयोग से विनियमित चाल और ताल के साथ चरमोत्कर्ष पर पहुंचती है.

तोलु बोम्मलाटा : तोलु बोम्मलाटा एक प्रचलित छाया रंगमंच परंपरा है. तोलू का अर्थ है चमड़ा और बोम्मलाटा का अर्थ है पुतलियों का नृत्य; शाब्दिक अर्थ है 'चमड़े की पुतलियों का नृत्य' इस नृत्य रूप में विशाल आकार के चमड़े की पुतलियों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है. मुख्यतः रामायण, महाभारत और कुछ वैष्णव ग्रंथों पर आधारित यह नृत्य अपने आप में अनोखा है. इसकी लोक अभिव्यक्ति विभिन्न कला रूपों का एक सुंदर समामेलन है जिसमें संगीत, नृत्य, अभिनय, चित्रकला, व्याख्यात्मक कथा और उत्कीर्णन शामिल हैं. प्रत्यक्ष वाद्यगोष्ठी के साथ स्किट प्रदर्शित किए जाते हैं. नृत्य रूप छाया आधारित है. इसमें पर्दे के पीछे प्रकाश का एक स्रोत होता है, मंच पर एक सफेद पर्दे के पीछे कठपुतली प्रदर्शित की जाती है. इस प्रकार दर्शक कठपुतलियों के रंगीन छाया नृत्य को देखते हैं न कि वास्तविक कठपुतली को.

डप्पू नृत्यः डप्पू नृत्यम तेलंगाना में एक प्रतिष्ठित नृत्य है. राज्य के विभिन्न हिस्सों में इसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे तप्पेटा और पलका. इस नृत्य रूप का नाम मधुर लयबद्ध संगीत वाद्ययंत्र 'डप्पू' से लिया गया है, जो एक ताल वाद्य (ड्रम) है. डप्पू के ताल पर 15 से 20 नर्तकियां पैरों में घुंघरु पहने लयबद्ध नृत्य करती हैं. माना जाता है कि इस नृत्य शैली की उत्पत्ति तेलंगाना के निजामाबाद जिले से हुई है. नृत्य करने वाले कलाकार रंगीन और चमकीले परिधान पहनते हैं. यह नृत्य आमतौर पर कई उत्सवों के अवसरों पर किया जाता है. डप्पू नृत्य अक्सर बड़े समूहों में किया जाता है. वे विभिन्न पूर्व-निर्धारित चाल और शैलियों में नृत्य करते हैं जैसे पक्षी चाल, बाघ चाल और घोड़े की चाल. इस नृत्य में कई ताल शामिल हैं ओक्क सिरा डप्पू, आट डप्पू, समिदिका डप्पू, मद्दिल डप्पू, गुंडम डप्पू आदि. लय सत्रह अलग-अलग गतियों का समूह है. सबसे आम हैं पुलिस देब्बा, चावु देब्बा और पेल्लि देब्बा.

ए भार्गवी
क्षे.का., सिकंदराबाद

तेलंगाना की जनजातीय प्रथाएँ

02 जून, 2014 को आंध्रप्रदेश राज्य का पुनर्गठन किया गया. पुनर्गठन के पश्चात् तेलंगाना एक नवीन राज्य के रूप में अस्तित्व में आया. 2011 की जनगणना के अनुसार तेलंगाना राज्य में जनजातियों की जनसंख्या कुल जनसंख्या का लगभग 9.34% है जो कि राज्य की जनसंख्या के एक बड़े भाग का प्रतिनिधित्व करती है, यही कारण है कि पुनर्गठन के पश्चात् राज्य सरकार ने जनजातियों के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया है. आइए, हम तेलंगाना की प्रमुख जनजातियों के विषय में कुछ विस्तृत जानकारी प्राप्त करें.

तेलंगाना की प्रमुख जनजातियाँ :- तेलंगाना की विभिन्न जनजातियों में से सबसे प्रमुख कोया, गौंड, कोलमिस, नायकपोड्स, कोंडोरादास, पार्धन, वाल्मीकि, भगतस, सावरस, जटायुस, गदाबस, यानादीस और चेनस हैं. कुछ खानाबदोश जनजातियाँ हैं : पक्कुकुगुंटुलू, बालासांता, शारदाकुंदरु, विरामुशतिवरु, बावनिलु, बिरनालावरु, कोम्मुवारु आदि. ये सभी जनजातियाँ तेलंगाना के एक विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई हैं.

जनजातीय प्रथाएँ :- भारत एक विशाल देश है. यहाँ का सम्पूर्ण समुदाय विभिन्न प्रकार की भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषिक विविधताओं से परिपूर्ण है. इन विविधताओं में एक प्रमुख विविधता है - 'जनजातीय संस्कृति'. एक ओर जहाँ भारत की संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति ने एक गहरा प्रभाव डाला है, वहीं दूसरी ओर ये आदिवासी जनजातियाँ मुख्य धारा से कटे होने के कारण आज भी अपनी मूल संस्कृति को बनाए हुए हैं. यहाँ हम तेलंगाना राज्य की कुछ प्रमुख जनजातियों और उन जनजातियों में प्रचलित प्रथाओं का विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं :-

(1) **गौंड जनजाति** - गौंड जनजाति तेलंगाना के सभी जिलों में पाई जाती है. यह अन्य जातियों में सबसे बड़ी जनजाति है. ऐसा माना जाता है कि यह जनजाति द्रविड़ वंश से संबंधित है. वस्तुत: गुण्ड शब्द तेलुगू से बना है. जिसका अर्थ पर्वत होता है. गौंडो की कुल 30 शाखाएँ हैं. जिनमें प्रमुख रुप से अमात गौंड शामिल हैं. इसके सर्वाधिक प्रचलित गौत्र नेताम मरकाम और कोमर्रा, कुंजाम, मंडावी, मांझी, टेकाम इत्यादि हैं.

(क) गौंड जनजाति में प्रचलित विवाह प्रथाएं - गौंड जनजाति में विवाह से संबंधित अनेक प्रकार की प्रथाएँ प्रचलित हैं. इन विवाह प्रथाओं के अनुसार ही जनजाति के परिवारों में विवाह संपन्न किये जाते हैं. ये विवाह प्रथाएँ इस प्रकार हैं -

- गौंड जनजाति में भगेली - विवाह प्रथा में विवाह लड़के और लड़की की रजामंदी से होता है. इस प्रथा में कन्या अपने प्रेमी के घर भागकर आ जाती है और एक निश्चित सामाजिक रुझान के तहत ये विवाह संपन्न होता है.
- गौंड जनजाति में विवाह के अवसर पर लड़की वाले बारात लेकर लड़के के घर आते हैं. तब ऐसे विवाह को पठौनी विवाह कहते हैं.
- चड़ विवाह - प्रथा में दुल्हा बारात लेकर दुल्हन के घर जाता हैं.
- लम सेना विवाह प्रथा में लड़के अपने ससुराल में आकर रहने लगते हैं. ये जनजाति में पाये जाने वाले सेवा विवाह का गौंडी रूप है.
- जनजातियों में प्रचलित अधिमान्य विवाह के अन्तर्गत गौंड जनजाति में ममेरे-फुफेरे लड़के, लड़कियों के विवाह को दूत लौटावा कहते हैं.
- जनजाति में प्रचलित सामाजिक विवाह को गौंडी जनजाति में पायसोतुर कहते हैं.

(ख) गौंडों की अन्य प्रथाएँ - गौंड अपने व्यवसायिक जीवन में भी एक सांस्कृतिक विशेषता रखते हैं. इनकी अर्थव्यवस्था कृषि एवं वनों पर आधारित है. कृषि इनके जीवन का प्रमुख साधन है. गौंडो की प्रजाति पहाड़ी मडिया आज भी परिवर्तनीय कृषि करते हैं. जिसे स्थानीय बोली में धारिया या बेवार कृषि कहते हैं. गौंडो की जनजाति के प्रमुख देवता दुल्हादेव बड़ादेव नागदेव नारायणदेव हैं. गौंड जनजाति मुख्य रूप से एक ईमानदार जाति मानी जाती है. इसका सामाजिक सांस्कृतिक जीवन उन्नतशील एवं सभ्य है.

(ग) गौंड जनजाति की कुछ प्रमुख उप जनजातियाँ - गौंड जनजाति की कई शाखाएँ भी हैं. जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं -

- पार्धन जनजाति के लोग गौंड जनजाति को अपना पूर्वज मानते हैं. हालांकि उनकी भाषा मराठी है परन्तु ये लोग गौंडी भाषा में हिन्दू पौराणिक कथाओं का गान करते हैं.
- थोटी जनजाति के लोग भी अपने वंश का संबंध गौंड जनजाति के पूर्वजों से जोड़ते हैं. वे स्वयं को बिर्डू गौंड'' कहते हैं और अपने समाज के शुभ और अशुभ अवसरों पर तथा रीति-रिवाजों में गौंडी लोकगीतों का गायन करते हैं. थोटी जनजाति के लोगों की मातृभाषा गौंडी भाषा है.

(2) **चेंचू जनजाति** - चेंचू जनजाति के लोग परंपरागत रूप से कृष्णा और भीमा नदियों के संगम तट पर फैली हुई नेल्लामाला की पहाड़ियों और जंगलों के निवासी हैं. चेंचू जनजाति ने अपने सभी पारंपरिक रिवाजों को बरकरार रखा है और आधुनिक प्रभावों से अप्रभावित है. चेंचू गाँव सांस्कृतिक और पारंपरिक उत्साह को दर्शाता है. पेंटा चेंचू जनजाति के एक गाँव का नाम है. भारत की चेंचू जनजाति एक ही नाम की भाषा में बात करती है और यह भाषा द्रविड़ भाषा समूह की है. इस भाषा को चेन्चवर चेनस्वर

चेन्चुकुलम या चोंचेरू के नाम से भी जाना जाता है. तेलंगाना में निवास करने वाले चेंचू जनजाति के लोग भी इसी भाषा का प्रयोग करते हैं. ये चेंचू जनजाति भी गोत्रों की प्रणाली का पालन करती है. चेंचू आदिवासी समाज में विवाह एक महत्वपूर्ण संस्था है. चेंचू जनजातियों को गौत्र या कबीले के भीतर किसी से भी शादी करने की अनुमति नहीं है. चेंचू जनजाति में विधवा पुनर्विवाह भी प्रचलित है. भागबन तरु गरेलामाई साम, पोत्सम्मा गंगम्मा उनके देवता हैं, जिन्हें वो पूजते हैं. वे भगवान हनुमान तथा अन्य कई हिन्दू देवताओं की भी पूजा करते हैं.

(3) **कोया जनजाति** - कोया एक भारतीय आदिवासी समुदाय है जो तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़ और उड़ीसा राज्यों में पाया जाता है. कोया जनजाति तेलंगाना राज्य की सबसे बड़ी आदिवासी जनजाति है. यह जनजाति तेलंगाना एवं आंध्रप्रदेश के एक विस्तृत तेलगुभाषी प्रदेश में फैली हुई है. कोया को आमतौर पर कोई, कोयालु, कोयेलू, कोया, डोरालू एवं डोराला सत्तम आदि के रूप में जाना जाता है. कोया अपनी बोली में स्वयं को कोयतूर'' कहते हैं. ये गोदावरी घाटी की सबसे दक्षिणी शाखा है. शब्द 'कोया' का अर्थ है - पहाड़ी निवासी. कोया जनजाति के लोग कोया भाषा बोलते हैं जो गौंडी से संबंधित एक द्रविड़ भाषा है. कोया जनजाति को कई व्यवसायिक जनजातियों में विभाजित किया गया है. जैसे - लोहार, बढ़ई, पीतल श्रमिक और टोकरी बनाने वाले. कोया जनजाति में परिपक्वता के बाद विवाह की परंपरा है और ये बाल विवाह के विरोधी हैं. दुल्हा-दुल्हन की जोड़ी मिलाने में मामा का विशेष योगदान रहता है.

(4) **सवारा जनजाति** - सवारा जाति पूर्वी भारत की एक जनजाति है. इस जाति के लोगों को 'साओरा' सोरा या सौरा भी कहा जाता है. यह मुख्यत: उड़ीसा, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश तथा बिहार सहित तेलंगाना के कई क्षेत्रों में पाई जाती हैं. इनकी कुल जनसंख्या तीन लाख दस हजार के लगभग है जिसमें से अधिकांश उड़ीसा में हैं. सावरा जाति के लोग बहुत कम वस्त्र अपने शरीर पर धारण करते हैं. अधिकांश सावरा लोगों ने अब हिन्दू धर्म अपना लिया है और सामान्यत: ये उड़िया भाषा बोलते हैं. इसके विपरीत पहाड़ियों पर रहने वाले लोगों की मुंडा बोली का परंपरागत स्वरूप बना हुआ है. पहाड़ी अंचल के सावरा लोग व्यवसाय के आधार पर कुछ उप-जनजातियों में विभाजित हैं. जाति नामक सावरा कृषक हैं, आरसी बुनकर हैं, मूली लोहार हैं, किंडाल टोकरे बनाने वाले और कुंबी कुम्हार हैं. इनकी परंपरागत सामाजिक ईकाई परिवार का ही एक विस्तृत रूप है. जिसमें पुरुष और स्त्रियाँ एक ही पूर्वज के वंशज हैं. सावरा जाति में स्त्रियों के अधिकतर आभूषण सस्ती धातुओं के बने होते हैं. ये लोग वनों से प्राप्त घुँघचियों की माला पहनते हैं.

(5) **कमार जनजाति** - कमार जनजाति में लड़कों का विवाह प्राय: 18-19 वर्ष की उम्र में तथा लड़कियों का विवाह 16-17 वर्ष की उम्र में करा दिया जाता है. मामा या बुआ के लड़का-लड़की से विवाह को प्राथमिकता देते हैं. विवाह प्रस्ताव वर पक्ष की ओर से होता है. विवाह तय होने पर वर पक्ष द्वारा वधू पक्ष को चावल दाल व नकद कुछ रुपया सूक के रूप में दिये जाते हैं. सामान्य विवाह के अतिरिक्त घूरावट लमसेना (घरजमाई) प्रथा भी प्रचलित है. पेठू (घुसपैठ) ऊहरिया (सहपलायन) को सामाजिक दंड के बाद सामाजिक स्वीकृति मिल जाती है. विधवा परित्यक्ता पुनर्विवाह को मान्यता है. विधवा भाभी देवर के लिये चूड़ी पहन सकती है.

(6) **कोलम जनजाति** - कोलम जनजाति भी तेलंगाना की एक प्रमुख आदिवासी जनजाति है. यह जनजाति पूर्व आदिलाबाद जिले में स्थित जंगलों और पहाड़ी श्रृंखलाओं की तलहटी में निवास करती है. यह अपने स्थानीय आदिवासी धर्म और हिन्दू धर्म का पालन करते हैं. ये प्रकृति की पूजा करते हैं. यह अपने आदिवासी देवता भीमायक की पूजा करते हैं साथ ही हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा का भी प्रचलन है. पहले कोलम समाज संयुक्त परिवारों से बना हुआ था जो सामूहिक रूप से कृषि कार्य करते थे लेकिन वर्तमान में जनजाति के अधिकांश लोग एकल परिवार में रहते हैं. हिन्दू धर्म के अनुसार ये एकाकी विवाह अर्थात् एक पत्नी / पति विवाह का पालन करते हैं. कोलम एक अंतर्विवाही समूहों में विभाजित है. यह जनजाति 12 बहिर्विवाही कुलों में विभाजित है, जिन्हें पेड़ी कहा जाता है. कोलम जनजाति के लोग कोमली भाषा बोलते हैं. कोमली भाषा गौंड भाषा की तरह द्रविड़ भाषाओं के मध्यवर्ती समूह के अन्तर्गत है.

(7) **वाल्मीकि जनजाति** - दक्षिणी भारत में बोया या बेदार नायक समाज के लोग अपनी पहचान बताने के लिये वाल्मीकि शब्द का प्रयोग करते हैं. तेलंगाना में इन्हें बोया वाल्मीकि या वाल्मीकि के नाम से जाना जाता है. बोया या बेदार नायक पारंपरिक रूप से एक शिकारी और मार्शल जाति है. यह मुख्य रूप से हिन्दू धर्म को मानते हैं. इस समुदाय या सम्प्रदाय का नाम महर्षि वाल्मीकि के नाम पर पड़ा है. इस समुदाय या सम्प्रदाय के सदस्य संस्कृत रामायण और योग वशिष्ठ जैसे ग्रंथों के रचयिता आदि कवि महर्षि वाल्मीकि के वंशज होने का दावा करते हैं और महर्षि वाल्मीकि को अपना गुरू और ईश्वर का अवतार मानते हैं.

तेलंगाना की आदिवासी जनजातियों के लोग सांस्कृतिक रूप से बहुत समृद्ध हैं तथा अपनी परंपराओं और रीति-रिवाजों का पूर्ण निष्ठा के साथ पालन करते हैं परन्तु शिक्षा एवं मूलभूत सुविधाओं के अभाव में ये जनजातियाँ बहुत पिछड़ गई हैं और अब धीरे-धीरे इन जनजातियों के लोग भी व्यवसाय की खोज में शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं जिससे इनके सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास होना आरंभ हो गया है. वर्तमान समय में इन जनजातियों को मुख्य धारा से जोड़ने की आवश्यकता है जिससे ये लोग भी अपना सर्वांगीण विकास कर सकें.

रजनी शर्मा
क्षे. का., इन्दौर

दि. 22.10.2021 को मडगांव गोवा में पश्चिम एवं मध्य क्षेत्र के लिए आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु माननीय केंद्रीय गृह राज्यमंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा एवं माननीय केंद्रीय पर्यटन राज्यमंत्री, श्री श्रीपाद येशो नाइक की उपस्थिति में बैंक को प्राप्त पुरस्कार

वर्ष 2019-20 के लिए क्षे.म.प्र.का. भोपाल का तृतीय पुरस्कार डॉ. अजित मराठे, उप अंचल प्रमुख भोपाल; वर्ष 2018-19 के लिए क्षे. का. भोपाल (सेंट्रल) का प्रथम पुरस्कार श्री अखिलेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख भोपाल(सेंट्रल) एवं वर्ष 2017-18 के लिए क्षे.का. इंदौर का प्रथम पुरस्कार श्री पार्थ सारथी मिश्रा, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर द्वारा ग्रहण किया गया.

वर्ष 2019-20 हेतु 'ग' क्षेत्र में क्षे.का. गोवा का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री प्रशांत कुमार साहू, उप महाप्रबंधक एवं श्री ललित सानप, प्रबंधक (राजभाषा)

वर्ष 2019-20 हेतु 'ख' क्षेत्र में क्षे.का.नासिक का तृतीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ. अजित मराठे, उप महाप्रबंधक एवं सुश्री कुमुद, प्रबंधक (राजभाषा).

वर्ष 2017-18 एवं 2018-19 हेतु 'ग' क्षेत्र में क्षे.का. गोवा का तृतीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री राजेश कुमार झा, सहायक महाप्रबंधक एवं श्री ललित सानप, प्रबंधक (राजभाषा)

वर्ष 2018-19 और वर्ष 2019-20 के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री सत्यजीत महांती, क्षेत्र प्रमुख, बड़ौदा एवं सुश्री राधा मिश्र, प्रबंधक (राभा).

नराकास दिल्ली की छमाही बैठक में वर्ष 2020-21 के लिए क्षे. का. दिल्ली (दक्षिण) को हिंदी कार्यान्वयन हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार एवं पत्रिका 'यूनियन नेतृत्व' को प्रथम पुरस्कार डॉ. मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिया गया, पुरस्कार ग्रहण करते हुए क्षेत्र प्रमुख, श्री अजय कुमार एवं राजभाषा अधिकारी, श्री सुनील दत्त.

दि. 25.10.2021 को नराकास, अमरावती की अर्ध वार्षिक बैठक में क्षे.का., अमरावती को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ. प्रोत्साहन पुरस्कार ग्रहण करते हुये श्री प्रमोद ठाकुर, उप क्षेत्र प्रमुख एवं श्री मुकेश पाटिल राजभाषा अधिकारी.

दि. 30.11.2021 को नराकास फाजिल्का द्वारा क्षे.का.भटिंडा की फाजिल्का शाखा को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया. यह पुरस्कार श्री नरेश कुमार, नराकास बैंक अध्यक्ष द्वारा श्री सतनाम सिंह, शाखा प्रबंधक प्रबन्धक फाजिल्का एवं सुश्री रेणु बाला, राजभाषा अधिकारी को दिया गया.

दि. 02.12.2021 को नराकास, धनबाद की बैठक में क्षे.का.धनबाद को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. श्री पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव, निदेशक (कार्मिक), भारत कोकिंग कोल लिमिटेड द्वारा पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री कुमार राहुल, क्षेत्र प्रमुख, धनबाद एवं श्री विक्रांत कुमार, राजभाषा अधिकारी.

दि. 04.12.2021 को हैदराबाद में दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों के लिए आयोजित राजभाषा सम्मेलन के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु डॉ. मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार; श्री वी.एम.तिवारी, निदेशक, सीएसआईआर एवं डॉ. दिनेश श्रीवास्तव, अध्यक्ष व सीईओ, परमाणु ऊर्जा विभाग की उपस्थिति में बैंक को प्राप्त पुरस्कार

वर्ष 2018-19 एवं वर्ष 2019-20 के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री टी. नंजुंडप्पा, क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु (दक्षिण) एवं श्री कृष्ण कुमार यादव, वरिष्ठ प्रबंधक (राभा).

वर्ष 2018-19 व 2019-20 के लिए तृतीय व द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री वी. गुरुसुब्रमनियन, उप महाप्रबंधक, क्षे.म.प्र.का. बेंगलूरु एवं श्री कृष्ण कुमार यादव, वरिष्ठ प्रबंधक (राभा).

वर्ष 2019-20 के लिए बैंक वर्ग में क्षे.का., कोषिक्कोड का तृतीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री महेश्वर्या, लेखा परीक्षा कार्यालय, हैदराबाद एवं श्री मंजूनाथस्वामी सी जे, उप महाप्रबंधक, क्षे.का.एर्णाकुलम.

वर्ष 2019-20 के लिए बैंक वर्ग में क्षे.का., एर्णाकुलम (ग्रामीण) का बैंक श्रेणी में प्रथम पुरस्कार एवं वर्ष 2018-19 के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री मंजुनाथस्वामी सी जे, क्षेत्र प्रमुख एवं श्री राजेश के, वरिष्ठ प्रबंधक (राभा).

वर्ष 2018-19 एवं वर्ष 2019-20 के लिए बैंक वर्ग में बैंक नराकास, कोच्चि, संयोजक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षे.का. एर्णाकुलम का द्वितीय एवं प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री महेश्वर्या, लेखा परीक्षा कार्यालय, हैदराबाद एवं श्री मंजूनाथस्वामी सी जे, उप महाप्रबंधक, क्षे.का.एर्णाकुलम.

न.रा.का.स., (बैंक) मुंबई द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में बेहतर कार्य करने के लिए यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई (दक्षिण) को राजभाषा शील्ड से पुरस्कृत किया गया. राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए श्री गोविंद कुमार झा, क्षेत्र प्रमुख, मुंबई (दक्षिण), श्री नवल किशोर दीक्षित, सहायक महाप्रबंधक राजभाषा, केंद्रीय कार्यालय मुंबई तथा श्री सुधाकर खापेकर, वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा, क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, मुंबई.

दि. 28.11.2021 को जगदंबी यादव स्मृति संस्थान द्वारा आयोजित राजभाषा समारोह के अवसर पर यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना में पदस्थ राजभाषा प्रभारी, डॉ. विजय कुमार पाण्डेय को अपने कर-कमलों से राजभाषा शिखर सम्मान प्रदान करते हुए माननीय उप मुख्यमंत्री, बिहार श्री तारकिशोर प्रसाद एवं जगदंबी यादव स्मृति संस्थान एवं अंतर्राष्ट्रीय हिंदी परिषद के अध्यक्ष, श्री वीरेन्द्र कुमार यादव तथा साथ में अन्य गण-मान्य जन.

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दि. 02 अगस्त, 2021 से 01 सितंबर, 2021 के दौरान 'स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' के माध्यम से' आयोजित अनुवाद प्रतियोगिता में बैंक के राजभाषा अधिकारियों को 'प्रशस्ति पत्र' प्राप्त हुआ

जांचकर्ता श्रेणी

सुधीर प्रसाद, के.का.मुंबई

अनुवादक श्रेणी

अमित महतो, के.का.मुंबई

राष्ट्रीय आवास बैंक की गृह पत्रिका 'आवास भारती' के 80वें अंक के लिए अखिल भारतीय स्तर पर आमंत्रित निबंध/आलेख में श्री दीपक कुमार, सहायक प्रबन्धक (राजभाषा), स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ.

दि. 18.12.2021 को डिब्रूगढ़ में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मलेन के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सुश्री अंशुलि आर्या, सचिव (राजभाषा) डॉ. मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, (राजभाषा), गृह मंत्रालय, भारत सरकार एवं श्री एस के गोयल, प्रबंध निदेशक, यूको बैंक की उपस्थिति में बैंक को प्राप्त पुरस्कार

पूर्वी क्षेत्र अंतर्गत 'क' क्षेत्र में वर्ष 2017-18 हेतु तृतीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री विनोद पटनायक, क्षे.म.प्र.का.रांची एवं श्री राजेश कुमार, प्रबंधक (राभा).

पूर्वी क्षेत्र अंतर्गत 'ग' क्षेत्र में वर्ष 2017-18 एवं वर्ष 2018-19 के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए, श्री अमरेन्द्र कुमार झा, महाप्रबंधक, क्षे. म.प्र.का, कोलकाता एवं सुश्री श्वेता कुमारी, प्रबंधक (राभा).

पूर्वी क्षेत्र अंतर्गत 'क' क्षेत्र में वर्ष 2018-19 हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए, श्री विनोद पटनायक, महाप्रबंधक, क्षे.म.प्र.का.रांची एवं श्री सावन सौरभ, प्रबंधक (राभा).

पूर्वी क्षेत्र अंतर्गत 'ग क्षेत्र में वर्ष 2017-18 हेतु द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए, श्री रमाकांत प्रधान, महाप्रबंधक, क्षे.म.प्र.का. भुवनेश्वर एवं श्री अखिलेश कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राभा).

पूर्वी क्षेत्र अंतर्गत 'क' क्षेत्र में वर्ष 2017-18 एवं वर्ष 2019-20 हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए, श्री अजय बंसल, क्षेत्र प्रमुख, क्षे.का. पटना एवं डॉ. वि. के. पांडेय, प्रबंधक (राभा).

पूर्वी क्षेत्र अंतर्गत 'ग' क्षेत्र में वर्ष 2018-19 हेतु द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री तपन कुमार साहू, क्षेत्र प्रमुख, सम्बलपुर.

दि. 27.11.2021 को कानपुर में आयोजित राजभाषा समारोह में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु वित्त वर्ष 2018-19 एवं 2019-20 के लिए गृह राज्यमंत्री माननीय अजय मिश्रा एवं गृह राज्यमंत्री माननीय नित्यानंद राय द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्र प्रमुख गाजीपुर, श्री कमलेश प्रसाद सिंह एवं राजभाषा अधिकारी श्री किशोर कुमार.

दि. 22.12.2021 को नराकास कण्णूर की अर्धवार्षिक बैठक में कण्णूर शाखा को वर्ष 2020-21 हेतु राजभाषा कार्यान्वयन में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया. श्री टी शिवदास, मुख्य प्रबंधक, कण्णूर शाखा ने नराकास के अध्यक्ष से शील्ड स्वीकार किया. अध्यक्ष नराकास के साथ, सदस्य सचिव श्री राजेश के, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा).

सॉरी-सर

हल्की- हल्की ठंड पड़नी शुरू हो चुकी थी, दीपावली अभी-अभी घर से होकर गयी थी. जेब और बारिश दोनों खाली हो चुके थे, लेकिन पत्नी को उसके पैतीसवें जन्मदिन पर मसूरी घुमाने का वादा कर चुके थे, समझ नहीं आ रहा था कैसे? बच्चा भी अभी सात महीने का ही है, ऑफिस से छुट्टी मिलना भी मुश्किल लग रहा था. यह सब सोचते-सोचते शर्मा जी के हाथ से चाय का कप छूट गया, मगर हाथ जला नहीं, क्योंकि चाय ठंडी हो चुकी थी. मिसेज शर्मा ने आकर फर्श पर गिरी हुई चाय तो साफ कर दी, मगर शर्मा जी से ये तक नहीं पूछा कि चाय से जले तो नहीं क्योंकि उनको लग रहा था कि शर्मा जी ने चाय जानबूझ कर अपने ऊपर गिरा ली होगी, जिस से यह संदेश जाये कि मसूरी जाने के खर्च के बारे में सोचते हुए उनको कुछ होश ही नहीं रहा और नुकसान कर बैठे. वो सुना है ना- इमोशनल ब्लैकमेलिंग. मगर मिसेज शर्मा के ऊपर अपने पति के इस पैतरे का असर नहीं पड़ना था क्यूंकि शर्मा जी ने खुद ही वादा किया था घुमाने का. ये पत्नियाँ भी ना कभी-कभी बहुत पत्थर दिल हो जाती है,पति को कितनी मुश्किल होती है सब व्यवस्थित करने में उससे इनको कोई फर्क नहीं पड़ता. वैसे एक बात कहूँ- शर्मा जी ने सच में चाय गिरने की एक्टिंग की थी इमोशनल ब्लैकमेल करने के लिए, वरना चाय गरम ना होती?

खैर पत्नी ना मानी तो चल पड़े. मुझे फोन किया कि मंगलवार को गाड़ी ले आना 4-5 दिन के लिए मसूरी चलना है, अब मेरी क्या ज़रूरत? मैं कौन? अरे मैं वही हूँ- ट्रैवल एजेंसी में काम करने वाला ड्राइवर जो तोता-मैना की इस जोड़ी को कई सफर में झेल चुका है. मन तो नहीं था पर दिवाली के बाद मेरी जेब भी खाली हो गयी थी तो चल पड़े पहाड़ों की तरफ. देहरादून से थोड़ा आगे मलसी से ही ठंड का एहसास होने लगा था, मसूरी पहुँचते-पहुँचते ठीक-ठाक ठंड शुरू हो गयी थी. शाम हो चुकी थी होटल में चेक-इन कर लिया था. और मैं होटल की पार्किंग में अपनी गाड़ी, जो कि मेरा चलता- फिरता घर थी उसी में आराम करने लगा.

अगली सुबह ठंडे पहाड़ों से टकरा कर जब सूरज की किरणें गाड़ी के शीशों को चीरती हुई जब मुझ पर पड़ीं तो आँख खुल गयी. जल्दी से तैयार हुआ. ठीक 10 बजे शर्मा परिवार नीचे आया और हम सब कैंपटी- फ़ॉल्स की तरफ निकल पड़े. लगभग 1 घंटे के सफर के दौरान सात माह के छोटे शर्मा ने रो-रो कर आफत मचा दी सारा दिन हम लोग कैंपटी- फ़ॉल्स और आस-पास के इलाकों में घूमते रहे. एक बात तो आपको बताना भूल ही गया, मैं केवल ड्राइवर ही नहीं था, बल्कि बीच-बीच में फोटोग्राफर और बेबी-सिटर का रोल भी निभा रहा था. मियां-बीबी मुझे बच्चा पकड़ा कर पहाड़ों की तरफ देखते हुए खो जाते थे और छोटा बच्चा मेरी नाक में दम कर देता था. शाम तक यूं ही चलता रहा. 4 बजे वापस होटल के लिए निकल पड़े. क्योंकि थोड़ी देर आराम करके रात्रि 8:30 बजे से मसूरी की मॉल-रोड पर रात्रि-भ्रमण का कार्यक्रम था.

रात्रि का भोजन करके हम चारों लोग निकल पड़े मॉल-रोड पर. आप में से जो लोग भी मसूरी गए होंगे वो अच्छी तरह से जानते होंगे कि मसूरी में रात्रि-भ्रमण करना वो भी मॉल-रोड पर कितना रोमांचक होता है. हम लोग पिक्चर पैलेस चौक की तरफ से चले थे और लाइब्रेरी चौक तक चलकर फिर वापस भी आना था. मैं तो कई बार टूरिस्टों को लेकर मसूरी आ चुका था मगर मुझे भी यह जगह अच्छी लगती थी तो मैं भी साथ-साथ ही चल रहा था, रास्ते में रुक-रुक कर फोटो ले रहा था मगर मैंने इस बार बच्चा पकड़ने से साफ मना कर दिया था. वो लोग आनंद लेने के लिए आए थे और छोटा बच्चा गोद में लेकर ढलानों और चढ़ावों पर चलने से थकान होना पक्का था, उनको समझ नहीं आ रहा था कि क्या किया जाये. थोड़ी दूर आगे बढ़े ही थे कि अचानक एक जगह पर सड़क के किनारे तीन-चार बच्चा गाडियाँ खड़ी दिखाई दीं, हर गाड़ी पर एक-एक स्लिप चिपकी थी जिस पर लिखा था- 1 घंटे का 100 रूपये. शर्मा जी की नज़र उन गाड़ियों पर पड़ी, उन्होंने गाड़ियों के मालिक से बात की, और एक बच्चा गाड़ी-बुक कर ली. यहाँ पर एक खास बात यह थी कि बच्चा गाड़ियों का मालिक तो उम्रदराज था, लेकिन बच्चा गाड़ी को पकड़ कर चलने वाले जो उसके नौकर थे, उनमें से किसी की भी उम्र 10 वर्ष से ज्यादा नहीं लग रही थी. व्यक्ति ने घड़ी में टाइम देखकर 9 बजकर 10 मिनट पर 9 साल के जीतू को बच्चा गाड़ी की ज़िम्मेदारी देकर हम लोगों के साथ भेज दिया. शर्मा दंपति को

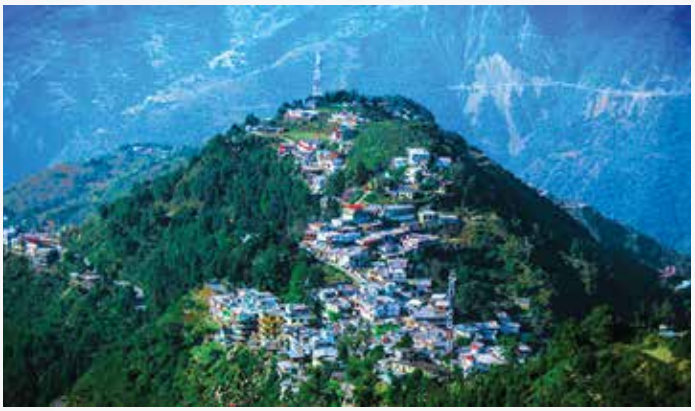

तो जैसे भगवान मिल गया हो, उन्होंने पूरी तरह से छोटे बच्चे को जीतू के हवाले कर दिया, मुझसे नज़र रखने को कहा और दोनों लोग एक-दूसरे की बाहों में बाहें डालकर मसूरी के रात्रि-भ्रमण का मज़ा लेने लगे. वो लोग हम तीन लोगों से थोड़ा आगे चल रहे थे, बीच में दोनों बच्चे और सबसे पीछे मैं चल रहा था, मुझे 'नज़र' जो रखनी थी. छोटे शर्मा के दाहिने हाथ में एक गुब्बारा बांध दिया गया था और दूसरे हाथ में मुँह में घुल जाने वाली चॉकलेट पकड़ा दी गयी थी, जिससे कि वो रोये नहीं, जब गुब्बारा और चॉकलेट दी जा रही थी तो जीतू ही दोनों चीजों को व्यवस्थित कर रहा था, एक तरह से वो छोटे बच्चे के बड़े भाई की भूमिका में था, वो बड़ा भाई जो खुद अभी केवल 9 साल का था.

मैंने देखा मॉल रोड पर जगह-जगह ऐसी बच्चा- गाड़ियों की टोलियाँ खड़ी थीं जीवन-यापन के लिए. बहुत ढूंढ़ा मगर कोई भी बच्चा गाड़ी चालक 10 वर्ष से ज्यादा का नहीं मिला. मन नहीं माना तो एक जगह रुक कर पूछताछ की तो पता चला कि वो सभी बच्चे दूर दराज़ के पहाड़ी इलाकों से आए थे, घर में आर्थिक तंगी की वजह से कम उम्र में उन्हें यह कार्य करना पड़ रहा था. जब जीतू से पूछा तो उसने बताया कि उसके पिता एक बिस्कुट बनाने वाली कंपनी में काम करते थे, किसी बीमारी की वजह से उनकी मृत्यु हो गयी थी, सो घरखर्च में माँ का हाथ बंटाने के लिए वो यह कार्य करता था, उसको 1 घंटे के 100 रुपये मिलते थे, 30 रुपए कमीशन उसका मालिक रख लेता था और पूछने पर उसने बताया कि उसके ग्रुप के कुछ बच्चे स्कूल जाते थे कुछ नहीं जाते थे, जो स्कूल जाते भी थे वो भी रोज़ नहीं जा पाते थे. 9-10 साल के इन बच्चों को देखकर मन व्यथित हो उठा था. मसूरी की सड़कों पर ये बच्चे उन दंपतियों के छोटे बच्चों के सारथी बने थे, जो हमारे तथा-कथित संभ्रांत और संस्कारी समाज के ठेकेदार बनने की वाह-वाही में रहने वाले लोग थे. कुछ दंपत्तियाँ तो ऐसी भी होंगी, जो समाज-सेवा, मानवाधिकार आदि के लिए काम करने वाले लोग होंगे. सफर का असली रस अब आया था.

'बच्चा-गाड़ी' आगे बढ़ चली थी. छोटा बच्चा चाकलेट और गुब्बारे की मस्ती में अपने छोटे से मुंह से कुछ गुनगुना रहा था, और उसके माता-पिता इससे बेखबर अपने 'सेलिब्रेशन' में मस्त थे. बीच-बीच में वो छोटे शर्मा को कुछ-न-कुछ खरीद कर दे रहे थे, बच्चा गाड़ी खिलौनों और खाने-पीने कि चीजों से भर गयी थी, उन खिलौनों और चीजों को देखकर ही जीतू भी अपना मन भर ले रहा था और मेरी भी आंखे भर आयीं थीं, क्योंकि मैं 'नज़र' रख रहा था.

चलते-चलते एक बेकरी दिखाई पड़ी, उसमें से आधा किलो का एक फ्रूट-केक खरीदा गया, बेकरी के सामने सड़क के उस पार बैठने वाली एक सीट पड़ी थी, जिसका मुंह घाटी की तरफ था. सीट पर बैठ कर रात्रि में ऊँचाई से घाटी की तरफ देखने पर देहरादून शहर रोशनी से झिलमिलाता हुआ दिखाई देता था- यही सबसे सही जगह लगी केक कटिंग करने के लिए. केक को सीट पर रखा गया, शर्मा जी ने गुलाब का एक फूल पत्नी को देते हुए अपने असीम प्रेम का इज़हार किया, पत्नी ने केक काटा, मैंने और जीतू ने तालियाँ बजाईं, छोटा बच्चा गुनगुनाता रहा, घाटी की तरफ से आने वाली सर्द हवा ने गुलाब के फूल की दो-चार पत्तियाँ गिरा दीं, मौसम में खुशबू भी घुल गयी. कैमरे से इन पलों की तस्वीरें ली गईं, सेलिब्रेशन हो रहा था, शर्मा दंपति झिलमिलाते देहरादून का मज़ा ले रहे थे, तभी छोटे बच्चे की ज़ोर से रोने की आवाज़ सुनाई पड़ी. शर्मा जी ने पीछे घूम के देखा तो उसकी बच्चा गाड़ी से जीतू ने एक खिलौना कौतूहलवश उठा लिया था और वह उस खिलौने को देख रहा था, अपना खिलौना जीतू के हाथों में देखकर छोटा बच्चा रोने लगा था. इतना देखते ही शर्मा जी आगबबूला हो गए, जीतू को ज़ोर से एक चांटा लगा दिया. जीतू की आँखें छलछला आयीं. शर्मा जी ने गुर्राते हुए कहा- ''तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे बच्चे के खिलौने से खेलने की? तुमने रुला दिया बच्चे को.... और भी बहुत कुछ. जीतू ने हाथ जोड़कर माफी मांगते हुए अपनी थोड़ी तुतलाती-थोड़ी लड़खड़ाती हुई ज़ुबान से डरते हुए कहा - 'सॉरी-सर.

जन्मदिन मुबारक हो चुका था.

राजीव यादव
क्षे. का., लखनऊ

तेलंगाना की प्रसिद्ध हस्तियां

अपनी असाधारण सुंदरता के अलावा, तेलंगाना राज्य कई राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हस्तियों की जन्म भूमि अथवा कर्मभूमी रही है. हम इस लेख में आपसे तेलंगाना के सभी क्षेत्रों की विशिष्ट हस्तियाँ जैसे की राजनैतिक, समाज सुधारक, फिल्म कलाकार, अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी आदि से आपका परिचय कराना चाहते हैं, जैसे कि जाकिर हुसैन, पीवी नरसिम्हा राव, कालोजी नारायण राव, रानी रुद्रमा देवी, सिंगीरेड्डी नारायण रेड्डी, चकली इलम्मा, शबाना आजमी, दिया मिर्ज़ा, मोहम्मद अजहरुद्दीन, पी.वी.सिंधु आदि ये सभी उन सम्मानित हस्तियों में से एक हैं जिन पर भारत को व तेलंगाना को गर्व है.

जाकिर हुसैन:- जाकिर हुसैन खान एक भारतीय अर्थशास्त्री और राजनीतिज्ञ थे, जिन्होंने 13 मई 1967 से 3 मई 1969 को अपनी मृत्यु तक भारत के तीसरे राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया. उन्होंने 1957 से 1962 तक बिहार के राज्यपाल और 1962 से 1967 तक भारत के उपराष्ट्रपति के रूप में कार्य किया. आपका जन्म 8 फरवरी 1897 में हैदराबाद, तेलंगाना के धनी पठान परिवार में हुआ था कुछ समय बाद उनके पिता उत्तर प्रदेश रहने आ गये थे, जाकिर जी 23 वर्ष की अवस्था में जामिया मिल्लिया इस्लामिया के सह-संस्थापक सदस्यों में से एक थे, उन्होंने 1928 के बाद जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति के रूप में कार्य किया. हुसैन जामिया भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के साथ निकटता से जुड़े हुए थे. 1963 में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया. वह भारत के पहले मुस्लिम राष्ट्रपति थे, और पद पर मरने वाले पहले भारतीय राष्ट्रपति थे.

पीवी नरसिम्हा राव:- पामुलापर्थी वेंकट नरसिम्हा राव एक राजनेता थे जिन्होंने 1991 से 1996 तक भारत के 9वें प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया. इनका जन्म 28 जून 1921 को करीम नगर जिले में हुआ. वे पेशे से कृषि विशेषज्ञ एवं वकील थे. प्रधान मंत्री पद के लिए उनका प्रभुत्व राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण था क्योंकि वे एक गैर-हिंदी भाषी प्रांत से उस कार्यालय के दूसरे अधिकारी थे और दक्षिण भारत से पहले. उन्होंने प्रमुख आर्थिक सुधारों और भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करने वाली कई घरेलू घटनाओं की देखरेख करते हुए सरकार का नेतृत्व किया. राव को अक्सर संसद के माध्यम से आर्थिक और राजनीतिक कानून को निर्देशित करने की उनकी क्षमता के लिए चाणक्य के रूप में जाना जाता था.

उन्होंने भारत के गृह मंत्री, रक्षा मंत्री, विदेश मंत्री के रूप में भी कार्य किया. श्री राव भारतीय दर्शन, कथा साहित्य, संगीत, सिनेमा एवं हिन्दी में कविता लिखने में रुचि रखते थे. उन्होंने स्वर्गीय श्री विश्वनाथ सत्यनारायण के प्रसिद्ध तेलगु उपन्यास 'वे ई पदागालू' का हिंदी में अनुवाद 'सहस्त्रफन' के नाम से किया. वे कई पदों पर रहे. वर्ष 1972 से मद्रास के दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के उपाध्यक्ष के रूप में वे हिन्दी की सेवा करते रहे.

चित्याला अलिम्मा:- चित्याला अलिम्मा, जिसे चकली अलिम्मा के नाम से जाना जाता है, तेलंगाना विद्रोह के दौरान भारत की एक राजनीतिक नेत्री थी. अपनी जमीन पर खेती करने के लिए विन्नूर देशमुख के नाम से जाने जाने वाले जमींदार रामचंद्र रेड्डी के खिलाफ उनकी अवज्ञा का कार्य, तेलंगाना क्षेत्र के सामंती प्रभुओं के खिलाफ विद्रोह के दौरान कई लोगों के लिए प्रेरणा था. 1940 और 1944 के बीच, इलम्मा ने देशमुख और विष्णुर में जाकर अशांति की ओर लाल झंडा उठाया. वह आंध्र महासभा और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गईं. उसने निज़ाम प्रशासन के खिलाफ जोरदार अभियान चलाया. उसका घर निज़ाम के साथ गठबंधन करने वाले सामंती जमींदारों के खिलाफ गतिविधि का केंद्र था. यह तेलंगाना इतिहास में अत्यंत प्रेरक चरित्र के रूप में विख्यात हैं.

सी. नारायण रेड्डी:- सी. नारायण रेड्डी जिनका पूरा नाम सिंगीरेड्डी नारायण रेड्डी है. यह तेलुगु भाषा के भारतीय कवि और पत्रकार थे. रेड्डी ने कविता, गद्य नाटक, गीतात्मक नाटक, अनुवाद और ग़ज़ल सहित अस्सी से अधिक साहित्यिक कृतियों का निर्माण किया. वह विद्वान, गीतकार, अभिनेता और राजनीतिज्ञ भी थे. रेड्डी को उनके साहित्यिक कार्यों के लिए कई पुरस्कार मिले हैं. रेड्डी को 1978 में आंध्र विश्वविद्यालय द्वारा कला प्रपूर्ण मानद पुरस्कार, 1982 में सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार और 1988 में श्री राजा-लक्ष्मी फाउंडेशन द्वारा राजा-लक्ष्मी पुरस्कार, पोट्टी श्रीरामुल तेलुगु विश्वविद्यालय द्वारा विशिष्ट पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था. भारत सरकार ने उन्हें चौथे और तीसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान, पद्म श्री (1977) और पद्म भूषण (1992) से सम्मानित किया है.

रुद्रम्मा देवी:- रुद्रम्मा देवी अपनी मृत्यु तक 1263 से 1289 (या 1295) तक दक्कन के पठार में काकतीय वंश की शासक थीं. इनका जन्म काकतीय राजवंश में हुआ इनके पिता गणपती देव थे गणपती देव के कोई पुत्र संतान

नहीं थी. उस समय दक्षिण के सभी राज्यों में पुरुष शासकों का शासन रहता था अत: गणपती देव को अपने राज्य के भविष्य की चिंता रहती थी इस कारण से उन्होंने एक पुत्र की भाँति रुद्रमा देवी का लालन-पालन किया जब उन्होंने शासन संभाला तब इनकी आयु 14 वर्ष थी. उन्होंने छोटी सी उम्र में यह सीख लिया था कि शासन-प्रशासन कैसे संभाला जाये किस प्रकार प्रजा की समस्या को समझा जाये व किस प्रकार उनका हल निकाला जाये काकतीय साम्राज्य के सभी शत्रुओं ने एक बार योजना बनाकर एक साथ राज्य पर आक्रमण किया किन्तु रुद्रम्मा देवी ने अपने साहस व बुद्धिमत्ता का भली-भांति परिचय दिया. अपने सभी दुश्मनों का उन्होंने पूरी शक्ति से सामना किया और एक रानी के रूप में उन्होंने अपने आप को कुशल शासक बनाया. उनके शासन काल को आंध्र इतिहास में एक स्वर्णिम काल के रूप में देखा गया. इन्होंने ओरगलू किले का निर्माण करवाया व कुछ इतिहासकारों का मानना है कि हैदराबाद के प्रसिद्ध गोलकोंडा किले का निर्माण का आरंभ भी इनके ही हाथों से किया गया था.

भारत में राजाओं के रूप में शासन करने वाली बहुत कम महिलाओं में से एक थीं. एक स्त्री होते हुए भी उन्होंने काकतीय राजवंश की रक्षा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी. रुद्रम्मा देवी ने लगभग 1240 में चालुक्य वंश की एक छोटी शाखा के सदस्य वीरभद्र से विवाह किया. यह विवाह पूर्ण रूप से गठबंधन बनाने के लिए उनके पिता द्वारा प्रायोजित एक राजनीतिक विवाह था. वीरभद्र के साथ उनका विवाह व्यावहारिक रूप से सफल नहीं रहा उन्होंने रुद्रम्मा देवी को उनका शासन संभालने में कोई सहयोग नहीं किया अत: वीरभद्र की प्रशासन में कोई भूमिका नहीं रही. रानी रुद्रम्मा देवी के जीवन से प्रेरित होकर तेलुगू फिल्म निर्देशक गुणासेखर ने एक फिल्म 'रुद्रम्मा देवी' बनाई जो कि बहुत ही सफल फिल्म रही इस फिल्म ने 90 करोड़ रु.का व्यापार किया.

कालोजी नारायण राव:- कालोजी नारायण राव एक भारतीय कवि, स्वतंत्रता सेनानी, फासीवाद-विरोधी और तेलंगाना के राजनीतिक कार्यकर्ता थे. 1992 में उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया. तेलंगाना सरकार के निर्देश अनुसार प्रतिवर्ष 9 सितंबर को कालोजी जी के जन्मदिन को तेलंगाना भाषा दिवस के रूप में मनाया जाने लगा व इनके नाम पर तेलंगाना सरकार ने एक मेडिकल विश्वविद्यालय का नाम इनके नाम पर रखा.

सी एच हनुमंथा राव :- 15 अगस्त 1929 को करीमनगर में जन्मे भारत के महान अर्थशास्त्री का जन्म हुआ ये पद्म भूषण से सम्मानित और राष्ट्रीय सलाहकार समिति के सदस्य रहे. इन्होंने राष्ट्रीय सूखा प्रभावित सुनियोजन कार्यक्रम में मुख्य भूमिका निभाई.

शबाना आजमी :- शबाना आजमी एक भारतीय फिल्म, टेलीविजन और थिएटर अभिनेत्री हैं. कवि कैफ़ी आज़मी और मंच अभिनेत्री शौकत आज़मी की बेटी हैं, शबाना आजमी का जन्म हैदराबाद में 18 सितंबर 1950 को हुआ वह पुणे में भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान की छात्रा रही हैं. आज़मी ने 1974 में अपनी फ़िल्मी शुरुआत 'अंकुर' फिल्म से की और जल्दी ही समानांतर सिनेमा के प्रमुख सितारों में से एक बन गई, उस समय रूपहले पर्दे पर गंभीर फिल्मों का एक दौर चला जो की मनोरंजक के होने साथ-साथ कलात्मक रूप में अधिक सृजनात्मक थी वे फिल्में अपनी गंभीर सामग्री और नव-यथार्थवाद के लिए विख्यात थी, उस समय उन्होंने सभी दर्शकों का समर्थन इन फिल्मों में प्राप्त किया. इन फिल्मों के कारण उन्हें भारत की बेहतरीन अभिनेत्री के रूप में पहचाना जाने लगा. शबाना जी की विभिन्न शैलियों में फिल्मी उपलब्धियों ने आम तौर पर उनकी खास पहचान बनाई और इस वजह से उन्होंने कई पुरस्कार भी जीते हैं, जिसमें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए कुल पांच राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार शामिल हैं. उन्हें प्राप्त फिल्मफेयर पुरस्कारों की संख्या एक दो नहीं पूरी 5 है. वर्ष 1988 में उन्हें भारत सरकार ने 'पद्म श्री' से भी सम्मानित किया.

दीया मिर्जा :- दीया मिर्जा एक भारतीय मॉडल, अभिनेता, फिल्म निर्माता और सामाजिक कार्यकर्ता हैं जो ज्यादातर हिंदी फिल्मों में काम करती हैं. इनका जन्म 9 दिसंबर 1981 को हैदराबाद में हुआ था. उन्होंने 2 दिसंबर 2000 को मनीला, फिलीपींस में 'मिस एशिया पैसिफिक इंटरनेशनल' का खिताब जीता. इसी समारोह में उन्होंने दो पुरस्कार और अर्जित किये पहला था "मिस ब्युटीफूल स्माइल एवं दूसरा "द सोनी विऊअर्स चॉइस अवार्ड" इसके बाद उन्होंने रहना है तेरे दिल में (2001) से अभिनय की शुरुआत की. इसके बाद, उन्होंने दस (2005), लगे रहो मुन्नाभाई (2006) और संजू (2018) जैसी फिल्मों में अभिनय किया. वह अपने पूर्व पति साहिल संघ के साथ प्रोडक्शन हाउस, बॉर्न फ्री एंटरटेनमेंट की सह-मालिक थीं. उनकी पहली फिल्म, लव ब्रेकअप ज़िन्दगी, 7 अक्टूबर, 2011 को रिली. ज हुई थी., उन्होंने दिसंबर 2019 में अपनी खुद की प्रोडक्शन कंपनी, 'वन इंडिया स्टोरीज़' की स्थापना की.

प्रसिद्ध हस्तियाँ की सूची अभी बहुत लम्बी है किंतु लेख में शब्दों की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए यहीं विराम देते हैं.

जगमोहन दुबे
क्षे. का. ग्वालियर

अखिल भारतीय राजभाषा समीक्षा-सह-आयोजना बैठक, 2021

अखिल भारतीय राजभाषा समीक्षा सह आयोजना बैठक का आयोजन दि. 06-07 दिसंबर, 2021 स्टा.प्र.भ. बेंगलूरु में किया गया. जिसमें 117 राजभाषा प्रभारियों ने भाग लिया. सम्मेलन का उद्घाटन, मुख्य महाप्रबंधक (मासं) श्री चन्द्र मोहन मिनोचा द्वारा किया गया. इस अवसर पर श्री चन्द्र मोहन रेड्डी, क्षेत्र महाप्रबंधक, क्षे.म.प्र.का. बेंगलूरु; श्री हृषीकेश मिश्र, प्राचार्य व उप महाप्रबंधक, स्टा. प्र.भ. बेंगलूरु; श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक (मासं); श्री नवल किशोर दीक्षित, सहायक महाप्रबंधक (राभा) एवं डॉ. सुलभा कोरे, संपादक यूनियन धारा/सृजन उपस्थित रहे.

मुख्य महाप्रबंधक (मासं) महोदय के कर कमलों से विभिन्न क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालयों व क्षेत्रीय कार्यालयों की गृह पत्रिकाओं का विमोचन किया गया तथा भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित कंठस्थ प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये.

मुख्य महाप्रबंधक के आरंभिक संबोधन के पश्चात समीक्षा बैठक की प्रस्तावना मदों पर चर्चा व इनका पुष्टिकरण किया गया. बैंक की वार्षिक कार्य योजना 2021-22 पर कार्य निष्पादन की चर्चा पावर पॉइंट के माध्यम से की गई एवं सभी राजभाषा अधिकारियों को महत्वपूर्ण मदों पर उचित सलाह दी गई इसके बाद क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालयवार व क्षेत्रवार समीक्षा की गई, समीक्षा में वार्षिक कार्ययोजना के लक्ष्यों व उपलब्धियों पर ध्यान आकर्षित करते हुए कमियों पर सुधार के लिये आवश्यक सुझाव व निर्देश दिये गये.

कार्यक्रम के दूसरे दिन दि. 07.12.2021 को श्री भीम सिंह उप निदेशक (राभा), भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली पर सत्र लिया गया.

कार्यक्रम के समापन सत्र में श्री मानस रंजन बिस्वाल, कार्यपालक निदेशक द्वारा आंतरिक राजभाषा शील्ड वित्तीय वर्ष 2018-19, 2019-20 एवं 2020-21 के अंतर्गत कुल 27 विजेता क्षेत्रीय कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों को राजभाषा शील्ड व प्रमाण पत्र प्रदान किये गये एवं बैंकिंग विषय पर प्रकाशित हिन्दी पुस्तक 'एमएसएमई के विविध आयाम' का विमोचन किया गया.

दि. 18.12.2021 को डिब्रूगढ़ में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मलेन के दौरान यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया. सुश्री अंशुलि आर्या, सचिव (राभा,) भारत सरकार, गृह मंत्रालय एवं श्री एस के गोयल, प्रबंध निदेशक, यूको बैंक का स्वागत करते हुए स्टाफ सदस्य.

दि. 04.12.2021 को हैदराबाद में आयोजित दक्षिण एवं दक्षिण - पश्चिम क्षेत्रों के संयुक्त राजभाषा सम्मेलन में न.रा.का.स. (बैंक), विशाखपट्टणम संयोजक यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की अर्ध वार्षिक गृह पत्रिका 'विशाखा वाहिनी' का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग; डॉ. दिनेश श्रीवास्तव, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, परमाणु ऊर्जा विभाग; श्री. बी. एल. मीना, निदेशक, राजभाषा विभाग.

दि. 29.12.2021 को पुणे बैंक नराकास की 62 वीं छमाही बैठक में क्षे.का. पुणे (पश्चिम) की गृहपत्रिका 'यूनियन यमाई' के प्रथम अंक का विमोचन किया गया. इस अवसर पर डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्या, उपनिदेशक (का.) भारत सरकार, गृह मंत्रालय, श्री राजेश कुमार, नराकास अध्यक्ष, महाप्रबंधक; श्री ए एस पिल्लई, महाप्रबंधक, कृषि महाविद्यालय; डॉ. राजेन्द्र वर्मा, हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, डॉ राजेन्द्र श्रीवास्तव, सहा. महाप्रबंधक के साथ श्री राजीव पटनायक, पुणे अंचल प्रमुख, सुश्री शारदा मूर्ति, क्षेत्र प्रमुख, पुणे (पश्चिम) उपस्थित रहे.

दि. 28.12.2021 को श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहा. निदेशक (का.) भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा क्षे.का. कानपुर का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया. इस अवसर पर क्षेत्र प्रमुख, श्री संजीव कुमार; उप क्षेत्र प्रमुख, श्री पीयूष पांडे; राजभाषा प्रभारी, सुश्री प्रेमा पाल; नराकास (बैंक) कानपुर सदस्य सचिव, श्री मानसिंह (पीएनबी) सहित कार्यालय के समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

बैंक नराकास, मुंबई की छमाही बैठक के दौरान क्षे.का., मुंबई (दक्षिण) द्वारा महाराष्ट्र स्टाम्प अधिनियम 1958 के अनुसार दस्तावेज वार स्टाम्प ड्यूटी विषय पर प्रकाशित संदर्भ साहित्य का विमोचन करते हुए डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य, उपनिदेशक (का.) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, मुंबई, भारत सरकार, गृह मंत्रालय. इस अवसर पर श्री गोविंद कुमार झा, क्षेत्र प्रमुख, मुंबई (दक्षिण); श्री नवल किशोर दीक्षित, सहायक महाप्रबंधक, (राभा.), कें.का., मुंबई तथा श्री सुधाकर खापेकर, वरिष्ठ प्रबंधक (राभा.), क्षे.म.प्र.का., मुंबई.

दि. 21.10.2021 को दुर्गापुर क्षेत्राधीन, बोलपुर शांतिनिकेतन शाखा का श्री निर्मल कुमार सहा. निदेशक (का.) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र), भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा विषयक निरीक्षण किया.

दि. 24.12.2021 को दुर्गापुर क्षे.का. का श्री निर्मल कुमार सहा. निदेशक (का.) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र), भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया.

दि. 02.12.2021 को क्षे.का. कटक के राजभाषा निरीक्षण के दौरान श्री निर्मल कुमार सहा. निदेशक (का.) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र), भारत सरकार, गृह मंत्रालय का स्वागत करते हुए क्षेत्र प्रमुख कटक, श्री राज कुमार एवं साथ में उप क्षेत्र प्रमुख, श्री सुशांत कुमार नायक.

दि. 22.12.2021 को क्षे.का. भुवनेश्वर द्वारा नराकास के तत्वावधान में सभी सदस्य बैंकों के राजभाषा अधिकारियों के लिए संसदीय प्रश्नावली विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया. संगोष्ठी में उपस्थित श्री आलोक चतुर्वेदी, सदस्य-सचिव, श्री धनंजय कुमार, सहायक महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक. साथ में श्री सोवन सेनगुप्ता, क्षेत्र प्रमुख, भुवनेश्वर. इस अवसर पर क्षे.का.भुवनेश्वर की गृह पत्रिका 'यूनियन उत्कल धारा' के सितंबर 2021 अंक का विमोचन भी किया गया.

दि. 15.12.2021 को कोलकाता अंचल के अधीन सभी क्षेत्र प्रमुखों की क्रेडिट समीक्षा बैठक के अवसर पर क्षे.का. हावड़ा की गृहपत्रिका 'यूनियन सागर' का विमोचन श्री अमरेन्द्र कुमार, क्षेत्र महाप्रबंधक, कोलकाता; श्री वलेरीयन क्यास्टलिनो, उप अंचल प्रमुख; श्री मयंक भारद्वाज, क्षेत्र प्रमुख हावड़ा; श्री बरुन कुमार, क्षेत्र प्रमुख कोलकाता मेट्रो; श्री अमित कुमार सिन्हा, क्षेत्र प्रमुख (ग्रेटर) कोलकाता सुश्री प्रतिभा पाण्डेय, क्षेत्र प्रमुख दुर्गापुर एवं अंचलीय कार्यालय के अन्य कार्यपालकों के कर-कमलों से किया गया.

दि. 28.12.2021 को नराकास (बैंक), बेंगलूरु की अर्धवार्षिक बैठक में क्षे.म.प्र.का.बेंगलूरु की पत्रिका 'यूनियन कावेरी' के नवीनतम अंक का विमोचन श्री एल.वी. प्रभाकर, प्रबंध निदेशक व सीईओ, केनरा बेंक; श्री एस.शंकर, मुख्य महाप्रबंधक (मासं); श्री एच.एम. बसवराज, उप महाप्रबंधक (राभा) एवं नराकास, सदस्य सचिव; श्री हृषीकेश मिश्र, प्राचार्य, स्टा.प्र.म. बेंगलूरु की भौतिक तथा श्री डी.चंद्रमोहन रेड्डी, क्षे.म.प्र.का. बेंगलूरु की वर्चुअल उपस्थिति में किया गया.

दि. 24.11.2021 को क्षे.का. कोषिक्कोड में उप शाखा प्रमुखों हेतु ऑनलाइन हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. जिसमें मुख्य अतिथि एवं संकाय के रूप में, श्री संतोष कुमार, सहायक निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना, भारत सरकार, गृह मंत्रालय ने भाग लिया. कार्यशाला का उद्घाटन श्री टी ए नारायणन, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया. साथ में उपस्थित है, श्री नरसिंह कुमार आर, उप क्षेत्र प्रमुख एवं श्री राजेश के, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा.

दि. 29.10.2021 को नराकास (बैंक व बीमा), कोच्चि संयोजक यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की 66वीं अर्ध वार्षिक ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई.

गंभीर बीमारियों को दूर करती है, ये काली चीजें

कैंसर का खतरा कम करें काले अंगूर

काले अंगूर में मौजूद पोषक तत्व, एंटी ऑक्सीडेंट, एंटी बेक्टेरियल गुण शरीर की कोशिकाओं को नुकसान होने से बचाते है. ये कैंसर, डाईबीटीज़, अल्जाइमर व दिल संबंधी बीमारियों की चपेट में आने का खतरा कई गुना कम कर देते है. साथ ही इम्यूनिटी बढ़ाते हैं.

दिल का ख्याल रखेगी ब्लैकबेरी

ब्लैकबेरी में एंटी ऑक्सीडेंट, एंटी बेक्टेरियल, एंटी वायरल आदि गुण होते है. इसका सेवन दिल को स्वस्थ रखने में मदद करता है. इससे इम्यूनिटी बढने के साथ शरीर में सूजन की समस्या से राहत मिलती है. वहीं महिलाओं के लिए यह फल किसी वरदान से कम नहीं है. यह अनियमित पीरियडस की समस्या को दूर करता है.

वजन घटाने में माहिर, चिया सीड्स

चिया सीड्स विटामिन बी, कैल्शियम, लोहा, मेग्नीशियम, मैंगनीज, ओमेगा 3 फेटी एसिड, फोलेट व एंटी ओक्सीडेंट्स गुणों से भरपूर होता है. यह इम्यूनिटी बढ़ाकर बीमारियों से लड़ने की शक्ति देता है. इसका सेवन करने से लंबे समय तक भूख नहीं लगती है. वजन कंट्रोल करने के लिए इसे बेहतर माना जाता है. इसके अलावा इसमें मौजूद पोषक तत्व व एंटी ओक्सीडेंट्स गुण ब्लड प्रेशर, डाईबीटीज़ कंट्रोल करने में भी मदद करते है तथा मासपेशियों व हड्डियों को मजबूत बनाते हैं.

ब्लड प्रेशर कंट्रोल करेंगे, काले तिल

काले तिल आयरन, कॉपर, मैंगनीज, सेचूरेटेड फेट, कैल्शियम व एंटी ओक्सीडेंट्स गुण होते है. ऐसे में यह कार्डियोवसकुलर हेल्थ और हाइ ब्लड प्रेशर में फायदेमंद माने जाते है. ऐसे में दिल स्वस्थ रहता है.

याददाश्त बढ़ाने में मदद करेगा, काला लहसुन

सफ़ेद लहसुन को हाइ टेम्परेचर पर फरमेंट करके काले लहसुन को तैयार किया जाता है. इसके सेवन से याददाश्त बढ़ाने में मदद मिलती है. अल्जाइमर के मरीजों को इसका सेवन अवश्य करना चाहिए. इसके साथ इसमें मौजूद एंटी ओक्सीडेंट्स व एंटी कैंसर गुण कैंसर जैसी बीमारी से बचाते हैं.

इम्यूनिटी बढ़ाएगी, काली मिर्च

मसाले के रूप में इस्तेमाल होने वाली काली मिर्च पोषक तत्व व एंटी ओक्सीडेंट्स गुणों से भरपूर है. इसके सेवन से इम्यूनिटी बढ़ती है. इसमें मौजूद पेपरिन नामक कंपाउंड सूजन की समस्या को कम करता है. खून में शुगर की मात्रा व मेटाबोलिज़म स्तर में सुधार करने में भी यह मदद करती है.

आँखों की रोशनी बढ़ाने में फायदेमंद, काले चावल

सफ़ेद के मुक़ाबले काले चावल बेहद फायदेमंद माने जाते है. इसमें एंटी ओक्सीडेंट्स गुण होते है तथा इनका सेवन करने से आँखों की रोशनी बढ़ने तथा पेट संबंधी समस्याओं से बचाव रहता है. एक्सपर्ट्स के अनुसार, डाईबीटीज़ और कैंसर के मरीजों को अपनी डाइट में इन्हें शामिल करना चाहिए. यह ग्लूटेन मुक्त आहार होता है.

इन सभी काली चीजों को अपने डेली डाइट में शामिल करके आप कई सारे गंभीर रोगों से बच सकते हैं.

जे श्रीकांत
क्षे.का.पंजागुट्टा-हैदराबाद

आपके बैंक की गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' का अप्रैल-जून 2021 अंक प्राप्त हुआ. यूनियन सृजन के 'युवा विशेषांक' में समाहित प्रबंध निदेशक व सीईओ महोदय के संदेश और संपादकीय से गुजरते हुए मैंने देखा कि इस विशेषांक में युवाओं से संबंधित लगभग हर स्थिति का संयोजन और आकलन किया गया है. युवाओं से संबंधित हर विषय पर इस अंक में विस्तार से चर्चा हुई है. देश के विकास और नव-निर्माण में युवाओं की भूमिका, उद्यमशीलता, योग का महत्व, भारतीय सभ्यता-संस्कृति, परंपराओं व नवोन्मेषी स्थितियों पर सायास विचारों वाले आलेख इस अंक को सार्थक रूप प्रदान करते हैं. साथ ही, युवाओं पर सोशल मीडिया, इंटरनेट, पाश्चात्य संस्कृति, ड्रग्स, भौतिकतावादी सोच का प्रभाव, डिप्रेशन, बेरोजगारी, हिंसा पर भी विचारोत्तेजक आलेख इसमें शामिल हुए हैं.

युवाओं के जीवन से जुड़े लगभग सारे महत्वपूर्ण विषयों पर यह अंक प्रकारांतर से प्रभावशाली टिप्पणियाँ प्रस्तुत करता है. इन समस्त विषयों पर सार्थक आलेखों और कविताओं ने इस पत्रिका को अत्यधिक संग्रहणीय बना दिया है.

संपादन कौशल के प्रति साधुवाद. समस्त रचनाकार व संपादक मंडल प्रशंसा और सराहना के सुपात्र हैं. बहुत ही सुंदर और सार्थक अंक के लिए बहुत-बहुत बधाई.

- प्रेम कुमार बुयाकर
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) (सेवानिवृत्त)
इंडियन ओवरसीज बैंक, हैदराबाद

आपकी तिमाही पत्रिका यूनियन सृजन का अद्यतन अंक दीपावली विशेषांक प्राप्त हुआ. धन्यवाद ! दीपावली का त्योहार भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा है. दीपावली भारत के हर कोने में उत्साह और उल्लास के साथ सदियों से मनाया जाता रहा है. आपके इस विशेषांक में दीपावली पर्व की विभिन्न पौराणिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गयी है, जो पाठकों के लिए काफी सूचनापरक एवं ज्ञानवर्धक है. स्त्री साहित्यकार मृदुला गर्ग संबंधी आलेख को पढ़कर अवश्य ही पाठक वर्ग का साहित्य में रुचि बढ़ेगी. आपके बैंक के द्वारा इस तरह की पत्रिका का सृजन निश्चय ही राजभाषा हिन्दी के विकास में एक सराहनीय कदम है. साथ ही बहुत सुंदर कलेवर और साज-सज्जा के साथ-साथ उत्कृष्ट सामग्री के चयन के लिए संपादक मंडली को बहुत बहुत शुभकामनायें.

- इन्द्रा सिंह
राजभाषा अधिकारी
हजारीबाग अंचल, बैंक ऑफ इंडिया

आपके बैंक की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' का अप्रैल जून 2021 'युवा विशेषांक' प्राप्त हुआ. पत्रिका सुंदर तथा संग्रहणीय है. पत्रिका का कवर अत्यंत आकर्षक है. काव्य सृजन की सभी कविताएं दिल की गहराइयों को छू लेती है. सभी लेख अत्यंत उपयोगी एवं पठनीय हैं.

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल, सभी रचनाकारों व लेखकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ.

- राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, के.का.मुंबई

आपके बैंक द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' का 'दीपावली विशेषांक' ई प्रति प्राप्त हुआ, इसके लिए समस्त संपादक मंडल का हार्दिक धन्यवाद. इस अंक के द्वारा दीपावली को भारत की सांस्कृतिकता, सामाजिकता के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था से जोड़ने का बड़ा ही सार्थक और सुंदर प्रयास किया गया है. पत्रिका में सभी लेख और कविताएं काफी अच्छी थी कुछ लेख जैसे विशेष साक्षात्कार : राहुल देव, दीपावली : विभिन्न मान्यताएं, दीपावली - प्रकाश का अलौकिक पर्व, अर्थ वैभव समृद्धि का परिचायक दीपावली पर्व काफी उत्कृष्टता गुणवत्ता वाले है. पत्रिका के माध्यम से दीपावली पर्व की धार्मिक, पौराणिक मान्यताओं और उसकी सार्थकता के बारे में भी विस्तार से उल्लेख किया गया है जिसका हमारे चिंतन-मनन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है. पत्रिका के कलेवर और साज-सज्जा भी काफी सुंदर और आकर्षक है. सरल और सहज शब्दों और वाक्यों का चयन पाठक को बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है और पढ़ने के प्रति रुचि पैदा करता है. इस प्रकार की ज्ञानवर्धक पत्रिका विमोचन करने के लिए एक बार पुन: बहुत-बहुत शुभकामनाएं.

- रवि प्रकाश सुमन
राजभाषा प्रभारी, अंचल कार्यालय पटना
केनरा बैंक

RNI No. MAH HIN/2016/68433

नि.शुल्क वितरण हेतु

समानता की मूर्ति,
हैदराबाद

छायाचित्र : जी वी एस एस रामचंद्र,
जीवा कैम्पस शाखा